75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 62 | अंक : 09 | मार्च, 2022 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

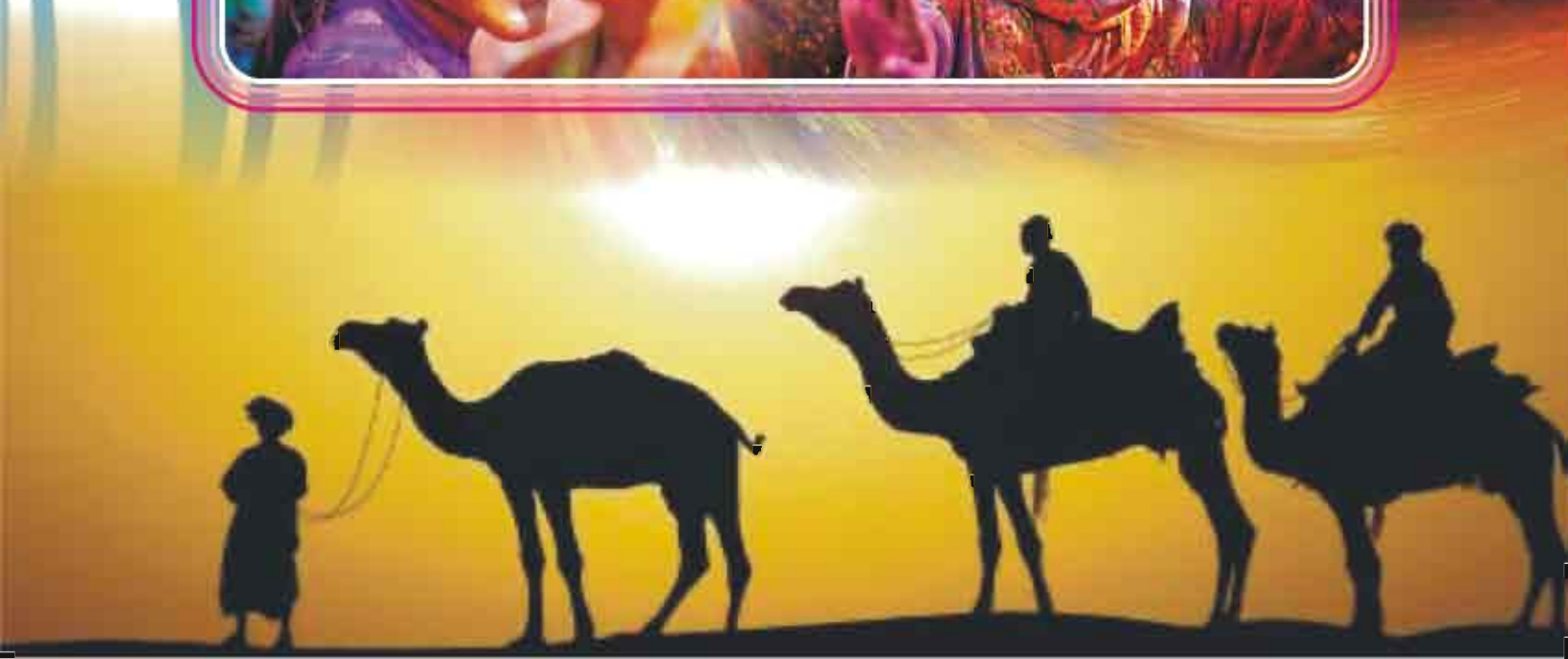

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

परीक्षाओं में करें उत्कृष्ट प्रदर्शन

कोविड 19 महामारी ने हमारे जीवन को बहुत प्रभावित किया है। विद्यालय भी इससे अछूते नहीं रहें। संक्रमण के बढ़ते हुए मामलों को देखते हुए वर्तमान शैक्षिक सत्र में भी अनेक बार विद्यालयों में नियमित कक्षा शिक्षण को रोकना पड़ा, लेकिन इसके साथ ही विभाग ने ऑनलाइन शिक्षण द्वारा पाठ्यक्रम पूर्ण करवाकर साप्ताहिक क्विज, पाठ्यक्रम पुनरावृत्ति एवं बोर्ड कक्षाओं के विद्यार्थियों को Practice Test करवाकर Learning Gap को पूरा करने का प्रयास किया।

वैज्ञानिक मान्यता है कि महाशिवरात्रि पर हमारे शरीर की ऊर्जा प्राकृतिक रूप से ऊपर की तरफ प्रवाहित होती है जिसके कारण व्यक्ति आध्यात्मिक शिखर की तरफ अग्रसर होकर परमात्मा से जुडता है। 08 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस नारी शक्ति को मान सम्मान एवं स्नेह देने का दिन है महिलाओं ने सदैव हिम्मत, मेहनत एवं लगन से हर चुनौती एवं बाधाओं पर विजय प्राप्त की है। सरकार द्वारा बालिकाओं को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक योजनाएं चलायी जा रही हैं।

फाल्गुन माह की पूर्णिमा को प्रेम और रंगों का त्योहार होली हम सब मार्च में मनाएंगे। रंग हमारे जीवन में खुशियाँ भरकर जीवन्तता लाते हैं। आइए इस पर्व पर हम सब मन मुटाव भुला कर रिश्तों को मजबूत बनाएं।

मार्च माह में ही बोर्ड परीक्षा का भी आयोजन होना है। यह वो समय है जब विद्यार्थी सत्रपर्यन्त की गयी मेहनत से अध्ययन उपरांत अधिगम की गई स्मृतियों में संचित पाठ्यवस्तु की जानकारियों को उत्तरपुस्तिका पर उकेर देता है। एक अभिभावक एवं शिक्षक के रूप में विद्यार्थियों से यही कहना चाहूँगा कि उत्तरपुस्तिका पर प्रश्न हल करते समय ध्यान रखें कि आप द्वारा लिखी गई विषयवस्तु की सटीकता एवं उत्कृष्टता के साथ-साथ बेहतर प्रस्तुतिकरण भी जरूरी है। उत्तर लिखते समय हाशिए का ध्यान रखें, शब्दों के मध्य उचित दूरी एवं सुंदर लिखावट से आप परीक्षक को प्रभावित कर अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं।

राजस्थान का स्थापना दिवस 30 मार्च को है। इस दिन रियासतों के विलय उपरांत राजस्थान राज्य बना था। भारत सरकार के तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस दिन राजस्थान के वीरों की दृढ़ इच्छाशक्ति, अदम्य साहस एवं बलिदान को नमन किया जाता है।

मेरा प्रदेश के समस्त शिक्षकों से आग्रह है कि इन उत्सवों एवं त्योहारों को मनाने के साथ-साथ ही, हमें यह भी संकल्प लेना होगा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए कर्तव्यनिष्ठ भावना एवं संवेदनशीलता के साथ समर्पित प्रयास करेंगे ताकि हमारा राजस्थान सम्पूर्ण देश में शिक्षा के क्षेत्र में अव्वल राज्य के रूप में अपनी पहचान बना सकें।

महाशिवरात्रि, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, होली एवं राजस्थान का स्थापना दिवस की आप सबको बहुत-बहुत बधाई एवं मंगलकामनाएं। विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा में अच्छे प्रदर्शन के लिए विशेष शुभकामनाएँ।

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

“एक अभिभावक एवं शिक्षक के रूप में विद्यार्थियों से यही कहना चाहूँगा कि उत्तरपुस्तिका पर पश्न हल करते समय ध्यान रखें कि आप द्वारा लिखी गई विषयवस्तु की सटीकता एवं उत्कृष्टता के साथ-साथ बेहतर प्रस्तुतिकरण भी जरूरी है। उत्तर लिखते समय हाशिए का ध्यान रखें, शब्दों के मध्य उचित दूरी एवं सुंदर लिखावट से आप परीक्षक को प्रभावित कर अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं।”

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 9 | फाल्गुन-चैत्र २०७८ | मार्च, 2022

प्रधान सम्पादक
काना राम

वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला

सम्पादक
मनीष कुमार गहलोत

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान

बीकानेर-334 011

दूरभाष : 0151-2528875

E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- राजस्थान बनें शिक्षा में सिरमौर... 5

आलेख

- शिक्षा के जरिए राष्ट्रपति बने जाकिर हुसैन 6
  ओमप्रकाश सारस्वत
- आध्यात्मिक दृष्टि से शिव भी शिक्षक हैं 8
  सुमेधा
- म्हारो राजस्थान.... 10
  कमल सिंह भाटी
- जल है तो कल है 11
  शंकर लाल माहेश्वरी
- अविस्मरणीय एवं अनूठी दांडी यात्रा 12
  लक्ष्मी चौबीसा
- सामुदायिक हित में विज्ञान शिक्षण 14
  दीपक जोशी
- रीडिंग कैम्पेन : मेरे अनुभूत प्रयोग 15
  शिव शंकर प्रजापति
- English for Communication at School 16
  Dr. Ram Gopal Sharma
- RTE के अंतर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों का अध्ययन 17
  शिवजी गौड़
- राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना 18
  अनिता चौधरी
- वर्तमान में क्लस्टर विद्यालयों की उपादेयता 20
  लोकेश कुमार पालीवाल
- जन-जन में आई जागरूकता 22
  मुकेश बोहरा अमन
- सहेजने में सहभागी बने विद्यालय और समुदाय 28
  देवी बिजानी
- प्रतिभावान विद्यार्थियों हेतु कॅरियर गाइडेंस प्रेरणा स्रोत एवं मार्गदर्शक : श्रीमान संम्भागीय आयुक्त भरतपुर 29
  राजेश कुमार
- Telecast Schedules of PM e-Vidya 30
- विद्यालयी शिक्षा में मूल्य शिक्षा की महत्ता 31
  डॉ. महेश चन्द्र शर्मा
- बहुभाषिकता और हमारी कक्षाएँ 32
  विजय प्रकाश जैन
- परीक्षा में उत्तर पुस्तिका का प्रस्तुतिकरण 34
  अरविन्द शर्मा
- विद्यालय की बदली तस्वीर 35
  डॉ. रूप सिंह जाखड़
- विद्यालयी संसाधनों की मॉनिटरिंग हेतु एक मजबूत स्तंभ 36
  नीरज कांडपाल
- कोविड काल में शिक्षा की निरन्तरता में सोशल मीडिया की प्रासंगिकता 38
  डॉ. डी.डी. गौतम

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!

- घमंडिया : मेरा गाँव मेरा विद्यालय 41
  प्रेम कुमार सुथार

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : मार्च, 2022 23-26
- शिविरा पञ्चाङ्ग : मार्च-2022 26
- वर्ष-2022 में जिलेवार जिला कलक्टर द्वारा घोषित अवकाश 27
- बाल शिविरा 44
- शाला प्रांगण से 46
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 48
  श्याम सुंदर भट्ट
- हमारे भामाशाह 49

पुस्तक समीक्षा 43

- मुळकती मरूधरा
  कवि : मईनुदीन कोहरी
  समीक्षक : **डॉ. प्रकाश दान चारण**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

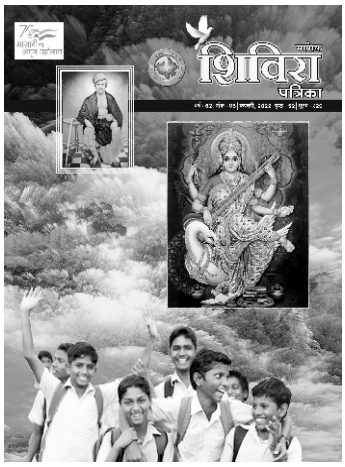

▼ चिन्तन

ज्येष्ठत्वं जन्मना नैव,
गुणैः ज्येष्ठत्वम् उच्यते।
गुणात् गुरुत्वम्आयाति,
द्रुग्धं दधि घृतं क्रमात्।।

महानता मनुष्य को मात्र जन्म लेने से नहीं मिलती है। महानता मनुष्य को उसके गुणों से प्राप्त होती है। जैसे द्रुग्ध से गुरूतर होकर क्रमशः दधि और पुनः दधि से घी बनता है।

पाठकों की बात

- आपके यशस्वी मार्गदर्शन में प्रकाशित हो रही राजस्थान शिक्षा विभाग की मासिक पत्रिका शिविरा का नूतन अंक फरवरी माह के प्रथम सप्ताह में ही पढ़ने को मिला। पत्रिका के मुख पृष्ठ को पलटते ही माननीय शिक्षा मंत्री श्री बी.डी. कल्ला जी की सशक्त कलम से 'ज्ञान दीप का आलोक' स्तंभ की सारगर्भित बातें छात्रों के लिए प्रेरणा स्रोत एवं हृदयस्पर्शी है। इसी प्रकार से श्रीमान निदेशक महोदय श्री काना राम जी भी अपने नियमित स्तंभ दिशाकल्प में 'सतत ज्ञानार्जन से ही सफलता' से हमेशा की भांति पाठकों को प्रेरित करते हैं। इसके लिए ये साधुवाद के पात्र हैं। शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय सम्मान समारोह 2021 की झलकियाँ पत्रिका में प्रकाशित किया जाना सुखद लगा। इसी क्रम में श्री कल्ला जी के कर कमलों से RSCERT उदयपुर के विशेष प्रकोष्ठ भवन का शिलान्यास एवं शिक्षाविदों से संवाद करना भी अच्छा लगा। वसंतोत्सव के अवसर पर गोविन्द नारायण शर्मा के विचार भी पत्रिका की शोभा बढ़ा रहे हैं। राजस्थान में 65 वर्षों के बाद 18वीं स्काउट्स एवं गाइड्स की जंबूरी का आयोजन होना भी पाठकों को मनभावन लगा है। परीक्षा विशेष स्तंभ के अंतर्गत 'छात्र वार्षिक परीक्षाओं की तैयारी कैसे करें' छात्रों के लिए मददगार साबित होगा। शाला दर्पण 'शंका एवं समाधान' हो या फिर 'भाषा शिक्षण के अंतर्गत सिंधी भाषा की जानकारी' दोनों ही काफी प्रभावशाली हैं। मीरा तथा एकलव्य पुरस्कार विजेताओं को शैक्षिक भ्रमण की सौगात बेहद रोमांचक है। शिविरा के सभी नियमित स्तंभ ज्ञानवर्धक हैं। बाल शिविरा और चित्रवीथिका की झलकियाँ पाठकों को गद्गद् कर रही हैं। अंततः शिविरा के समस्त संपादन मण्डल को पुनः साधुवाद।

पवन कुमार स्वामी, पिलानी

- शिक्षा विभाग राजस्थान की मासिक पत्रिका 'शिविरा' का नया अंक फरवरी माह में पढ़ने को मिला। पत्रिका में माननीय शिक्षा मंत्री श्री बी.डी. कल्ला जी की सशक्त कलम से 'ज्ञान दीप का आलोक' स्तंभ की सारगर्भित बातें छात्रों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। इसी क्रम में निदेशक महोदय श्री काना राम जी भी अपने नियमित स्तंभ 'सतत ज्ञानार्जन से ही सफलता' में हमेशा की भाँति पाठकों को ऊर्जा देते हैं। इसके लिए निदेशक महोदय को साधुवाद। शिक्षा विभागीय राज्यस्तरीय सम्मान समारोह 2021 की झलकियाँ पत्रिका में पढ़ना रुचिकर लगा। इसी क्रम में वसंतोत्सव के अवसर पर गोविंद नारायण शर्मा के विचार भी पत्रिका की शोभा बढ़ा रहे हैं। राजस्थान में 65 वर्षों के बाद 18वीं स्काउट्स एवं गाइड्स की जंबूरी का आयोजन होना भी पाठकों को अच्छा लगा है। परीक्षा विशेष के अंतर्गत 'छात्र वार्षिक परीक्षाओं की तैयारी कैसे करें' छात्रों के लिए मददगार साबित होगा। शाला दर्पण 'शंका एवं समाधान' और 'भाषा शिक्षण के अंतर्गत सिंधी भाषा की जानकारी दोनों ही काफी प्रभावशाली हैं। राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के 'मीरा' तथा 'एकलव्य' पुरस्कार विजेताओं को शैक्षिक भ्रमण की सौगात बेहद रोमांचक है। 'शिविरा' के सभी नियमित स्तंभ ज्ञानवर्धक हैं। बाल शिविरा और चित्रवीथिका की झलकियाँ पाठकों को गद्गद् कर रही हैं। शिविरा के समस्त संपादन मण्डल को रोचक एवं ज्ञानवर्धक अंक के लिए पुनः धन्यवाद।

नीलम देवी, भिवानी (हरियाणा)

- माह फरवरी का शिविरा अंक विभिन्न आलेखों, शैक्षिक आदेशों एवं विभिन्न शैक्षिक ज्ञानप्रद जानकारी को लिए हुए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक हैं। मुखावरण विद्या एवं ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती, आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती, खुशी में झूमते हुए छात्रों एवं विभिन्न रंगों से सुसज्जित व मोहक था। अपनों से अपनी बात एवं दिशाकल्प ज्ञानवर्धक था। निदेशक महोदय जी ने कहा कि हमें स्वामी दयानंद सरस्वती के जन्म दिवस पर उनके जीवन से प्रेरणा लेकर वर्तमान समाज में व्याप्त कुरीतियों का उन्मूलन शिक्षा के माध्यम से करने का संकल्प लेना होगा। मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह रिपोर्ट की प्रस्तुति सराहनीय है। पी.एम.ई विद्या कार्यक्रम एवं कोविड-19 बीमारी और कोरोना वायरस का इतिहास और वर्तमान डॉ. कुलदीप पंवार का आलेख ज्ञानवर्धक था। शिक्षा के क्षेत्र में भामाशाहों द्वारा किया गया कार्य अपने आप में सराहनीय कदम है। भामाशाह ने बदली विद्यालय की तस्वीर की प्रस्तुति प्रेरणादायक साबित होगी। बाल शिविरा शीर्षक से शुरू किया गया स्तंभ अपने आप में ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं छात्रों के लिए प्रोत्साहनवर्धक है। शाला प्रांगण के अन्तर्गत बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठको तक पहुँचाने का शिविरा पत्रिका का प्रयास सराहनीय है। शिविरा पत्रिका का प्रत्येक माह का अंक संग्रहणीय, प्रेरणादायक, पठनीय, ज्ञानवर्धक व प्रोत्साहनवर्धक होता है। होली के शुभ अवसर पर समस्त संपादन मंडल को हार्दिक बधाई।

नृसिंहदास वैष्णव, जालोर

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

काना राम
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

राजस्थान बनें शिक्षा में सिरमौर...

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही नारी का अति विशिष्ट स्थान रहा है। नारी के विभिन्न रूप यथा माँ, पत्नी, बहन, बेटी सदा समाज को राह दिखाते रहे हैं। शाश्वत सत्य है कि दुनिया में प्रत्येक बच्चे की प्रथम शिक्षिका माँ ही होती है। शिक्षित नारी हमेशा दो परिवारों को शिक्षित करने की राह प्रशस्त करती है। नारी शक्ति को सम्मान देने के लिए प्रतिवर्ष 8 मार्च को विश्व महिला दिवस मनाया जाता है। राज्य सरकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है। बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य सरकार की और से विभिन्न योजनाएं जैसे इंदिरा प्रियदर्शनी पुरस्कार, मुख्यमंत्री हमारी बेटी योजना, गार्गी पुरस्कार, बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजना, आपकी बेटी योजना, मेधावी बालिका हेतु विदेश में स्नातक स्तर की शिक्षा योजना, स्कूटी योजना, कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं हेतु विशेष सावधि जमा योजना, साइकिल योजना आदि संचालित की जा रही है, जिनका प्रभावी प्रबोधन विभाग द्वारा किया जा रहा है। इसका सकारात्मक परिणाम सरकारी विद्यालयों में नज़र आ रहा है। आज सरकारी विद्यालयों में 48,90,000 से अधिक बालिकाएं अध्ययन कर रही हैं।

मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि राज्य सरकार के निर्देश पर शिक्षा विभाग ने एक नई पहल करते हुए जिला मुख्यालयों में स्थित 33 महात्मा गांधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) में 16 फरवरी से पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में विद्यार्थियों का अध्ययन प्रारंभ कर दिया है। मुझे आशा है कि यह विद्यालय विभाग के लिए मील का पत्थर साबित होंगे।

30 मार्च को हम राजस्थान का स्थापना दिवस मनाने जा रहे हैं। राजस्थान राज्य का गौरवशाली इतिहास, इसकी प्राचीन संस्कृति आज भी हमें प्रेरणा देती रही है। शिक्षा परिवार के सभी सदस्यों को राजस्थान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। हम सब मिलकर प्रयास करें की शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान निरंतर प्रगति करते हुए ना केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में अपनी एक अमिट छाप छोड़ने में कामयाब रहे।

जीवन में समय-समय पर अनेक परीक्षाएं किसी न किसी रूप में प्रत्येक व्यक्ति के सामने आती रहती है। हम इसे अपने अनुभव व अपने अभिभावकों, गुरुजनों तथा समाज से सहयोग लेकर इन परीक्षाओं को सकारात्मक अवसर मानते हुए इसमें सफल होने का प्रयास करते हुए आगे बढ़ते रहते हैं, इसी प्रकार विद्यार्थियों ने पूरे सत्र में क्या सीखा उसका मूल्यांकन करने के लिए हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मार्च-अप्रेल में परीक्षाएं आयोजित की जाएंगी। मुझे विश्वास है कि मेरे प्यारे विद्यार्थी इन परीक्षाओं को सकारात्मक लेते हुए इसमें सफल होंगे। मेरा अनुरोध सभी संस्थाप्रधानों, शिक्षकों एवं अभिभावकों से रहेगा की मार्च माह में आयोज्य बोर्ड परीक्षाओं हेतु विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाते हुए उनके अध्ययन को सरल एवं प्रभावी बनाने के लिए सहयोग करते हुए ज्ञान रूपी यज्ञ में आहुति देकर बच्चों के भविष्य के लिए ना केवल मजबूत नींव रखें बल्कि मनोयोग से ऐसे सार्थक प्रयास हो की राजस्थान शिक्षा में सिरमौर बनें।

शुभकामनाओं के साथ.....।

आपका अपना

(काना राम)

"हम इसे अपने अनुभव व अपने अभिभावकों, गुरुजनों तथा समाज से सहयोग लेकर इन परीक्षाओं को सकारात्मक अवसर मानते हुए इसमें सफल होने का प्रयास करते हुए आगे बढ़ते रहते हैं, इसी प्रकार विद्यार्थियों ने पूरे सत्र में क्या सीखा उसका मूल्यांकन करने के लिए हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मार्च-अप्रेल में परीक्षाएं आयोजित की जाएंगी। मुझे विश्वास है कि मेरे प्यारे विद्यार्थी इन परीक्षाओं को सकारात्मक लेते हुए इसमें सफल होंगे।"

जयन्ती विशेष

शिक्षा के जरिए राष्ट्रपति बने जाकिर हुसैन

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

''मैं ने भारत के संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ ली है। ये नए देश का संविधान है। स्वतंत्र नागरिकों को इतिहास में पहली बार स्वर मिला है। हमारा देश प्राचीन जाति का युवा राष्ट्र है। इसमें विविधता का मूल्य है। जो इसे अनोखा बनाता है। मैं इस मूल्य की सेवा की शपथ लेता हूँ। इसकी बुनियाद है सांस्कृतिक गरिमा और उसकी निरंतरता। हमारा अतीत मरा नहीं है, गतिहीन नहीं हुआ है। यह जीवित है। वर्तमान में हमारी क्षमता गढ़ रहा है, भविष्य का निर्माण कर रहा है। और ये सब मुमकिन होगा शिक्षा के जरिए। आज मैं इस सर्वोच्च पद पर शिक्षा के जरिए पहुँचा हूँ जो मुझे किताबों और लोगों के संसर्ग से मिली। मैं दावा करता हूँ कि पढ़ाई ही राष्ट्रीय लक्ष्य हासिल करने में सबसे ज्यादा मदद करेगी।''

शिक्षा का माहात्म्य उजागर करने वाली उपर्युक्त अमूल्य पंक्तियाँ डॉक्टर जाकिर हुसैन के उस भाषण से उद्धृत की गई हैं जो दिनांक 13 मई 1967 को भारत के तीसरे राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण समारोह में दिया गया था। 'भारत मेरा घर' शीर्षक से अलंकृत जाकिर साहब का यह भाषण हमारे लिए एक प्रेरणादायक दस्तावेज है। भारत मेरा देश कहना और सुनना कितना रोमांचकारी एवं स्नेह व आत्मीयता लिए हैं। विशाल देश भारत के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति की शपथ लेने के अवसर पर दिए भाषण का उपर्युक्त अंश कुल जमा एक दर्जन वाक्यों एवं 131 शब्दों का भावपूर्ण सुन्दर गुलदस्ता है। गौर से देखें तो इन पंक्तियों में भारत के हर नागरिक के लिए प्रेरणादायक संदेश निहित है लेकिन हम इसे शिक्षा के संदर्भ में समझने का प्रयास करते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की अपने देश, समान, जाति, वंश, परिवार के इतिहास में रुचि एवं गर्व होता है। इस अतीत की समीक्षा और उसके उज्ज्वल पक्ष को हृदय में रखकर व्यक्ति, समाज या राष्ट्र विकास करता है। महाभारत में वेद व्यास कहते हैं-

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः वृत्ततस्तु हतोहत।।

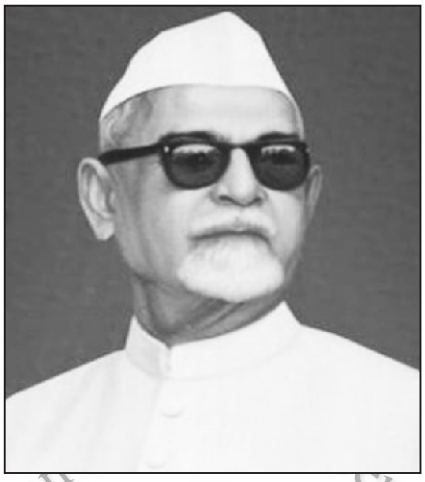

अर्थात् इतिहास की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता और जाता है। धन से हीन होने पर कोई नष्ट नहीं हो जाता लेकिन इतिहास और प्राचीन अतीत एवं गौरव नष्ट कर लेने पर विनाश निश्चित है।

मुगलों और अंग्रेजों के लम्बे शासन और इस दौरान भारत के संसाधनों एवं शानदार विरासत के साथ उनके द्वारा की गई छेड़छाड़ एवं दोहन को देखकर लगता था कि हमारा मूल सांस्कृतिक स्वरूप ही बदल गया है और यह था भी विचारणीय। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह चिंता और बढ़ गई थी कि अंग्रेजों ने हमारी सांस्कृतिक व्यवस्था पर जो असर डाला है, उससे किस प्रकार निजात पाएंगे। इसे ध्यान में रखकर जाकिर हुसैन कहते हैं, 'हमारा अतीत मरा नहीं है, गतिहीन नहीं हुआ है। यह जीवित है। वर्तमान में हमारी क्षमता गढ़ रहा है, भविष्य का निर्माण कर रहा है और ये सब मुमकिन होगा शिक्षा के जरिए।' वे सांस्कृतिक गरिमा और निरंतरता को इसकी बुनियाद बताते हैं। यह कहकर एक तरह से देशवासियों की वे हौंसला अफजाई कर रहे हैं। इस विचार का समाहार करते हुए वे कहते हैं कि वह सब शिक्षा के माध्यम से ही संभव होगा। कहने का आशय यह है कि जाकिर साहब शिक्षा को हर तरह के विकास एवं बेहतरी का साधन बताते हैं।

भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के साथ वे उप-राष्ट्रपति (1962-67) रहे। राष्ट्र के दो शिखर पदाधिकारियों का शिक्षक होना अपने आप में गौरव की बात थी। राष्ट्रपति पद की शपथ लेने के अवसर पर जाकिर हुसैन कहते हैं कि वे राष्ट्र के इस सर्वोच्च पद पर शिक्षा के बल पर पहुँचे हैं। देश के राष्ट्रपति द्वारा शिक्षा को इतना महत्त्व दिया जाना स्वयं शिक्षा के लिए सुकून से कम नहीं है। यहाँ भी संदर्भ को देखकर उसका विश्लेषण करते हैं। यह एक सामान्य शिष्टाचार है कि व्यक्ति जिस प्रकार के कार्यक्रम में शरीक होता है, उसकी सराहना करता है। भले ही औपचारिकता वश ऐसा करना पड़े, पर वह करता है। मगर यहाँ तो शपथ ग्रहण समारोह की बात है। यहाँ व्यक्ति हजार बार सोचकर अपनी सफलता अथवा उपलब्धि का श्रेय किसी को देता है। जाकिर हुसैन द्वारा राष्ट्रपति पद की शपथ लेते समय शिक्षा को इस उपलब्धि का श्रेय देना उनकी दिल, उनकी अंतर आत्मा की आवाज है न कि कोई औपचारिकता निभाना।

शिक्षा को उपलब्धि का श्रेय देते हुए राष्ट्रपति जाकिर हुसैन उसका खुलासा भी करते हैं। उनके कथन- मैं शिक्षा के जरिए इस सर्वोच्च पद पर पहुँचा हूँ। को सुनकर यदि कोई प्रति प्रश्न करें कि, 'कौन सी शिक्षा?' तो वे स्पष्ट करते हैं कि वह शिक्षा जो उन्हें पुस्तकों एवं लोगों के साथ से नसीब हुई। यह कथन पुस्तकों एवं गुरुजन के प्रति उनके आदर एवं आभार भाव को प्रकट करता है। लोगों से आशय उन पात्र व्यक्तियों से हैं जिनके सम्पर्क एवं संग से कुछ अधिगम होता है। सीखने का यदि भाव हो तो हर किसी से कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। पुस्तकें तो शिक्षा एवं ज्ञान की भण्डार हैं। वे बिना बोलने वाली ऐसी शिक्षक हैं जो हर समय बदले में बिना कुछ चाहे, शिक्षकों के लिए तत्पर रहती हैं। जाकिर हुसैन उनके प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए उनसे सीखने की प्रेरणा हमें देते हैं।

भाषण भारत मेरा घर के इस आलेख के प्रारंभ में वर्णित अंश की अंतिम पंक्ति के महत्त्व को बताने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हर व्यक्ति, हर समाज और संस्था/उपक्रम के अपने

विहित उद्देश्य होते हैं। इसी प्रकार राष्ट्र के अपने लक्ष्य होते हैं। ये लक्ष्य दो प्रकार के होते हैं- सर्वकालीन एवं समकालीन। सर्वकालीन लक्ष्य स्थाई प्रकृति के होते हैं जबकि समकालीन उद्देश्य देश-काल-परिस्थिति के अनुसार बनते और बदलते रहते हैं। राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रयास राष्ट्र द्वारा किए जाते रहते हैं। इन प्रयासों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कृषि, सिंचाई, परिवहन के साधन आदि सम्मिलित हैं। जाकिर हुसैन कहते हैं, 'मैं दावा करता हूँ कि पढ़ाई ही राष्ट्रीय लक्ष्य हासिल करने में हमारी सबसे ज्यादा मदद करेगी।' यहाँ दो बातें महत्त्वपूर्ण हैं। प्रथम तो राष्ट्रीय लक्ष्यों को हासिल करने में मदद करने वाले तमाम उपकरणों में शिक्षा को सर्वोपरि बताना और द्वितीय यह बात दावे के साथ कहना। देश का राष्ट्रपति अपनी पांचवर्षीय पारी का शुभारंभ करते समय दावे के साथ ठोक बजाकर कोई बात कहे तो वह इतिहास में एक दस्तावेज बन जाती है। प्रखर गांधीवादी परम त्यागी, वितरागी महात्मा सरीखे जाकिर हुसैन जब यह कहते हैं तो उसका मूल्य कई गुना बढ़ जाता है। जर्मनी से अर्थशास्त्र में पीएच.डी. एवं विश्वविद्यालयों के कुलपति जैसे उच्च प्रतिष्ठित पदों पर काम करने का अवसर मिलने के बावजूद सरलता एवं सादगी जस की तस बनी रही। गाँधी की तरह वे भी सदाचार एवं निर्मल जीवन को सच्ची शिक्षा का आधार मानते थे। वे कर्मशील पुरुष थे और शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान से पहले कर्म एवं चरित्र निर्माण को मानते थे। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त रचित इन पंक्तियों में जैसे जाकिर हुसैन का शिक्षा स्वप्न दृष्टिगोचर होता है-

सबसे प्रथम कर्त्तव्य है, शिक्षा बढ़ाना देश में,
शिक्षा बिना ही पड़े रहे हैं, आज हम सब क्लेश में,
शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है,
शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है।

जाकिर हुसैन का शिक्षा प्रेम जग जाहिर है। जामिया मिलिया इस्लामिया की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए वे इसके कुलपति भी रहे। यह उनके व्यक्तित्व का ही कमाल था कि जामिया मिलिया इस्लामिया का राष्ट्रवादी कार्यों एवं देश में स्वाधीनता संग्राम में सराहनीय सहयोग रहा। वे अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के भी कुलपति रहे। उन्होंने अपनी आवश्यकताएँ सीमित कर रखी थी। महात्मा गाँधी के कहने पर उन्होंने जामिया मिलिया का प्रशासन अपने जिम्मे लिया था। उन्होंने अपनी मासिक तनख्वाह 300 रुपये को घटाते-घटाते 75 रुपये माहवार कर लिया था। यह एक विरल उदाहरण है। वेतन बढ़ाने की बात हर युग में होती रही है जो स्वाभाविक भी है। मगर हमारे जाकिर हुसैन साब तो उसे घटाते-घटाते न्यूनतम से न्यूनतम आवश्यकताएँ पूरी होने तक ले आए। स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए संस्था की बेहतरी के लिए वे दिन रात लगे रहते थे।

जाकिर हुसैन का सिखाने का तरीका अद्भुत था। उनकी अनुशासनप्रियता एवं कर्त्तव्यपरायणता के अनेक किस्से हैं। एक प्रेरणास्पद किस्सा जामिया मिलिया के कुलपति काल का है। वे विद्यार्थियों को साफ-सुथरा रहने की शिक्षा देते थे। प्रतिदिन समय पर स्नान, धुले हुए कपड़ों, पॉलिश किए हुए जूतों के लिए बार-बार कहने का भी सभी विद्यार्थियों पर असर नहीं पड़ रहा था। उन्होंने इस संबंध में एक आदेश भी निकाला लेकिन वह बेअसर ही रहा। उन्होंने एक तरीका निकाला। एक दिन उन्होंने मोची का वेश धारण किया और विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार के आगे पॉलिश एवं ब्रुश लेकर बैठ गए। गंदे जूतों वालों को पॉलिश करवा लेने का आग्रह करते अपने स्वयं के कुलपति को देखकर विद्यार्थियों पर जैसे 100 घड़े पानी गिर गया। वे लज्जित होकर नजरे झुकाकर अपने सर के सामने हाजिर हुए तथा भविष्य में साफ सुथरे रहने की प्रतिज्ञा की। सिखाने का कितना अद्भुत तरीका है यह।

महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा का ताना-बाना रचने वाले जाकिर हुसैन ही थे। देश की शिक्षा व्यवस्था में जरूरी सुधार लाने तथा भविष्य की शिक्षा का रूप निर्धारित करने के लिए गाँधीजी चिन्तित रहते थे। वे शिक्षा के अन्तर्गत ज्ञान एवं कर्म दोनों को आवश्यक मानते थे। उन्होंने विनोबा भावे, काका कालेलकर, जाकिर हुसैन आदि विद्वानों के साथ चर्चा करके अखिल भारतीय शैक्षिक सम्मेलन 22-23 अक्टूबर 1937 को वर्धा में रखा जिसमें अपने शिक्षा दर्शन सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार रखे। सम्मेलन में दो दिन के वैचारिक आदान-प्रदान के पश्चात तीन प्रस्ताव पारित किए गए जो इस प्रकार है-

1. सात वर्ष तक के बालक-बालिकाओं के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था हो।
2. शिक्षा मातृभाषा में दी जाए यानी मातृभाषा माध्यम हो।
3. शिक्षा हस्त शिल्प अथवा उत्पादक कार्यों पर आधारित हो।

ये तीनों प्रस्ताव एक प्रकार से नीतिगत दिग्दर्शक थे। इनके आधार पर विस्तृत व्यावहारिक पाठ्यक्रम एवं कार्य योजना (POA) बनाने के लिए शिक्षाविदों की एक समिति गठित की गई जिसके अध्यक्ष जाकिर हुसैन थे। इस समिति द्वारा निर्मित राष्ट्रीय शैक्षिक योजना बुनियादी शिक्षा, नई तालीम या वर्धा योजना के नाम से जानी जाती है। इस बुनियादी शिक्षा की बुनियाद शोषण मुक्त स्वस्थ समाज की धारणा पर टिकी है। बच्चों को 3 एच (Head, Hand, Heart) की शिक्षा देकर स्वावलम्बी बनाने पर सर्वाधिक बल दिया गया। ऐसे स्वस्थ, अनुशासित, राष्ट्र प्रेमी, कर्त्तव्यपरायण नागरिकों के दम पर मजबूत एवं खुशहाल राष्ट्र का स्वप्न देखा गया। महात्मा गांधी का रामराज्य इन्हीं मान्यताओं पर अवलम्बित था। जाकिर हुसैन ने एक शिक्षक एवं शिक्षाविद् के रूप में जो उल्लेखनीय सेवा बुनियादी शिक्षा का ढाँचा तैयार करने की दिशा में अर्पित की, उसे यह राष्ट्र कभी नहीं भूल सकेगा बल्कि आदरपूर्वक स्मरण करते हुए उनके प्रति सदैव अनुगृहीत रहेगा।

जाकिर हुसैन मनसा-वाचा-कर्मणा से शिक्षा को समर्पित थे। विश्वविद्यालय के कुलपति, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के चेयरमैन, विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष, बिहार प्रदेश के राज्यपाल, देश के उप राष्ट्रपति, राष्ट्रपति आदि विभिन्न उच्च स्तर की हैसियत में होते हुए भी वे सतत पढ़ते रहे, शिक्षा की बेहतरी के लिए चिंतनरत रहें। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं। छोटे बच्चों के स्कूल जाने को कथानक बनाकर लिखी उनकी रचना 'नन्हा चले मदरसे' शिक्षा क्षेत्र में काम करने वालों तथा अभिभावकों को अवश्य पढ़नी चाहिए। वे शैक्षिक सुधारों के मसीहा के रूप में लक्ष्य प्रतिष्ठित है। पढ़ना उनका नितनेम था, उनके लिए पवित्र इबादत था। जामिया मिलिया में काम करने के दौरान वे स्वयं पढ़ते भी थे। वे इस संस्था के शिक्षक भी थे और शिक्षार्थी भी। कर्त्तव्य पालन करते समय वे स्वास्थ्य एवं अन्य सुविधाओं की परवाह नहीं करते थे। अपने इस स्वभाव के चलते उन्हें अक्सर परिवारजन की नाराजगी झेलनी पड़ती। वे राजनीति में, मन से नहीं बल्कि लेखन से आए थे। पं. जवाहर लाल नेहरु ने जब 1957 में बिहार के राज्यपाल की

Rajasthan Education Department

पेशकश उनको की तो उन्होंने विनम्रतापूर्वक इंकार कर दिया था। उनका शिक्षक मन अलीगढ़ विश्वविद्यालय में रमा हुआ था। नेहरु जी के द्वारा दबाव डालने पर वे राज्यपाल बनने को राजी हुए।

जाकिर हुसैन का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा लिए था। धर्म निरपेक्षता, सामाजिक सद्भाव, विश्व बंधुत्व, राष्ट्रीय एकता, सेवा, समन्वय एवं समर्पणपूर्वक कर्त्तव्य पालन जैसे गुणों के वे साक्षात स्वरूप थे। अभिमान उन्हें छू तक नहीं गया था। यद्यपि हिन्दी उनकी मातृभाषा नहीं थी तथापि वे हिन्दी को सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बांध सकने वाली ताकत मानते थे। उन्होंने हिन्दी सीखी और बोलचाल एवं लिखत-पढ़त में हिन्दी का उपयोग करते थे। उनका प्रकृति प्रेम निराला था। गुलाब की सैंकड़ों प्रजातियों का उन्हें ज्ञान था। बागवानी उनकी हॉबी थी। उनकी विद्वता को मान्यता प्रदान करते दिल्ली, अलीगढ़, इलाहाबाद और काहिरा विश्वविद्यालयों ने उन्हें डी. लिट्, की मानद् उपाधि सौंपकर सम्मान दिया। देश के सर्वोच्च नागरिक अलंकरणों में पद्म विभूषण (1954) एवं भारत रत्न (1963) से उन्हें विभूषित किया गया।

भारतीय समाज की शिक्षा के सम्बन्ध में उनके द्वारा एक विस्तृत अध्ययन रपट तैयार की गई। 'Education India's masses' शीर्षक से यह रपट तथा Education and National Development नामक उनकी रचनाएँ मील के पत्थर की तरह समझी जाती है। शिक्षाशास्त्री के साथ वे अर्थशास्त्री भी थे। उन्होंने एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखकर अपने अध्ययन एवं चिंतन का परिचय दिया।

डॉ. जाकिर हुसैन का राष्ट्रपति रहते हुए 3 मई 1969 के दिन स्वर्गवास हो गया। उनकी भावना के अनुसार जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली के परिसर में उन्हें दफनाया गया। एक शिक्षण संस्थान जिसकी स्थापना एवं संचालन में अपना पसीना बहाने वाला सपूत सच्चा विद्यार्थी एवं शिक्षक सदा-सदा के लिए उसी संस्था की भूमि में सदा-सदा के लिए विश्रान्ति को प्राप्त हो गया। जामिया मिलिया इस्लामिया में उनके सम्मान में बना समबस श्रद्धा का केन्द्र हैं जहाँ नतमस्तक होकर विद्यार्थी एवं श्रद्धालु इस महापुरुष के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

संयुक्त शिक्षा निदेशक (सेवानिवृत्त)
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेवजी रोड, गंगाशहर,
बीकानेर (राज.)-334001
मो: 9414060038

महाशिवरात्रि विशेष

आध्यात्मिक दृष्टि से शिव भी शिक्षक हैं

❒ सुमेधा

शिव का मुख्य गुरुकुल या पाठशाला है कैलाश। आध्यात्मिक दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व-ब्रह्माण्ड ही उनकी पाठशाला है। शिक्षा शास्त्रियों का मत है कि वो पाठ शिष्यों के भीतर बड़े गहरे से समझ आते हैं, आत्मसात् होते हैं जो आचरण के द्वारा सीखे या सिखाए जाते हैं। शिव कहते नहीं करते हैं। उनका आचरण ही उनका अद्भुत ग्रंथ है जिसका प्रत्येक पृष्ठ एवं अध्याय अप्रतिम, रोचक एवं विश्व समुदाय के लिए प्रेरणास्पद है।

समन्वय के शिक्षक शिव- शिव विरोधी गुणों के समन्वयक हैं। शिव का वाहन है बैल, पार्वती का सिंह। बैल और सिंह एक साथ कैलाश पर हैं। शिव के आभूषण हैं सर्प, कार्तिकेय का वाहन है मयूर। मयूर और सर्प दोनों साथ हैं। सर्प के साथ गणेश वाहन मूषक को भी भूलना नहीं चाहिए। सभी में प्रेम है, एकत्व है। जहाँ विरोधी गुणों के पशु-पक्षियों तक में ऐसा प्रेम हो, आपस में हिल-मिल कर रहते हों वह है कैलाश। कैलाश भगवान शिव का गुरुकुल, परम शांत है। शांत है इसलिए उसे शांति निकेतन भी कह सकते हैं। इसलिए तो पारंपरिक वैरी भी शांति से रह रहे हैं। भूत-प्रतादिक भी भूतेश्वर (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश के अधिपति एवं नियंत्रक) की शांत समाधि के द्रष्टा हैं। कहते हैं शनि देव में, पिता सूर्य समेत किसी भी देवता ने काबिलियत नहीं देखी, इसलिए उन्हें कोई पद नहीं दिया। आशुतोष शिव ने ही न सिर्फ शनि देव को शिक्षा दी, साथ ही न्यायाधीश का गुरु पद भी प्रदान किया। शिव समाज के उन लोगों को भी अपनत्व देते हैं, जो संसार के लिए त्याज्य या जिनसे संसार भय खाता है। इसलिए भगवान शिव विश्व ब्रह्माण्ड में समन्वय के बहुत बड़े शिक्षक हैं।

योग एवं नृत्य विद्या विशेष के आद्याचार्य शिव- शिव सम्पूर्ण कला एवं विधाओं के दाता हैं। साहित्य, संगीत एवं नृत्य के आचार्य हैं। व्याकर्णाचार्यों का मत है, सम्पूर्ण वर्णमाला उनके डमरू निनाद से निकली है,

जिन्हें माहेश्वर सूत्र कहते हैं, वे लास्य के देवता नटराज हैं। शिव के मनमोहक और भयंकर ताण्डव की चर्चा विद्वानों ने की है। हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिव के ताण्डव और समाधि का 'देवदारु' निबन्ध में बड़ा ही शिक्षाप्रद वर्णन किया है।

शिव ने जब उल्लासातिरेक में उद्दाम नर्तन किया था तो उनके शिष्य तण्डु मुनि ने उसे याद कर लिया था। उन्होंने जिस नृत्य का प्रवर्त्तन किया, उसे ताण्डव कहा जाता है। ताण्डव अर्थात् तण्डु मुनि द्वारा प्रवर्तित रस भाव-विजर्जित नृत्य।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि समाधि लगाने के लिए महादेव ने देवदारु की वेदिका को पसन्द किया। शिवजी ने अन्दर और बाहर के तुक को मिलाने के लिए देवदारु को चुना था क्योंकि देवदारु भी गगन चुम्बी शिखा से युक्त है और समाधिस्थ महादेव की निर्वात-निश्कंपा प्रदीप की उर्ध्वगामिनी ज्योति भी। ताण्डव और समाधि दोनों में ही एकाग्रता को महत्त्व देते हुए वे आगे लिखते हैं-

''ताण्डव की महिमा आन्नदोन्मुखी एकाग्रता में है, समाधि भी एकाग्रता चाहती है। ध्यान, धारण और समाधि की एकाग्रता से ही योग सिद्ध होता है। बाह्य प्रकृति के दुर्वार आकर्षण को छिन्न करने का उल्लास ताण्डव है। अन्त: प्रकृति के असंयत फिकाव को नियंत्रित करने के उल्लास का नाम समाधि है।''

शिव के आचरण मूलक शिक्षा के दो बिन्दुओं को यहाँ विशेष रेखांकित करना चाहूँगी- पहला एकाग्रता, दूसरा असयंत फिकाव। चाहे संगीत एवं किसी भी कला का

Rajasthan Education Department

साधक हो, चाहे किसी भी विषय का अध्येता, एकाग्रता से ही उसकी साधना, साध्य अर्थात् परम लक्ष्य तक पहुँच सकती है। साधना का बाधक तत्त्व है असंयत फिकाव, अध्येता एवं साधक का मन, इन्द्रिय एवं बुद्धि अगर संसार में तरह-तरह के आकर्षण में फिरती फिरेंगी तो साधक, अध्येता एकाग्रीभाव से न तो लक्ष्य-पथ पर चल सकेगा और न ही संकल्पित लक्ष्य तक पहुँच सकेगा। जिस प्रकार विद्युत् धारा के कई सर्किट में विभाजित हो जाने पर उसका कुल वोल्टेज लक्ष्य को प्रज्वलित नहीं कर पाता, उसी प्रकार विविध आकर्षणों में उलझे रहने पर साध्य ओझल या दूर हो जाता हैं। हम चलेंगे बहुत पर जहाँ पहुँचना है, पहुँच नहीं पाएँगे।

शिव विज्ञान और इंजीनियरिंग के शिक्षक हैं– शिव अद्वितीय राष्ट्र पुरुष हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करें तो शिव के तीसरे नेत्र से विद्युत धारा और जटाओं से गंगा की धार प्रवाहित होती है। वे नाना प्रजातियों के अधिपति हैं। डॉ. मदन गोपाल शर्मा ने शिव के इंजीनियर रूप को दर्शाया है।

शिव के ही जटा-जूट से गंग प्रवाहित है– अतिलौकिक मानव ही देवोपम रूपित है। आशय है शिव अद्भुत शिल्पी अभियंता हैं। शिखरों में गंगा पथ के महत नियंता हैं।

शिव इंजीनियर की तरह पर्वत शिखरों से समतल तक गंगा के प्रवाह को नियंत्रित वेग से प्रवाहित करने वाले हैं। परम ज्ञान और विज्ञान के भण्डार शिव आध्यात्मिक दृष्टि से ज्ञान रूपिणी गंगा को विज्ञान के द्वारा नियंत्रित रूप से सर्वजन कल्याणार्थ प्रवाहित करते हैं। शिव त्रिलोचन हैं चन्द्र, सूर्य और अग्नि उनके तीन नेत्र हैं। इसलिए वे चन्द्र के समान जगदानंद दायक, सूर्य के समान अज्ञानतम नाशक तथा अग्नि के समान कामादि दोष दाहक हैं। एक और दृष्टि से ज्ञान चक्षु ही उनका तीसरा नेत्र है, जो विवेक और दूरदर्शिता का प्रतीक है।

मानवता समरसता के शिक्षक शिव– स्त्री-पुरुष, प्रकृति-पुरुष का एकत्व हैं शिव। वे चंद्रमौलि है। यहाँ चन्द्र शांति, शीतलता और संतुलन का प्रतीक है। चन्द्र तपी, थकी उदास आँखों को विश्राम देता है। शीतलता, शांति और प्रसन्नता देता है। शिव शूलपाणि हैं। यह त्रिशूल शांति, वैराग्य और बोध का प्रतीक है अथवा सत्, रज, तम त्रिगुण का प्रतीक है। त्रिगुण में भी समन्वय जरूरी है। तमोगुण बढ़ जाये तो निष्क्रियता, आलस्य और प्रमाद बढ़ेगा। रजोगुण बढ़ जाए तो चांचल्य और मन की अस्थिरता बढ़ेगी। तीनों के समत्व में ही सृष्टि का संतुलन है। त्रिशूल को यदि ज्ञान, भक्ति और कर्म का प्रतीक मान लिया जाए तो भी ज्ञान और कर्म में भिन्नता नहीं होनी चाहिए। जयशंकर प्रसाद के अनुसार इच्छा, क्रिया, ज्ञान की समरसता ही अखण्ड आनन्द तक पहुँचाती है। सत, रज, तम के साथ आयुर्विज्ञान की दृष्टि से वात-पित्त-कफ भी शूल हैं। उनका सही संतुलन ही तन और मन के स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। वह त्रिशूल तो शिव के हाथ में है, अर्थात संतुलन हाथ में है। संतुलन, सामंजस्य, समरसता के देव हैं शिव। समत्व का ऐसा योग ही परम शिव है अर्थात् विश्व कल्याण है। वास्तव में शिव वह तत्त्व है जहाँ पहुँचकर समस्त विषमताएँ भी समरसता को प्राप्त हो जाती हैं।

मूल्य शिक्षा के शिक्षक हैं शिव– दर्शन की दृष्टि से सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, साध्य मूल्य हैं। मनुष्य की आवश्यकता है हित-साधना, सुख-प्राप्ति, परम कल्याण और आनन्द। महादेव में शिव का शिवत्व तथा सत्य और सुन्दरम् का अपूर्व संतुलन है। ऐसा सौन्दर्य जिससे शिव बाधित हो वह सुन्दर नहीं कहा जा सकता और ऐसा सत्य जिसमें शिव ना हो वह सत्य स्वीकृत नहीं हो सकता। इसलिए सत्य, शिव और सुन्दर एक-दूसरे के आधार हैं। सत्य के बिना कल्याण संभव नहीं और कल्याण रहित शिव सुन्दर नहीं हो सकता। इसलिए शिव परम मूल्य हैं साध्य मूल्य हैं। शिव इसलिए शिव हैं क्योंकि हमारे धरातल पर जो अशिव है, अमंगल कारक है वह उस सत्ता के धरातल पर परम मंगलमय है। शिव वह तत्त्व हैं जहाँ पहुँच सर्प, बिच्छू और विष आदि भी मंगलमय हो जाते हैं। यहाँ मृत्यु भी अमरत्व में स्नान करती है। इसलिए वे मृत्युंजय भी हैं। शिव का वाहन है बैल, बैल धर्म का प्रतीक है अर्थात् शिव धर्मारूढ़ है। धर्म पर सवार होकर ही कल्याण किसी के पास पहुँच सकता है।

मूल्य शिक्षा का दूसरा पक्ष है सर्वजन कल्याण, लोक कल्याण। समुद्र मंथन के पश्चात् अमृतपान करने के लिए तो सब लालायित थे पर पहले निकल आया हलाहल, विष। अब उसका क्या करें? समस्त संसार त्राहिमाम करने लगा। संसार को विष की ज्वाला से बचाने के लिए शिव हलाहल पीकर नीलकण्ठ बन गए। शिव इसलिए शिव हैं क्योंकि उन्होंने सृष्टि और ब्रह्माण्ड की रक्षा के लिए विष को भी स्वीकार किया। आचरण द्वारा लोक रक्षक का इससे बड़ा उदाहरण और कहाँ हो सकता है। विष पीकर अमृत बाँटने वाला औढ़र दानी ऐसा और कौन हो सकता है।

शिव ही साहित्य शिक्षा का मूल हैं– साहित्य सृजन का एक महान् प्रयोजन है लोक जीवन में जो भी अशिव है, अकल्याण कारक है समाज से उसको समाप्त करना है। इसलिए साहित्य सृजन के प्रयोजनों को परिभाषित करते हुए 'आचार्य मम्मट' काव्य प्रकाश में लिखते हैं- 'शिवेतरक्षतये'। शिव अर्थात परम कल्याण, परम शुभ परम मंगल। इस दृष्टि से संसार की शिक्षा-दीक्षा का चरम मूल्य हैं शिव अर्थात् लोक मंगल, लोक कल्याण। इस व्यापक अर्थ में हम जो कुछ भी पढ़ते हैं, शिव को ही पढ़ते हैं, शिव तक पहुँचते हैं, शिव ही सब विषयों में व्याख्यायित हैं। शिव ही समस्त विषयों के फल है।

महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव के जिस शिक्षक रूप की परिकल्पना यहाँ करने का प्रयास मैंने किया है। वह शिव के स्वरूप, निवास आदि के प्रतीकात्मक अर्थों को लेकर ही किया है। भक्ति और आध्यात्मिक दृष्टि का भी अपना अलग महत्त्व है, लेकिन मैंने कवि कल्पना की भांति, कल्पना के आकाश में विचरण करते हुए शिक्षा से जुड़े हुए अर्थ टटोलने और तलाशने का प्रयास किया है। सम्भव है सुधीजनों को कुछ विसंगतियाँ भी मिलें, किन्तु वैचारिक आकाश में जब छलाँग लगाते हैं तो कुछ नए प्रकाश की तारिकाएं सहज ही मिलती हैं, जो मेरे मन में प्रकाशित हुईं, उन्हें शब्दबद्ध कर दिया। कहते हैं शिवरात्रि जागरण की रात है। यह चेतना के जागरण की रात बने, विवेक और ज्ञान के जागरण की रात बनें, देश के विकास में नई-नई संभावनाओं को तलाशने की रात बने। तमसो मा ज्योतिर्गमय की रात बने।

शोधार्थी (विक्रम वि.वि. उज्जैन)
88 सी, जवाहर कॉलोनी, झालावाड़ (राज.)
मो : 9001083740

Rajasthan Education Department

राजस्थान दिवस विशेष

म्हारो राजस्थान....

❒ कमल सिंह भाटी

अपनी वीरता, भक्ति, कला, संस्कृति, अपणायत, रीति-रिवाज, लोक त्योहारों के रूप में भारत में ही नहीं विश्व भर में अनूठी परंपरा को संजोए रखने वाले राजस्थान प्रदेश का स्थापना दिवस 30 मार्च को मनाया जाता है। अंग्रेजों की दासता से मुक्ति मिलने के बाद राजस्थान के देशी रजवाड़ों व रियासतों का एकीकरण राजस्थान प्रदेश के रूप में सात चरणों में हुआ। जो कि 18 मार्च 1948 से शुरू होकर 1 नवम्बर 1956 को पूर्ण हुआ। इन्ही सात चरणों में चतुर्थ चरण के तहत एकीकरण दिनांक 30 मार्च, 1949 को वृहद राजस्थान नाम से हुआ जिसमें जयपुर, जोधपुर, बीकानेर व जैसलमेर की रियासतों का एक संघ बनाया गया जो कि सातों चरणों में भोगौलिक एवं संख्यात्मक दृष्टि से सबसे वृहद था। कालान्तर में इसी 30 मार्च की तिथि को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए इसे राजस्थान दिवस अथवा राजस्थान स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

राजस्थान का नामकरण : राजस्थान के एकीकरण से पूर्व अलग-अलग देशी रियासतें होने के कारण इसे 'राजपूताना' के नाम से जाना जाता था। राजपूताना शब्द का प्रथम बार प्रयोग आयरलेण्ड निवासी व लेखक जार्ज थॉमस द्वारा 1800ई. में किया गया था। सिरोही जिले में बसंतगढ़ अभिलेख में ''राजस्थानादित्या'' शब्द का उल्लेख है। जिसका अर्थ होता है 'राजा का निवास स्थान'।

राजस्थान शब्द का प्रथम प्रयोग इंग्लैण्ड निवासी व राजस्थान में पॉलिटिकल एजेण्ट रहे जेम्स टॉड द्वारा स्वरचित पुस्तक 'एनाल्स एण्ड एण्टिक्विटिज ऑफ राजस्थान में 1929 ई. में किया गया था। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद भी राजस्थान निवासी गौरीशंकर हीरानन्द ओझा द्वारा किया गया। इस प्रकार इस विस्तृत भू भागीय प्रदेश का नामकरण राजस्थान नाम से हुआ।

विरासत, परम्पराएं व रीति-रिवाज : राजस्थान प्रदेश अपनी शौर्य गाथाओं, त्याग, भक्ति, रंगीन व पारंपरिक त्योहारों, सुरीले गीतों, सुनहरे रेतीले धोरों के साथ-साथ स्थापत्य कला में किलों, हवेलियों, बावड़ियो, जैन मन्दिरों जैसे दर्शनीय स्थलों के कारण जगत विख्यात है। यहाँ महाराणा प्रताप, वीर दुर्गादास, महाराजा सूरजमल, राणा सांगा जैसे अप्रतिम वीर हुए है तो हाडी रानी, पद्मनी, रूठी रानी उमादे जैसी वीरांगनाओं की कहानियां भी रोंगटे खड़े कर देती है साथ ही मीरां की भक्ति, पन्ना का त्याग, अमृदादेवी का बलिदान व लोकदेवता रामदेवजी, हड़बूजी, पाबूजी, गोगाजी, मेहाजी एवं तेजाजी के द्वारा प्राणों का बलिदान देकर निस्वार्थ भाव से किए गए लोक कल्याणकारी कार्यो जैसे उदाहरण अन्यत्र विरले ही मिलते हैं।

विश्व विरासत कालबेलिया नृत्य, मांड व लंगा गायकी, हरियाली से आच्छादित अरावली की वादियां, पक्षियों के कलरव से गुंजित झीलें, गगन चुंबी किले व मरूस्थल के सुनहरे रेतीले धोरे राजस्थान आने वाले विदेशी पावणों का मन मोहते हैं तो लोकगीत 'घूमर' व 'केसरिया बालम आवों नी पधारों म्हारे देश' हमारी अपणायत की अनूठी मिसाल प्रस्तुत करते है। इसी रंगीन राजस्थान की आभा में पुष्कर मेला, मरू मेला, ग्रीष्म महोत्सव आबू चार चांद लगा देते हैं।

ऐतिहासिक युग के साथ-साथ देश की आजादी के बाद भी इस रंगीले प्रदेश के निवासियों ने विश्वमंच पर प्रत्येक क्षेत्र में अपने हुनर का परचम लहराया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में नगेन्द्र सिंह एवं दलबीर भण्डारी को न्यायाधीश के पद पर आसीन होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हैं।

खेल के क्षेत्र में राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़ ने 2004 में ऑलम्पिक खेलों में रजत पदक एवं अवनी लखेरा, देवेन्द्र झाझड़िया, सुरेन्द्र गुर्जर ने पैरालम्पिक खेलों में अपने हुनर के बल पर पदक जीतकर राजस्थान प्रदेश का नाम रोशन किया है। भारतवर्ष की उन्नति के क्षेत्र रक्षा, विज्ञान, राजनीति, साहित्य, प्रशासन, कला इत्यादि क्षेत्रों में राजस्थान के निवासियों ने अपना झण्डा बुलंद रखा है। हवलदार मेजर पीरू सिंह को 1947-48 में एवं मेजर शैतान सिंह को 1962 के चीन युद्ध में अदम्य साहस, वीरता एवं शौर्य के लिए मरणोपरान्त परमवीर चक्र से नवाजा गया था। राजनीति के क्षेत्र में राजस्थान प्रदेश की निवासी प्रतिभा देवी सिंह पाटिल भारत की पहली महिला राष्ट्रपति रही तो भेरौंसिंह शेखावत देश के उपराष्ट्रपति के पद पर आसीन रहे।

कला के क्षेत्र में कालबेलिया नृत्यांगना गुलाबो, मांड गायिका अल्लाह जिल्लाई बाई, ब्लू पोट्री में कृपाल सिंह शेखावत व मंगणियार व लंगा गायकी के सैंकड़ों कलाकारों ने वैश्विक प्रसिद्धि प्राप्त की है।

राजस्थान प्रदेश व उसके निवासियों की इन विशेषताओं से मिलने वाली प्रेरणा प्रदेश के विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने में सहायक होगी।

व्याख्याता
राउमावि., ओला, जैसलमेर
मो. 9982032359

Rajasthan Education Department

जल है तो कल है

❒ शंकर लाल माहेश्वरी

"पानी बचाया जा सकता है, बनाया नहीं जा सकता है। दादाजी ने नदी में पानी देखा, पिताजी ने कुएं में, हमने नल में देखा और बच्चों ने बोतल में। अब उनके बच्चे कहाँ देखेंगे? जरूर विचार करें एवं पानी को व्यर्थ नष्ट न होने दें। दिनोदिन पानी की घटती उपलब्धता निरन्तर उसका बढ़ता हुआ अभाव और जल स्रोतों की निर्ममतापूर्वक बर्बादी तथा धंधे वालों का कुत्सित जल व्यवसाय और सर्व सुलभ जल स्रोतों के मिट जाने से जो जल संकट उत्पन्न हुआ है इससे तो पता लगता है कि अब वह दिन दूर नहीं है जब आखिरी विश्व युद्ध पानी के लिए ही होगा।"

जीवन की अमूल्य निधि पानी है। मानव शरीर में लगभग 75 प्रतिशत पानी होता है अतः पानी के अभाव में जीना भी दूभर हो जाता है। मानव शरीर पंच तत्वों से निर्मित है। धरती, जल, अग्नि, आकाश और वायु। इन पाँच तत्वों में जल की आवश्यकता प्रत्येक प्राणी को होती है। इसके अभाव में वह अधिक समय जीवित नहीं रह सकता। यद्यपि कहा गया है कि धरती का एक तिहाई भाग पानी हैं किन्तु इसके एक प्रतिशत का ही उपयोग होता है। जल भंडार का 97 प्रतिशत पानी समुद्रों में खारे पानी के रूप में है। 2.67 प्रतिशत पानी पर्वतीय क्षेत्र में बर्फ के रूप में संग्रहित है। केवल 0.33 प्रतिशत जल ही भूमिगत जल के रूप में होने से जल संकट बना हुआ है। बढ़ती जनसंख्या और घटते जल स्रोतों के कारण प्राणिमात्र का जीवन दूभर बन गया है। देश में जितने भी औद्योगिक संस्थान हैं उन सबका दूषित पानी नदियों में प्रवाहित कर दिया जाता है। इससे भी पानी की समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। इसी कारण आज भी गंगा मैली है। जल की आपूर्ति दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है।

प्राणिमात्र को जीवित रहने के लिए जितनी भोजन की आवश्यकता है उससे कहीं अधिक पानी अनिवार्य है। आज प्रकृति प्रदत्त पानी दुर्लभ हो गया है। प्राचीनकाल में पानी को पैसा नहीं पुण्य कमाने का माध्यम माना जाता था। तभी तो कहा गया है कि-

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानस चून।।

पानी की विशिष्टता का उल्लेख हमारे धर्म ग्रन्थों में भी हुआ है।

बृहस्पति स्मृति- जो एक दिन पानी रोकता है उसका अगली और पिछली पीढ़ी पुण्य प्राप्त करती है।

श्रीरामचरितमानस-

जल ही मूल जिन्ह सरितन्ह नाहिं,
तरसि गये मुनि रहहिं सुखाई।

गुरु ग्रंथ साहिब- धरती माँ है, नदियाँ, धमनियाँ है और जंगल फेफड़े है।

कुरान शरीफ- पानी खुदा की रहमत है। इसका टूटना विनाश के बराबर है।

मुस्लिम धर्मावलम्बियों की मान्यता है कि-'आदमी को खुदा के घर में मरने पर पानी के खर्च का हिसाब देना होगा।'

संस्कृत में जल को जीवन कहा गया है। जल के बिना जीवन नहीं इसलिए 'जल ही जीवन' है कि उक्ति का प्रचलन है। वैदिक ऋचाओं में उल्लेख है कि पृथ्वी से जल प्राप्त हो, औषधियों अर्थात वनस्पतियों से जल प्राप्त हो, दिव्यता से भरे हुए अंतरिक्ष से जल प्राप्त हो और हमारे लिए दिशाएं भी जल उपलब्ध कराती है।' इस प्रकार हमारे प्राचीन धर्म ग्रंथों में जल की विशेष महिमा वर्णित है। प्रसिद्ध वैदिक मंत्र 'ओम अग्निर्देवता, मरुतोदेवता, वरुणोदेवता कहा गया है। इसका तात्पर्य जल हमारे लिए देवतुल्य है। देवार्चनों के आह्वान के पश्चात जलम् समर्पयामि का विधान है। पेगम्बर इस्लाम हजरत मोहम्मद साहब ने भी यही कहा है कि- पानी अफजल सदका का (दान न्यौछावर) है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि जल सभी प्राणियों के लिए मधुरूप है। जल ही औषधि है, जल रोगों का शत्रु है। यही सब रोगों का नाश करता है। जल अत्यंत आरोग्यप्रद एवं बलदायक है। अथर्ववेद में तो इतना कहा गया है कि-'जल में अमृत है तथा जल में औषधियाँ है।'

जल की उपादेयता को वर्णित करते हुए कहा गया है कि 'अजीर्ण होने पर जल औषधि है, पच जाने पर जल बल देता है, भोजन के समय जल अमृत के समान है। भोजन के अन्त में विष का फल देता है। वस्तुतः आज की इस विषम परिस्थिति में जल संकट से मुक्ति पाने के लिए प्रत्येक देशवासी को चिंतन करना होगा कि हम इस संकट से कैसे छुटकारा प्राप्त करें। आज के इस भौतिकवादी दौर में हमने प्रकृति का भरपूर दोहन किया है। उसका अस्तित्व ही चरमरा गया है। नदियों पर बाँध बना कर उनका मार्ग अवरुद्ध करते हुए, वनों की अंधाधुंध कटाई तथा चौड़ी सड़कों के निर्माण, समुद्रों में आणविक परीक्षण, कल-कारखानों के अनगिनत निर्माण, दैनिक उपयोग हेतु पानी का अनावश्यक दुरुपयोग तथा प्राचीन जल स्रोतों में अवरोध उत्पन्न कर जो जल संकट उत्पन्न किया है उस पर गंभीरता से विचार करते हुए समाधान की आवश्यकता है।

जिस तरह हम पाई-पाई को जोड़कर अपनी धन-संपदा को बढ़ाने के लिए तत्पर रहते हैं उसी तरह जल की बूँद-बूँद बचानी होगी। इसकी हर एक बूँद में जीवन स्पंदन छिपा हुआ है। इसमें प्राण तत्व समाहित है। अतः इसे अमृत के समतुल्य मान्यता प्रदान की गई है। जीवन में पानी की महत्ता को प्रतिपादित करने के लिए लोकजीवन में पानी से सम्बद्ध कई कहावतों और मुहावरों का भी प्रचलन हो गया है। जो पानी की अनिवार्यता को घोषित करती है। पानी आना, पानी-पानी होगा, पानी में रहकर मगर से बैर करना, चुल्लू भर पानी में डूब मरना, आँखों का पानी सूख जाना आदि।

वस्तुतः पानी की अनिवार्यता प्रत्येक दृष्टि से महसूस की जाती रही है। अतः पेयजल की सुरक्षा अति आवश्यक है। प्राचीन काल से ही सामाजिक व्यवस्था इस ढंग से निरूपित की गई थी कि पेयजल साफ-सुथरा रहे और वह सुरक्षित बना रहे। इसीलिए कुएं, बावड़ी, पनघट और तालाबों के निर्माण की व्यवस्था की गई। पानी के अभाव के कारण घरों में टांके बनाकर पानी को संग्रहित किया जाता है जो आवश्यक है। अतः आवश्यकता है कि-

- गन्दे नालों का पानी जो नदियों के पानी को प्रदूषित करता है, को नियंत्रित किया जाए।
- शिक्षाक्रम से सम्बद्ध पाठ्यक्रम में जल की उपयोगिता सम्बन्धी जानकारी अनिवार्यतः दी जाए।
- जनप्रतिनिधियों को जल संरक्षण हेतु उत्प्रेरित किया जाए।
- सार्वजनिक सेवा संस्थानों द्वारा जल संरक्षण का अभियान चलाया जाना चाहिए।
- नहरों को सीमेन्टेड बनाया जाया ताकि जल की अनावश्यक बर्बादी न हो।

Rajasthan Education Department

- रेतीले क्षेत्रों में सीमेन्टेड कुएं बनाए जाए ताकि वर्षा का पानी संग्रहित हो सके।
- जल वितरण संस्थानों की लापरवाही से नष्ट होने वाले पानी को नियंत्रित किया जाए।
- पहाड़ों से आने वाले पानी की रोकथाम हेतु नदियों को जोड़ा जाना आवश्यक है।
- खेतों में चारों तरफ की सीमाओं को मजबूत दीवारों से प्रतिबंधित किया जाए।
- खेतों के पास जहाँ पानी व्यर्थ बहता है उसे नालियों का निर्माण कर खेतों में पहुँचाया जाए।
- पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को बन्द किया जाए।
- पहाड़ों की तलहटी में जलाशयों का निर्माण किया जाए।
- काम में आने वाला पानी व्यर्थ नष्ट न हो, इस पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाए।
- जल संग्रह के समस्त स्रोतों का पुनरुद्धार हो।
- कृषि कार्य के लिए बूँद-बूँद पानी वाली सिंचाई विधि को बढ़ावा दिया जाए।
- घरों में वर्षा जल को संग्रहित करने के लिए टांके बनवाए जाए।
- पर्यावरण को प्रदूषण रहित किया जाए।
- जल स्रोतों को मल-मूत्र, कूड़ा-कचरा तथा जहरीले पदार्थों से बचाया जाए।
- पूजा स्थलों पर पूजा अर्चना के बाद प्रदूषित सामग्री को नदियों में प्रवाहित करने पर रोक लगाई जाए।

भूजल बोर्ड की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2013 में पिछले एक दशक की तुलना में 56 प्रतिशत कुँओं के जल स्तर में गिरावट आई है। जो अब अधिक बढ़ गई है। माना जाता है कि यदि पानी के सम्बन्ध में हमारी सोच और समझ में वांछित परिवर्तन नहीं हुआ तो समूचे विश्व स्तर पर आगामी 15 वर्षों में पानी आवश्यकता के मुकाबले में 40 प्रतिशत कम हो जाएगा। जल संकट से खाद्यान्न समस्या भी विकराल रूप धारण कर लेगी। अतः हम सभी जल संकट की इस समस्या पर गंभीरता से विचार करते हुए बूँद-बूँद पानी की बचत करें अन्यथा भारी संकट का सामना करना होगा। प्रत्येक नागरिक को यह याद रखना चाहिए कि 'जल है तो कल है।'

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
पोस्ट आगूंचा, भीलवाड़ा, (राज.)-311022
मो: 9413781610

अविस्मरणीय एवं अनूठी दांडी यात्रा

❐ लक्ष्मी चौबीसा

हमारे स्वतंत्रता संग्राम में सैंकड़ों-हजारों राष्ट्र-प्रेमी सेनानियों ने अंग्रेजी शासन से लोहा लेकर अद्भुत योगदान दिया था। इस संग्राम के इतिहास में कई ऐसे पड़ाव आए हैं जिन्होंने न केवल आंदोलन की दिशा बदल दी वरन् उन्हें नए मुकाम तक पहुँचाया। इतिहास में दर्ज इन प्रमुख घटनाओं में दांडी यात्रा को प्रमुख स्थान प्राप्त है। नमक सत्याग्रह ने भारतीय जनमानस में यह दृढ़ विश्वास पैदा किया कि आजादी की राह में सत्य और अहिंसा का प्रयोग करते हुए वे हर उस काले कानून का सशक्त विरोध कर सकते हैं, जो उन्हें उनके अधिकारों को हासिल करने से रोकते हैं या वंचित करते हैं। दुनिया में औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध जितने भी आंदोलन हुए हैं, उनमें दांडी मार्च अपने आप में अनूठा है। महात्मा गाँधीजी के नेतृत्व में सिविल नाफरमानी का यह अहिंसक आंदोलन ब्रिटिश सरकार की नींव को हिलाने वाला सिद्ध हुआ, जिसमें नमक जैसे सामान्य वस्तु को मुख्य मुद्दा बनाकर सत्ता को खुली चुनौती दी गई।

नमक कर की समाप्ति और नमक पर सरकारी नियंत्रण तथा एकाधिकार की पूर्ण समाप्ति की मुख्य मांग के साथ ब्रिटिश सरकार के कई अन्यायपूर्ण कृत्यों की तीव्र भर्त्सना के उद्घोष के साथ गाँधीजी के नेतृत्व में यह आंदोलन 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से उनके 78 चुने हुए साथियों के साथ प्रारम्भ हुआ। जिसे नमक सत्याग्रह, दांडी यात्रा या दांडी मार्च जैसे कई नामों से याद किया जाता है। 24 दिन की लंबी यात्रा के उपरांत 6 अप्रेल को गाँधीजी ने दांडी के समुद्र तट पर एक मुट्ठी नमक अपने हाथ में लेकर नमक कानून को तोड़ने की एवं सविनय अवज्ञा की विधिवत घोषणा की। यह भारत में अंग्रेजों के नमक के उत्पादन, वितरण और बिक्री के एकाधिकार को खुली चुनौती थी।

इस आंदोलन का बीजारोपण कांग्रेस के लाहोर अधिवेशन से ही हो चुका था। जब पूर्ण स्वराज्य का लक्ष्य घोषित करते हुए सबने 26 जनवरी 1930 को स्वाधीनता दिवस के रूप

में मनाने का संकल्प किया और आगामी आंदोलनों के लिए गाँधीजी को पूरी तरह से अधिकृत किया। इसी परिप्रेक्ष्य में गाँधीजी ने 30 जनवरी 1930 को 'यंग इंडिया' पत्र में 11 सूत्री माँगों के द्वारा ब्रिटिश सरकार के समक्ष भारतीयों पर लगाए गए कई अनावश्यक करों के भार को कम करने के साथ-साथ नमक जैसी गरीब के लिए निहायत जरूरी वस्तु को पूरी तरह से कर मुक्त करने की मुख्य माँग रखी, जिसके न मानने पर सविनय अवज्ञा आंदोलन की स्पष्ट चेतावनी दी गई थी।

जब तत्कालीन सरकार ने इन माँगों पर किसी भी प्रकार से ध्यान नहीं दिया, तब महात्मा गाँधीजी ने वायसराय इरविन को पुनः एक पत्र लिखा जिसमें इन मांगों को दोहराया गया। इरविन ने इसका उत्तर भी नहीं दिया वरन मखौल उड़ाते हुए भारत सचिव वेजवुड बेन को लिखा 'फिलहाल तो नमक सत्याग्रह की भावी योजना ने मेरी नींद नहीं उड़ाई है।' पर इन बातों से गाँधीजी तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने पूर्ण योजनाबद्ध रीति से आंदोलन की रूपरेखा बनायी। उन्होंने पूर्व तैयारी के लिए सरदार वलल्भ भाई पटेल के नेतृत्व में कुछ चुनिंदा स्वयंसेवकों को साबरमती आश्रम से दांडी तक के मार्ग को निर्धारित करने, बीच के गाँवों में जनसंपर्क करके लोगों में नमक कानून एवं अन्य दमनकारी कानूनों के विरुद्ध जनमत तैयार करने की मंशा से 5 मार्च को भेजा, किंतु ब्रिटिश

Rajasthan Education Department

सरकार ने 6 मार्च को ही सरदार पटेल को रास गाँव से गिरफ्तार कर लिया। इससे गाँधीजी के उत्साह एवं कार्ययोजना में कोई परिवर्तन नहीं आया।

निर्धारित समय पर 12 मार्च को प्रातः 6.30 बजे अपने 78 साथियों के साथ जब गाँधीजी साबरमती आश्रम से निकले, उन्होंने सशक्त शब्दों में कहा, ''इस साम्राज्य का अंत करने के लिए ही मेरा जन्म हुआ है, मैं सफल होने पर ही आश्रम में लौट कर आऊँगा।''

गुजरात के अंदरूनी हिस्सों से होते हुए नवसारी जिले के दांडी के समुद्र तट तक के गाँवों में असंख्य सभाओं में अंग्रेजी शासन की क्रूरताओं की निन्दा की गई। पूरे देश में जनसभाओं की झड़ी लग गई, जिसमें सविनय अवज्ञा तथा करों की नाअदायगी का आह्वान किया गया। स्वयं गांधीजी ने 11 मार्च को ही यह घोषणा कर दी थी कि जब वे नमक कानून तोड़ें, उसके बाद व्यापक पैमाने पर नमक का गैर कानूनी निर्माण और नीलामी आरंभ कर दी जाए। इसमें विदेशी कपड़ों और शराब का बहिष्कार भी सम्मिलित किया जावे। भाग लेने की सबको छूट थी किन्तु अहिंसा और सत्य की शपथ लेने के बाद।

इस दांडी मार्च ने देश विदेश में पूरे यूरोप और अमेरिका के मीडिया में धूम मचा दी। अमेरिका की टाइम्स मेगजीन, जिसने प्रारम्भ में गाँधीजी की कृशकाय देह का उपहास करते हुए चुटकी भर से साम्राज्य हिलाने की हिमाकत करने का मज़ाक उड़ाया था, ने बाद में स्वीकार किया और लिखा ''एक मुट्ठी नमक में किसी भी साम्राज्य को उखाड़ फेंकने की शक्ति होती है।'' अंतरराष्ट्रीय पटल पर वे छा गए। शिकागो ट्रिब्यूनल ने लिखा-''ये सभी सफेद लहराती हुई नदी जैसे दिखाई पड़ते हैं।'' सुभाष चन्द्र बोस ने इस यात्रा की तुलना नेपोलियन की पेरिस यात्रा एवं मुसोलिनी के रोम मार्च से की। यात्रा में गाँवों के नागरिकों के साथ-साथ लंबा कारवां जुड़ता गया। बढ़ता ही चला गया। लोग उनके स्वागत में सहज ही बंदनवार सजाते, सड़कों पर छिड़काव करते, सभा की व्यवस्था करते। जनता गाँधीजी को देवतुल्य मानने लगी। जब 19 मार्च को खेड़ा जिले के बरसाड ताल्लुके के रास के पाटीदारों ने मालगुजारी की नाअदायगी का आंदोलन शुरू करने की आज्ञा मांगी, गाँधीजी ने सबको साथ लेते हुए उन्हें स्वीकृति दी, मध्य प्रांत में वनविभाग के क्रूर कानूनों के उल्लंघन की भी स्वीकृति दे दी।

इस प्रकार देशव्यापी जनआंदोलन के विस्तार के साथ 5 अप्रेल 1930 को गाँधीजी के जत्थे के दांडी तट पर पहुँचने से पूर्व ही वहाँ एक बहुत बड़ी भीड़ उपस्थित थी। बर्बर अंग्रेजी शासन ने तट पर नमक को मिट्टी के साथ मिला कर खराब करवा दिया था। फिर भी 6 अप्रेल को गाँधीजी ने समुद्र तट से एक मुट्ठी नमक अपने हाथ में उठा कर कहा-''मैं नमक कानून तोड़ता हूँ साथ ही सविनय अवज्ञा प्रारंभ करता हूँ।''

पूरे देश में जगह-जगह पर लोग नमक बनाने लगे, बेचने लगे। जहाँ समुद्री किनारा नहीं था वहाँ लोग लोणी मिट्टी जमा करने और खुलेआम नमक का विनिमय करने लगे। सरोजिनी नायडू ने गाँधीजी को संबोधित किया, ''हे नमक कानून भंजक आपको मेरा सलाम।'' वह मुट्ठी भर नमक बाद में तत्कालीन 1600 रुपये में अर्थात 750 डालर में नीलाम हुआ जिसका आंदोलन के काम में उपयोग किया गया। 9 अप्रेल 1930 को गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा का विधिवत कार्यक्रम घोषित किया। उन्होंने आदेश दिया-''हमारा पथ हमारे लिए निर्धारित हो चुका है....और हम जल्द ही देखेंगे कि पूर्ण स्वराज्य आकर हमारे दरवाजों को खटखटाने लगेगा।'' इस आदेश में मुख्य रूप से नमक बनाने, असहयोग करने, मद्यनिषेध, खादी-चरखे का प्रसार करने, विद्यालयों, संस्थाओं का बहिष्कार करने, छूआछूत त्याग, धार्मिक एकता संबंधी कदम मुख्य थे। अब यह सत्याग्रह सिर्फ गाँधीवादी कार्यकर्ताओं तक ही सीमित नहीं रहा। शीघ्र ही आंदोलन ने देशव्यापी स्वरूप धारण कर लिया। संयुक्त प्रदेश में लगानबंदी के रूप में, पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त में लालकुर्ती आंदोलन, धरसाणा में नमक गोदाम काण्ड, दक्षिण में तंजावुर तट पर नमक सत्याग्रह, बंबई प्रांत में मील मजदूरों का आंदोलन, पूर्वोत्तर सीमांत में नागाओं का विद्रोह कर्नाटक में कन्नड़ लगानबंदी आंदोलन, मध्यप्रदेश का जंगल सत्याग्रह अर्थात जन आंदोलन की विभिन्न धाराओं ने एक होकर ऐसी उत्तांग तरंग का रूप धारण कर लिया जिसके थपेड़ों से ब्रिटिश राज्य डगमगाने लगा।

यद्यपि सरकार ने क्रूर दमनचक्र चलाया। लगभग 90000 लोगों को गिरफ्तार किया गया तथा सभी बड़े नेताओं के साथ-साथ गाँधीजी को भी 5 मई को गिरफ्तार कर लिया गया। आंदोलन के विस्तार वाले कई स्थानों पर मार्शल लॉ तक लगाया गया। संदेह के आधार पर बिना मुकदमा चलाए निर्दोष लोगों को जेलों में बंद कर दिया। इस नृशंसता से भी सत्याग्रही विचलित नहीं हुए। लाठी चार्ज में एक जत्थे के गिरते ही नया जत्था उसका स्थान लेने आ जाता। पूरे देश में मजदूरों, किसानों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों, वकीलों, व्यापारियों, सैनिकों और महिलाओं ने प्रभातफेरियों, तिरंगे वस्त्रों, धरनों के माध्यम से अपने-अपने तरीकों से योगदान दिया।

इस प्रकार गाँधीजी द्वारा नमक कानून तोड़ने का व्यापक एवं दूरगामी प्रभाव हुआ। देश के युवा आम जनता के साथ मिलकर भारत को मुक्त कराने एवं समानांतर प्रशासन स्थापित करने के मार्ग पर अग्रसर हुए। सत्याग्रही ब्रिटिश सरकार पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने में, सामान्य जन को जोड़ने में और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीयों का न्यायपूर्ण पक्ष रखने में सफल रहे।

खादी की तरह नमक के मुद्दे ने सभी को व्यापक रूप से यह मौका दिया कि प्रतीक रूप से आम जनता के कष्टों से स्वयं को एकाकार कर सकें। अतः इस दांडी यात्रा ने जनचेतना की ऐसी मजबूत आधारभूमि तैयार की जिसमें भविष्य के वृहद 'भारत छोड़ो आंदोलन' एवं दूसरे आंदोलन अपनी जड़ें जमा सके।

स्वयं इरविन ने फरवरी 1930 में स्वीकार किया ''आपने तो नमक के मुद्दे को लेकर एक अच्छी खासी रणनीति तैयार की है।'' इसलिए अमेरिका की प्रतिष्ठित टाइम मैगजीन ने 2011 में विश्व के दस बड़े परिवर्तनकारी आंदोलनों में नमक सत्याग्रह को दूसरा स्थान दिया था। सचमुच में नमक कानून के खिलाफ गाँधीजी द्वारा शुरू किया गया यह दांडी मार्च एक बड़ी एवं युगांत कारी घटना थी जिसने न केवल ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी वरन् हमें हमारी आजादी के निकट भी पहुँचा दिया।

शिक्षा उपनिदेशक (सेवानिवृत्त)
3/73 राती तलाई, बाँसवाड़ा (राज.)-327001
मो: 9460431982

Rajasthan Education Department

सामुदायिक हित में विज्ञान शिक्षण

❐ दीपक जोशी

'विज्ञान' एक सारगर्भित शब्द जिसमें पूरे ब्रह्माण्ड की अलौकिकता समाई है। इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। किसी समाज व राष्ट्र की प्रगति सीधे तौर पर उनके वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास से जुड़ी होती है। इस संदर्भ में विज्ञान शिक्षण का महत्त्व अतुल्य है। लेकिन विज्ञान शिक्षण को कक्षा-कक्ष तथा पाठ्यक्रम की सीमाओं में बाँधना क्या न्यायोचित रहेगा?

प्रकृति अपने आप में विज्ञान की सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका है, जो विज्ञान के जटिल सिद्धांतों को बड़ी ही सरलता व सहजता से हमें सिखाती है, बिना किसी कक्षा-कक्ष व पाठ्यक्रम के बंधनों के। प्रकृति न केवल हमें विज्ञान सिखाती है बल्कि इसके अनुप्रयोग भी समझाती है, बस आवश्यकता है तो सही दृष्टिकोण की। विश्व के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों की प्रेरणा का मुख्य केन्द्र प्रकृति ही रही है। अतः विज्ञान शिक्षण को सहज, प्रभावी और सार्थक बनाना है तो हमें प्रकृति का अनुसरण करना चाहिए।

विभिन्न कक्षाओं में विभिन्न स्तरों पर हम विद्यार्थियों को विज्ञान के सिद्धांतों का शिक्षण अधिगम कराते हैं। जिनके लिए हम व्याख्यान विधि, प्रदर्शन विधि, प्रयोगशाला विधि व करके सीखो विधि आदि का समय व आवश्यकतानुसार उपयोग करते हैं। लेकिन विज्ञान विषय मात्र शिक्षण-अधिगम तक ही सीमित नहीं है, यह प्रत्यक्ष रूप से समुदाय के हित व विकास से भी जुड़ा है। तो फिर विज्ञान शिक्षण को समुदाय हित से जोड़ना एवं विज्ञान के सिद्धांतों को अनुप्रयुक्त बनाना क्या आवश्यक नहीं? इस संदर्भ में एक नवीन विज्ञान शिक्षण विधि 'सामुदायिक हित में विज्ञान शिक्षण' को अवश्य ही समावेशित किया जाना चाहिए।

'सामुदायिक हित में विज्ञान शिक्षण' का तात्पर्य है विद्यार्थियों द्वारा विज्ञान के विभिन्न सिद्धांतों का समुदाय व राष्ट्र हित में अनुप्रयोग कर सामुदायिक समस्याओं के निवारण को सुनिश्चित करना। इससे न केवल विज्ञान शिक्षण अधिगम को सहज, प्रभावी व रोचक बनाया जा सकता है, बल्कि विज्ञान के सिद्धांतों का अनुप्रयोग समुदाय हित में किया जा सकता है, साथ ही विद्यार्थियों में समुदाय के प्रति अपनी जिम्मेदारी जाग्रत होती है। उन्हें इस बात का ज्ञान होता है कि विज्ञान की सहायता से हम किस प्रकार समुदाय एवं राष्ट्र की प्रगति में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

'सामुदायिक हित में विज्ञान शिक्षण विधि' में हम विद्यार्थी के स्तर व रुचि के अनुसार किसी सामुदायिक समस्या का चयन कर सकते हैं, फिर उस समस्या से संबंधित विज्ञान के सिद्धांतों को सरलीकृत रूप से विद्यार्थियों को शिक्षण अधिगम करवाना चाहिए। तत्पश्चात् शिक्षक सक्रिय मार्गदर्शन के साथ बच्चों से वर्किंग विज्ञान प्रोजेक्ट मॉडल तैयार करवाए जो कि उस समस्या विशेष के समाधान में कारगर साबित हो। उदाहरण के रूप में हम विद्यार्थियों से ग्रामीण गृहणियों के लिए इकोफ्रेंडली चूल्हा, श्रमिक वर्ग के लिए सीमेंट कैरी बैग जैकेट, ग्रामीणें के लिए रूरल रेफ्रिजरेटर व प्राकृतिक जल शोधक, वाहन चालकों के लिए स्मॉग सेफ्टी सिस्टम, कृषकों के लिए सोनामुखी कटिंग मशीन, शिक्षण अधिगम के लिए स्मार्ट बजट प्रोजेक्टर आदि का या फिर क्षेत्र विशेष की किसी सामुदायिक समस्या के समाधान हेतु कोई वर्किंग प्रोजेक्ट मॉडल तैयार करवा सकते हैं, संभावनाएं असीमित है।

माध्यमिक कक्षा तक समस्त विद्यार्थी विज्ञान विषय का नियमित अध्ययन करते हैं, उसके पश्चात बहुत कम विद्यार्थी ही अपने भविष्य निर्माण के लिए विज्ञान संकाय का चयन करते हैं, उसमें से भी बहुत कम विद्यार्थी चिकित्सा, अभियांत्रिकी और रिसर्च क्षेत्र में सफलता पाते हैं। तो फिर बचे हुए विद्यार्थियों का क्या? जबकि यह तो सुनिश्चित है कि प्रकृति में घटित हर घटना, हर क्रिया से विज्ञान अवश्य जुड़ा है। तो फिर विज्ञान विषय से पृथक हुए विद्यार्थी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विज्ञान से जुड़े ही रहते हैं और अपने जीविकोपार्जन के लिए निर्भर भी। अतः 'सामुदायिक हित में विज्ञान शिक्षण' विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी व बौद्धिक प्रगति में मील का पत्थर साबित हो सकता है।

इस संदर्भ में भारत सरकार की एक अति महत्त्वाकांक्षी एवं महत्त्वपूर्ण योजना इंस्पायर अवॉर्ड मानक ही कारगर साबित हो रही है। जिसका ध्येय प्रतिवर्ष लाखों विद्यार्थियों में समुदाय व राष्ट्रहित में नवाचारी वैज्ञानिक सोच जाग्रत करना है। छोटे से छोटे वैज्ञानिक नवाचार समुदाय के एक बड़े हिस्से को लाभान्वित कर सकते हैं, इसे हमें समझना चाहिए व विद्यार्थियों को भी समझाना चाहिए। वर्तमान में छोटे-बड़े वैज्ञानिक नवाचार कई स्टार्टअप के जन्मदाता हैं, जो कि राष्ट्र के आर्थिक व तकनीकी विकास में महत्त्वपूर्ण साबित हुए हैं।

'सामुदायिक हित में विज्ञान शिक्षण' को प्रभावी व कारगर बनाने के लिए माध्यमिक स्तर पर प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा वर्किंग विज्ञान प्रोजेक्ट मॉडल तैयार करना सुनिश्चित किया जाना चाहिए, जिसमें शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक के रूप में अति महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा तैयार वर्किंग प्रोजेक्ट मॉडल के शोध प्रबंध को एक सार्वभौमिक वेबसाइट पर संग्रहित किया जाना चाहिए तथा उनके सार संग्रह को समुदाय व राष्ट्रहित में उपभोग किया जाए, ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए। शिक्षकों के लिए विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई मार्गदर्शक पुस्तिका की भी व्यवस्था की जानी चाहिए।

'सामुदायिक हित में विज्ञान शिक्षण' विधि के प्रमुख चरण-

1. विद्यार्थी के स्तर व रुचि के अनुसार सामुदायिक समस्या का चयन।
2. समस्या से संबंधित वैज्ञानिक सिद्धांतों का सरलीकरण एवं शिक्षण अधिगम।
3. मार्गदर्शक शिक्षक की सहायता से समस्या समाधान हेतु विद्यार्थी द्वारा वर्किंग प्रोजेक्ट मॉडल का निर्माण।
4. प्रोजेक्ट मॉडल का वैज्ञानिक परिष्करण।
5. प्रोजेक्ट मॉडल की उपयोगिता का मूल्यांकन।
6. शोध प्रबंध एवं सार संग्रह।
7. निष्कर्षों का समुदाय में प्रचार-प्रसार।

एक आदर्श विज्ञान शिक्षक का उद्देश्य मात्र विज्ञान शिक्षण तक ही सीमित न होकर, अपने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना व उनमें वैज्ञानिक दक्षता कौशल का विकास करना भी है। जिसके लिए 'सामुदायिक हित में विज्ञान शिक्षण विधि' बहुत ही कारगर व लाभदायक साबित हो सकती है। जिसका उपयोग यदि वृहत स्तर पर किया जाए तो निश्चय ही हमें सार्थक सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे।

नेशनल अवॉर्डी टीचर-2021
प्रधानाध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जेलवेल
बीकानेर (राज.)
मो: 7014046464

Rajasthan Education Department

रीडिंग कैम्पेन : मेरे अनुभूत प्रयोग

❐ शिव शंकर प्रजापति

कितना अच्छा हो, विद्यालय की पहली घंटी आखिरी घंटी बन जाए एवं आखिरी घंटी पहली। अर्थात विद्यार्थी विद्यालय आते समय खुशियों की किलकारी करता हुआ आए एवं समय पूर्ण होने के बाद भी घर जाने का मन नहीं हो। जापानी पुस्तक तोत्तो चान में भी लगभग यही संप्रत्यय है कि विद्यालय में भौतिक संसाधन भले ही न्यून हो लेकिन विद्यार्थी के मन और रुचि के अनुरूप शिक्षण हो।

रीडिंग कैंपेन की गाइड लाइन में अंकित उदाहरण मधु चौहान और कंचे का खेल भी हमें यही संदेश देता है कि खेल-खेल में ही बालक बुनियादी शिक्षा पूर्ण करें। रीडिंग कैंपेन में निर्धारित 100 दिवसीय कार्य योजना के अनेक आयाम, लेखक द्वारा नवाचारों के रूप में क्रियान्वित किए गए हैं। तीनों लक्ष्य समूहों से संदर्भित नवाचारों के कतिपय अंश, इस लेख के माध्यम से सुधी पाठकों एवं विद्वान शिक्षकों को समर्पित है।

गतिविधि– पुस्तकालय का एक्सपोजर विजिट,पुस्तक का कवर डिजाइन।

लेखक का पदस्थापन दौसा जिले के सुदूर आंचलिक क्षेत्र के छोटे से विद्यालय में था जहाँ 12 कक्षाएँ, 575 का नामांकन एवं मात्र 5 कक्षा-कक्ष थे। ऐसी स्थिति में अभावों में उत्कृष्टता का लक्ष्य लेकर 'मेरे विद्यार्थी भी शहरी क्षेत्र से प्रतिस्पर्धा कर प्रशासनिक सेवा में चयनित हों' इस सपने के साथ ग्रीष्मकालीन वाचनालय प्रारंभ किया। वाचनालय में पुस्तकालय की पुस्तकों के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की पुस्तकें एवं समाचार पत्र भी रखे गए। होनहार एवं इच्छुक 50 विद्यार्थियों का चयन कर उन्हें एक-एक डायरी भी उपलब्ध करवाई गई। निर्धारित समय पर विद्यार्थी आते, अपनी मनपसंद पुस्तकें, अखबार, पत्रिकाएँ पढ़ते एवं पठित सामग्री के प्रमुख अंश अपनी डायरी में अंकित करते।

इस नवाचार से न केवल विद्यार्थियों में सामान्य ज्ञान की वृद्धि हुई बल्कि स्वानुशासन से स्वाध्याय की प्रवृत्ति का भी विकास हुआ। इसी नवाचार को आगे बढ़ाते हुए 20 विद्यार्थियों को ए 4 साइज के अनुपयोगी कागजों के 20 फोल्डर उपलब्ध करवाते हुए उन्हें समाचार पत्रों का एक-एक विशेष शीर्षक दिया गया। फोल्डर का शीर्षक से संबंधित कवर पेज भी विद्यार्थियों ने ही डिजाइन किया। विद्यार्थी अपने आवंटित शीर्षक से संबंधित समाचार पढ़कर, अखबार से काटकर अपने फोल्डर में चिपकाने लगे। कुछ दिनों बाद ही एक शीर्षक से संबंधित सभी लेख एक ही फोल्डर में संग्रहित हो गए, जिसका उपयोग अन्य विद्यार्थी भी करने लगे।

इस नवाचार से एक ओर अनुपयोगी कागजों का उपयोग हो गया वहीं दूसरी ओर सूचना केंद्र की तर्ज पर अलग-अलग क्षेत्रों के फोल्डर बन गए, जिसका उपयोग विभिन्न पर्वों के दौरान प्रदर्शनी के रूप में भी किया जाने लगा।

गतिविधि– पारिवारिक कहानियाँ, अपनी भाषा में कहानी पढ़ना, मेरी कहानी- मेरी जुबानी, नानी-दादी की कहानी।

अपने बुजुर्ग परिजनों से संवादहीनता को कम करने एवं प्राथमिक वर्ग के विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास के उद्देश्य के साथ यह संदेश दिया गया कि जो विद्यार्थी अपने दादा-दादी, नाना-नानी से कोई लोक कहानी (बात) सुनकर प्रार्थना सभा में सुनाएगा और जिसकी पाँच कहानी सबसे पहले पूरी हो जाएगी उस विद्यार्थी को उसी दिन प्रधानाचार्य की कुर्सी पर बैठाया जाएगा।

इस घोषणा से प्राथमिक वर्ग के बालक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा में जुट गए और दादा-दादी से कहानी सुनकर प्रार्थना सभा में हिंदी या मातृभाषा में कहानी सुनाने लगे। एक ही दिन दो बालिकाओं की पाँच-पाँच कहानियाँ पूरी हुई, जिन्हें प्रधानाचार्य की कुर्सी पर बैठाया गया। चार समाचार पत्रों ने अच्छे-अच्छे शीर्षकों के साथ इस शून्य निवेश नवाचार की खबरों को प्रकाशित किया। इस प्रयोग से रीडिंग कैंपेन के तीनों लक्ष्य समूह की निर्धारित गतिविधियाँ क्रियान्वित हो सकती है।

गतिविधि– एक भारत श्रेष्ठ भारत

विभाग द्वारा पूर्व में निर्देशित कार्यक्रम एक भारत श्रेष्ठ भारत की क्रियान्विति के लिए लेखक ने आसाम राज्य की संस्कृति, भाषा, कला, भौगोलिक स्थिति, वेशभूषा आदि के चित्र विद्यार्थियों से तैयार करवा कर वार्षिक उत्सव की प्रदर्शनी में रखे गए, साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आसाम के बिहू नृत्य को भी सम्मिलित किया गया। विद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'हेरिटेज विंडो' में हिंदी एवं असमिया भाषा में राष्ट्रगान भी प्रकाशित किया गया। कक्षा के बाल कलाकृति कॉर्नर में इन चित्रों को स्थाई रूप से प्रदर्शित किया गया।

इनके अतिरिक्त अन्य निर्धारित गतिविधियों पर भी नवाचार किए गए।

मासिक थीम– कक्षा-कक्ष को एक थीम देकर, तदनुसार चित्रकृतियाँ बनाकर बाल कलाकृति कॉर्नर में चिपकाना।

गोल घेरे में गतिविधियाँ– बाल सभा के दौरान गोल घेरा बनाकर 1, 4, 7, 10 या 1, 7, 13, 19 की शृंखला में अंक बुलवाना।

प्रेस साक्षात्कार– उच्च पदासीन व्यक्ति की स्कूल विजिट के दौरान विद्यार्थियों द्वारा उनसे प्रेस साक्षात्कार की तर्ज पर प्रश्न पूछना।

स्थानीय वनस्पति की खोज– स्थानीय वनस्पतियों के पत्तों एवं बीजों का संग्रह करवाकर उनका प्रचलित नाम, हिंदी का नाम एवं वानस्पतिक नाम लिखकर प्रदर्शित करना।

खबरों का आनंद– कतिपय विद्यार्थियों को बाल पत्रकार का पद देकर, दृश्य घटनाओं के प्रेस नोट बनवाकर, भित्ति पत्रिका का प्रकाशन।

इस प्रकार हम शून्य/न्यून निवेश नवाचारों को अपनाकर 'निपुण भारत मिशन' के बुनियादी शिक्षा के संकल्प को साकार कर सकते हैं।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
टोडाभीम, करौली (राज.)
मो: 9782370076

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

English for Communication at School

❒ Dr. Ram Gopal Sharma

A language can well be acquired if exposed naturally in the context. A teacher can be considered a major resource for the learners. Except formal teaching of language and content subjects, a teacher can expose language before the learners to facilitate the learners to acquire language. For the convenience of teachers some useful phrases of informal communication for various context have been enlisted here that may be used with children of all age groups as well as with fellow teachers. Language acquisition can be a fun if teachers use English in the school campus and learners are motivated to use language .

A. Before entering the campus

- Good morning sir/madam.
- Please, help me out in this.
- Please try the other way round
- Hey Akash! How are you doing?
- Hey Hari! You come to school once in blue moon.
- Your dress up and hairdo is so weird. You're going to be the laughing stock of the class.
- See, the bell is ringing: we've reached school in the nick of time.
- Please, mind the railing. You may hurt yourself.
- Let's stroll a bit before the bell.
- Have you prepared science test today?
- Have you decided your topic for debate/ science exhibition/presentation
- Will you participate in sports/annual day this time?
- I am sure that sir/ma am will be surprised by my model/idea for exhibition this time.

B. In the campus

- Which way leads to the room number 10?
- Could you please tell me where principal sir is?
- May I come in. sir?
- Excuse me sir/madam.....
- Don't stand in the cluster and talk.
- My scooty got punctured on the way.
- Mam/sir, this is Aniket's leave application.
- You can borrow my pen if you like.
- Are you handy at using different mobile applications like Gyansankalp Portal etc.?
- What do you say about having Saturday as a no bag day?
- Do you mind if I sit here with you?

C. In Principal's office

- **Principal:** Have you planned this/ completed the assigned task?
- **Principal:** What is the status of the work?
- **Teacher:** Ma'am. I had a word with students. They agreed to do the work. It will take two days. I am working on it.
- **Principal:** Still working? Finish it immediately.
- **Teacher :** Sure ma'am/sir. I will look into that. I will finish it soon.
- **Principal:** Please make sure every student gets a signature of their parents on their form.
- Where is Mr. Vikas? I haven't seen him today.
- Call on Mr. Vikas.
- I need to take a leave for tomorrow. I have an urgent work.
- My mother/father is not feeling well. I have to go. Nobody is there for taking care of her/him.
- Will I have to manage alone or can I involve other teachers too?
- Please, guide me for this, sir.
- Thanks for getting this done.
- Good work, as always.
- Since everyone is here, let's get started.
- I'll keep this meeting brief as I know you are all busy with classes/work.
- Good morning everyone. I arranged this meeting to congratulate you all for successful completion of the event.
- I've called this meeting in order to
- We are here to discuss
- Are there any more comments?
- Thank you every one for getting here on time.
- Excuse me unfortunately I've to leave.
- Come to my office at earliest convenience.
- Thank you Mr. Rakesh (for pulling everyone together on such short notice.
- This is so great I think others could benefit from learning about it.
- You consistently bring your all and I truly appreciate that.
- Did you forget to bring the book/photo again. It's not good.
- I am sorry/so sorry/really sorry/ genuinely sorry I'm late.

D. In the staff room

- Good morning everyone.
- How are you all?
- I am (not) fine (today).
- The weather is hot/cold/rainy/ cloudy/ foggy/ windy/ misty/ stormy/ humid/ today. isn't it?
- It's a pleasant/beautiful day, isn't it?
- It looks. like it's going to storm.
- We couldn't ask for a nicer day, could we?
- How about this weather?
- It's so nice out today. isn't it?
- The weather's nice today. right?
- It's very cold today.
- Wow. it's really hot/cold for this time of year.
- He is an optimistic and energetic person.
- Have you heard about this?
- Which period is going on?
- Third period is going on.
- Which is the next period?
- Next will be the fourth period.
- At what time sixth period will start?
- That will be at two o'clock.
- Now what is this?
- It's a new notice/ circular/ order regarding ..
- Do you have any free period?
- Are you free?
- Can you help me?
- Do you have a red pen?
- Please, I'm busy right now I can't talk to you.
- Thank you for always be willing to lend a helping hand.
- Your work ethic impressed me.
- You are really good at cheering everybody up.
- You come up with fantastic ideas.
- You are so thoughtful/inspiring/great listener...
- You have the best of ideas.
- You deserve this appreciation.
- On behalf of the whole staff team. I welcome you to our school/team/place.
- Welcome to the team/school and congratulations on your new joining as
- I need your assistance/guidance/support.
- Will you do me a favour?
- I am so busy that I can't even go for lunch.
- Your table is so crowded. May I help you?
- I will do my work with full dedication.
- Ritu ma'am is absent today.
- We shall have to make arrangement for her classes
- Today's is Kamal sir's Birthday.
- Let's have a party.

Reader and HOD-UG
Govt. IASE, Bikaner
Ph: 9460305331

Rajasthan Education Department

RTE शोधसार

RTE के अंतर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों का अध्ययन

❒ शिवजी गौड़

प्रस्तावना– निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार 2009 राज्य में 1 अप्रेल 2010 से लागू हुआ, जिसकी धारा 12(1)(ग) के अनुसार गैर सरकारी विद्यालयों को अपनी एंट्री लेवल कक्षा की 25 प्रतिशत सीट्स पर 'दुर्बल वर्ग', 'असुविधाग्रस्त समूह' के बालक–बालिकाओं को प्रवेश देकर कक्षा 8 तक निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध करवानी होगी और गैर सरकारी विद्यालयों के बालकों की फीस का पुनर्भरण अधिनियम की धारा 12(2) तथा राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम 2011 के नियम 11 के अनुसार सरकार द्वारा किया जाता है। उक्त विद्यार्थियों की फीस एवं उनकी पाठ्य पुस्तकों का पुनर्भरण राज्य सरकार द्वारा सत्र 2013–14 से किया जा रहा है। क्या गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत ये बच्चे अधिगम स्तर पर उन्नत है? क्या इन पर किया गया सरकारी व्यय इनकी शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक भूमिका निभा रहा है? क्या उक्त बच्चों की सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों से शैक्षिक उपलब्धि बेहतर है? वे कौन से कारक (कारण) है जो इन बालकों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर रहे हैं? इन सभी प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में उक्त शोध **'RTE के अंतर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नामांकन, ठहराव एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन'** किया जाना जरूरी समझा गया।

शोध उद्देश्य–

1. RTE अंतर्गत विद्यार्थियों को प्रवेश देने वाले विद्यार्थियों की सत्रवार संख्यात्मक स्थिति का अध्ययन करना।
2. RTE अंतर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नामांकन की वस्तुस्थिति का अध्ययन करना।
3. RTE अंतर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का कक्षा–5 तथा सत्र 2019–20 की अंतिम अध्ययनरत कक्षा तक ठहराव का अध्ययन करना।
4. RTE अंतर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–5 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर का अध्ययन करना।
5. सरकारी विद्यालयों एवं RTE अंतर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–5 के वर्ष वार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर की तुलना करना।
6. RTE अंतर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों के संबंध में अभिभावकों के अभिमत का अध्ययन करना।
7. उपर्युक्त उद्देश्यों (1–6) के संदर्भ में अध्ययन के लिए दत्त विश्लेषण, व्याख्या तथा निहितार्थ के आधार पर सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पना–शोध अनुसार Null हाइपोथिसिस बनाई गई।

शोध विधि– शोध कार्य में आदर्श मूलक सर्वेक्षण एवं वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में साक्षात्कार प्रविधि का उपयोग किया गया।

1. **अध्ययन का प्रारूप–** राज्य के 13 जिलों के गैर सरकारी विद्यालयों में RTE अंतर्गत प्रवेश लेने वाले सभी विद्यार्थियों को सोद्देश्य चयन विधि से लिया गया।
2. **शोध न्यादर्श–** यह शोध 13 जिलों के 470 विद्यालयों पर किया गया जिसमें 1116 विद्यार्थी, 250 संस्थाप्रधान, 479 अभिभावक, 470 शिक्षकों पर किया गया।
3. **शोध उपकरण–** RTE से संबंधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कारक संबंधी दत्तों के संकलन हेतु निम्नांकित स्वनिर्मित उपकरणों का विधिवत निर्माण एवं प्रयोग किया गया है–

I. अध्यापकों के लिए प्रश्नावली।
II. संस्थाप्रधान के लिए प्रश्नावली।
III. विद्यार्थियों हेतु साक्षात्कार अनुसूची (अर्द्ध संरचित)
IV. अभिभावक हेतु साक्षात्कार अनुसूची (अर्द्ध संरचित)

4. **दत्त संकलन–** प्रस्तुत शोध के नामांकन एवं पांचवी बोर्ड का परिणाम NIC से लिया गया।
5. **दत्त विश्लेषण–** दत्त विश्लेषण हेतु प्रतिशत, माध्य, मध्यमान, क्रिटीकल रेशियों तथा काई स्क्वॉयर टेस्ट का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष, सुझाव एवं अनुशंसाएँ:

1. शोध के परिणामों से स्पष्ट है कि हिंदी माध्यम विद्यालयों की तुलना में विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अधिक प्रवेश ले रहे हैं, इसके कारणों का पता लगाने के लिए विधिवत शोध प्रायोजना वांछित है।
2. शोध से ज्ञात हुआ है कि ग्रामीण विद्यालयों की तुलना में शहरी विद्यालयों में विद्यार्थी कम प्रवेश ले रहे हैं, इसके कारण ज्ञात करने के लिए विधिवत शोध प्रायोजना की आवश्यकता है।
3. आर.टी.ई. अंतर्गत गैर सरकारी विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले बच्चों में से लगभग 50% बच्चे अपनी प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा 8 तक) पूर्ण करने से पूर्व ही विद्यालय छोड़ रहे हैं। इस पलायन के कारणों का पता लगाकर इसे रोकने की आवश्यकता है।
4. आर.टी.ई. अंतर्गत प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों में पिछले 7 वर्षों में मात्र 12.87% वृद्धि ही हुई है जो कि अत्यंत कम है। प्रवेश बढ़ाने के लिए आर.टी.ई. योजना के प्रति अभिभावकों को जागरूक करने की आवश्यकता है।
5. राजकीय विद्यालयों की तुलना में गैर राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा के अंतर्गत प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि से स्पष्ट है कि 18 प्रतिशत बालक व 14 प्रतिशत बालिकाएँ सी व डी ग्रेड की श्रेणी (निम्न उपलब्धि स्तर) में

Rajasthan Education Department

आती हैं जो कि राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से इस संदर्भ में तुलनात्मक रूप से ज्यादा है। इसका निहितार्थ यह है कि गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत सी व डी ग्रेड वाले विद्यार्थियों के लिए–

I. उपचारात्मक शिक्षण की तथा

II. पूर्व की कक्षा के पाठ्यक्रम का शिक्षण वर्तमान कक्षा में करवाया जाना अपेक्षित है।

6. राजकीय विद्यालयों की तुलना में गैर राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा के अंतर्गत अंग्रेजी एवं गणित विषय में विद्यार्थियों का उपलब्धि स्तर निम्न है। अतः गैर राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए गणित एवं अंग्रेजी विषय में उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता है।

7. जातिवार विभिन्न वर्ग की उपलब्धि स्तर के विश्लेषण से स्पष्ट है कि राजकीय विद्यालयों की तुलना में गैर राजकीय विद्यालयों में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर निम्न है। अतः अनुसूचित जाति व जनजाति के गैर राजकीय विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण की व्यवस्था की जाए एवं अधिगम संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करवायी जाए।

8. गैर राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क अध्ययनरत विद्यार्थियों को पढ़ाने वाले शिक्षकों का समय-समय पर वांछित सेवारत प्रशिक्षण कराया जाए।

9. शिक्षकों का प्रभावी पर्यवेक्षण कर उन्हें वांछित अकादमिक मार्गदर्शन दिया जाए।

10. गैर राजकीय विद्यालयों में आर.टी.ई. अंतर्गत पढ़ने वाले विद्यार्थियों के शिक्षण-अधिगम कार्यक्रम का प्रभावी पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण वांछित है तथा इन विद्यालयों को समय-समय पर प्रभावी फीडबैक देकर उपलब्धि स्तर पर बढ़ाना सुनिश्चित किया जाए।

अतिरिक्त निदेशक
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर
मो. 9462022632

RGHS
राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना

❐ अनिता चौधरी

RGHS अर्थात् राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना। राजस्थान सरकार ने राज्य के समग्र स्वास्थ्य देखभाल और विकास के दृष्टिकोण से राज्य चिकित्सा सुविधाओं की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं को RGHS के रूप में पुनर्गठित किया है। यह योजना पूर्व में विद्यमान भामाशाह स्वास्थ्य योजना का रूपांतरित रूप है और केंद्र सरकार की केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना (CGHS) पर आधारित है। राजस्थान सरकार, वित्त विभाग द्वारा राज्य के माननीय मंत्री गण, माननीय विधायक गण, माननीय पूर्व विधायक गण, न्यायायिक एवं अखिल भारतीय सेवा के अधिकारी, राज्य सेवा के सेवारत कार्मिक, पेंशनर्स एवं फैमिली पेंशनर्स को राजस्थान के राजकीय एवं चयनित निजी अस्पतालों में RGHS द्वारा कैशलेस इंडोर, डे-केयर तथा आउटडोर चिकित्सा, जाँच एवं परामर्श की गुणवत्तापूर्ण सुविधाएँ प्राप्त होगी। राज्य सरकार की इस बहुआयामी स्वास्थ्य योजना से संपूर्ण राज्य के लगभग 13 लाख परिवारों के लगभग 67.5 लाख लाभार्थियों को आजीवन निःशुल्क ईलाज की सुविधा मिलेगी। RGHS योजना की शुरुआत 1 अप्रैल 2021 से की गई। इस योजना में लाभार्थी बनने के लिए RGHS के वेब पोर्टल http://rghs.rajasthan.gov.in/RGHS/home पर पंजीकरण करवाना आवश्यक है।

पंजीकरण हेतु आवश्यक दस्तावेज:–

1. जनाधार
2. एम्प्लॉइ आइ डी / पी पी ओ नम्बर

RGHS पर पंजीकरण किस प्रकार करें:–

1. RGHS को जन आधार से लिंक किया गया है इसलिए पहले जनाधार होना अनिवार्य है यदि जनाधार नहीं है तो पहले जन आधार बनवाना होगा।

2. एक जन आधार से एक परिवार का पंजीयन हो सकेगा। यदि एक जन आधार में 1 से अधिक परिवार जुड़े हुए हैं तो पहले परिवार के अनुसार पृथक-पृथक जन आधार कार्ड बनवाना होगा।

3. जिनके पास भामाशाह कार्ड बना हुआ है तो उनका जन आधार, भामाशाह कार्ड से ऑटोजेनरेट हो जाएगा।

4. जन आधार कार्ड संख्या प्राप्त होने के पश्चात सेवारत कर्मचारी अपने SSO-ID को लॉगिन करें एवं गवर्नमेंट ऐप में RGHS सेलेक्ट कर अपना पंजीकरण या रजिस्ट्रेशन करें।

5. पेंशनर्स जिनकी SSO-ID पहले से बनी हुई है वे अपनी SSO-ID लॉगइन कर सिटीजन ऐप में RGHS पर अपना पंजीकरण करेंगे।

6. पुराने पेंशनर्स जिनकी SSO-ID नहीं बनी हुई है वे पहले अपनी SSO-ID क्रिएट करेंगे उसके बाद ही RGHS में पंजीकरण करें।

7. पेंशनर्स विभाग द्वारा भी कई सेवानिवृत्त कार्मिकों का RGHS में ऑटो रजिस्ट्रेशन कर दिया गया है। इसे चेक करने के लिए आप अपने PPO नंबर एवं सेवानिवृत्ति वर्ष की सहायता निम्न प्रकार ले सकते हैं–

माना आपके PPO नंबर 402060 हैं और सेवानिवृत्ति वर्ष 2019 है तो आपकी SSO-ID होगी– PPO नंबर सेवानिवृत्ति वर्ष सेवानिवृत्ति वर्ष इसी प्रकार पासवर्ड होगा– (PPO नंबर) (सेवानिवृत्ति वर्ष) (सेवानिवृत्ति वर्ष) इसे निम्न प्रकार अप्लाई कर सकते हैं SSO-ID– 40206020192019 पासवर्ड– 40206020192019

RGHS में पंजीकरण के बाद e-card ऑप्शन से अपना e-card डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर है।

पंजीकरण सम्बन्धी समस्याओं का समाधान:–

1. यदि पति-पत्नी दोनों पेंशनर हैं तो एक जन आधार के माध्यम से पंजीयन कर सकते हैं पृथक से पंजीयन करने की आवश्यकता नहीं है अर्थात् दोनों में से कोई एक पंजीयन करते समय दूसरे को रेडियो बटन के माध्यम से पेंशनर प्रदर्शित कर RGHS फैमिली में शामिल कर सकता है।

2. यदि पति और पत्नी दोनों सेवारत कर्मचारी हैं तो एक ही जन आधार के माध्यम से पंजीयन कर सकते हैं अर्थात् दोनों में से कोई एक पंजीयन करते समय दूसरे को रेडियो बटन के माध्यम से कर्मचारी प्रदर्शित कर RGHS फैमिली में शामिल कर सकता है।

3. यदि पति व पत्नी दोनों में से कोई एक पेंशनर है एवं एक सेवारत कर्मचारी है तो एक ही

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

जन आधार के माध्यम से पंजीकरण कर सकते हैं अर्थात् दोनों में से किसी एक का पंजीकरण करते समय दूसरे को रेडियो बटन के माध्यम से कर्मचारी/पेंशनर प्रदर्शित कर RGHS फैमिली में शामिल कर सकते हैं।

4. माता या पिता में से एक या दोनों सेवारत कर्मचारी या पेंशनर है और पुत्र भी राज्य कर्मचारी है तो इस स्थिति में माता-पिता अलग जनाधार से पंजीकरण करेंगे और पुत्र पृथक से अपना जनाधार बनवाकर पंजीकरण करेगा।

5. माता-पिता में से एक या दोनों सेवारत कर्मचारी या पेंशनर है और पुत्री भी राज्य कर्मचारी है तो इस स्थिति में भी माता-पिता अलग जनाधार से पंजीकरण करेंगे और पुत्री पृथक से अपना जनाधार बनवाकर पंजीकरण करेगी।

6. माता-पिता में से कोई भी कर्मचारी/पेंशनर्स नहीं है जबकि पुत्र-पुत्री/दो पुत्र/ दो पुत्री में दोनों ही राज्य कर्मचारी हैं तो इस स्थिति में पुत्र-पुत्री / दो पुत्र / दो पुत्री दोनों का अलग-अलग जन आधार से पंजीकरण होगा। पुत्री या पुत्र दोनों में से कोई एक माता-पिता को अपनी RGHS फैमिली में शामिल कर सकता है।

7. RGHS कार्ड में लाभार्थी का नाम, जन्म दिनांक या अन्य सूचना गलत होने पर पहले जन आधार में शुद्ध करवानी होगी उसके पश्चात् RGHS कार्ड में शुद्धिकरण होगा।

RGHS फैमिली से अभिप्राय है कि लाभार्थी के पति/पत्नी तथा कर्मचारी पर आश्रित 25 वर्ष से कम आयु की दो संतान एवं माता-पिता जो कर्मचारी के पदस्थापन स्थान पर रहते हों और जिनकी मासिक आय <6000 से कम हो।

RGHS की मुख्य विशेषताएँ-

● 1 जुलाई, 2021 से पात्र लाभार्थियों को इस स्वास्थ्य बीमा सुविधा का लाभ मिलना प्रारंभ हो गया है। इस योजना के अंतर्गत प्रदेश के लगभग 13.5 लाख परिवारों के लगभग 67.5 लाख लाभार्थियों को इन्डोर, डे-केयर, आउटडोर, मातृत्व चिकित्सा, कोविड-19, ब्लैक फंगस और अन्य सामान्य व गंभीर बीमारियों हेतु आजीवन कैशलेस चिकित्सा सेवा सुलभ होगी।

● 1 जनवरी, 2004 को या उसके बाद नियुक्त कार्मिकों को राज मेडिक्लेम पॉलिसी में बने रहने या RGHS में लाभार्थी होने के लिए दोनों में से किसी एक के चयन का विकल्प देना होगा और यदि वे RGHS योजना में सम्मिलित होने का विकल्प देते हैं तो उनके वेतन से प्रतिमाह पे-मैट्रिक्स के अनुसार निर्धारित अंशदान राशि जो बहुत न्यून है, की कटौती की जाएगी।

● 1 जनवरी, 2004 के बाद में नियुक्त राज्य कर्मचारियों और पेंशनर्स को RGHS में पंजीकरण करवाने पर सामान्य बीमारी हेतु 5 लाख < और गंभीर बीमारी हेतु अतिरिक्त 5 लाख < तक का स्वास्थ्य बीमा प्रतिवर्ष, प्रति परिवार किया जाएगा और 20 हजार < प्रतिवर्ष, प्रति परिवार आउटडोर चिकित्सा हेतु देय होंगे अर्थात् इस धनराशि की सीमा में कर्मचारी 1 वर्ष में कितनी भी बार नि:शुल्क चिकित्सा सेवा का लाभ उठा सकता है।

● यदि पति-पत्नी दोनों 1 जनवरी, 2004 के बाद नियुक्त हुए हैं तो RGHS पर पंजीकरण करवाना अनिवार्य है। यदि दोनों कटौती करवाते हैं तो दोनों को दो RGHS कार्डों पर 5-5 लाख के स्वास्थ्य बीमा का अलग-अलग लाभ मिलेगा। यदि दोनों में से एक कटौती करवाना चाहता है तो RGHS फैमिली के अनुसार दोनों को एक ही RGHS कार्ड पर 5 लाख < के स्वास्थ्य बीमा का सम्मिलित लाभ मिलेगा। पति-पत्नी में से जो विकल्प देगा उसी के वेतन से कटौती होगी।

● जो मेडिक्लेम ही रखना चाहते हैं उन्हें RGHS पर पंजीकरण अनिवार्य है बाद में वे राज-मेडिक्लेम का विकल्प दे सकते हैं।

● परीवीक्षाधीन कर्मचारी भी निर्धारित अंशदान कटौती के दायरे में शामिल हैं। उन्हें भी RGHS के सभी लाभ देय होंगे।

● 1 जनवरी, 2004 को या उसके बाद नियुक्ति प्राप्त करने वाले सेवानिवृत्त पेंशनर्स, सेवानिवृत्ति के अंतिम माह में लागू पे-मैट्रिक्स के अनुसार एक साथ 10 वर्ष के अंशदान की कटौती कराने पर आजीवन सुविधा के साथ इस योजना में शामिल हो सकते हैं।

● 1 जनवरी, 2004 से पहले नियुक्त कार्मिक जिनका RGHS खाता है उनके लिए RGHS पर पंजीकरण व मासिक कटौती अनिवार्य है। वे विकल्प नहीं दे सकते। इनके लिए जो कटौती RPMF के नाम से होती थी, उसे अब RGHS में बदल दिया गया है। दिनांक 1 जनवरी, 2004 के पहले से सेवारत कर्मचारी एवं पेंशनर्स के लिए पहले से जारी RPMF को RGHSF में परिवर्तित कर दिया गया है।

● RGHS योजना में उपचार की एलोपैथी, आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी और सिद्धा (आयुष) प्रणाली के अंतर्गत चिकित्सा, परामर्श व उपचार मान्य होगा।

● GPF कार्मिकों अर्थात् 1 जनवरी, 2004 से पूर्व के कार्मिकों हेतु RGHS अनिवार्य है जबकि 1 जनवरी, 2004 के बाद नियुक्त कार्मिकों के लिए मेडिक्लेम और RGHS में से विकल्प चुनने का अवसर है।

● सेवारत GPF कार्मिकों एवं पेंशनर्स को RGHS के तहत सामान्य बीमारी हेतु 5 लाख < और गंभीर बीमारी हेतु अतिरिक्त 5 लाख < तक का स्वास्थ्य बीमा प्रतिवर्ष, प्रति परिवार किया जाएगा और असीमित आउटडोर चिकित्सा सुविधा देय होगी।

● कर्मचारी एवं उनके आश्रित लाभार्थी राजकीय या राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित अस्पतालों में इलाज करवा सकते है परन्तु आपातकालीन परिस्थितियों में गैर अनुमोदित चिकित्सालयों में भी यह सुविधा देय हो सकती है।

● RGHS के तहत जन आधार कार्ड में विवरण न होने पर भी उस परिवार के एक वर्ष तक की आयु के बच्चे के ईलाज का भी प्रावधान है।

सारांशत: RGHS सभी कर्मचारियों के लिए एक वरदान के समान है। क्योंकि पहले RPMF और मेडिक्लेम जैसी योजनाओं में चिकित्सकीय पुनर्भरण की प्रक्रिया में बिल बनाना, 90 दिन की समय सीमा में कार्यवाही पूर्ण करना और चिकित्सा के बहुत समय बाद तक राशि का पुनर्भरण न होना आदि अनेक समस्याएँ आती थी जिसके कारण 95% कर्मचारी इसका लाभ नहीं उठा पाते थे परंतु RGHS में इन सभी समस्याओं का निवारण है। हमें सिर्फ अनुमोदित अस्पताल में अपना RGHS कार्ड लेकर जाना है और हमारा वांछित इलाज पूर्ण रूप से कैशलेस और समस्या रहित होगा।

बहुत सी बीमा कंपनियां आउटडोर, रूटीन चेकअप, डे केयर और लाइफ सपोर्ट मशीनों का खर्च आदि को अपने बीमा प्लान में शामिल ही नहीं करती जिससे संबंधित स्वास्थ्य बीमा-धारक को मानसिक व आर्थिक परेशानी होती है परंतु RGHS द्वारा कर्मचारियों के स्वास्थ्य बीमा में इन सभी चीजों को शामिल किया गया है ताकि राज्य का प्रत्येक कर्मचारी पूर्ण स्वस्थ रहे और पूर्ण मनोयोग से अपनी सेवाएँ राज्य हित में प्रदान कर सके।

प्राध्यापक
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजगढ़, चूरू (राज.)-331023
मो: 7073047980

Rajasthan Education Department

वर्तमान में क्लस्टर विद्यालयों की उपादेयता

❐ लोकेश कुमार पालीवाल

शिक्षा उद्देश्य आधारित प्रक्रिया है। विष्णु पुराण में उल्लेखित श्लोक ''सा विद्या या विमुक्तये।'' इस बात को पुष्ट करता है कि, वही विद्या है जो मुक्ति दिलाए, प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य मानव को जन्म मरण के बंधनों से मुक्त करना था। गुप्त काल में पुराण, स्मृति, महाकाव्य, तर्क, दर्शन, न्याय, व्याकरण आदि का अध्ययन अध्यापन करवाया जाता था। इसके अतिरिक्त ज्योतिष, गणित तथा आयुर्वेद जैसे विषय भी पढ़ाए जाते थे। मौर्य काल में भी राज्य की ओर से विद्यालयों को चलाने का प्रचलन था। इससे यह विदित होता है कि उस समय आम लोग पढ़ना-लिखना जानते थे। शिक्षा के क्षेत्र में इस समय तक्षशिला का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय था। आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद की शिक्षा की परिभाषा ''मानव में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।'' यह बतलाती है कि बालक, स्वयं शक्तियों का स्रोत है। उसमें निहित शक्तियों का प्रकटीकरण ही शिक्षा है। स्पष्ट है कि बालक के सर्वांगीण विकास के लिए एवं उसके व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करने के लिए प्राचीन समय में भी पाठ्यक्रम में इतने विषयों का समावेश था। आज ज्ञान के विस्फोट से कई नई बातें पाठ्यक्रम से जुड़ चुकी है। जिनकी जानकारी बालक के व्यक्तित्व को पूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है। इस दृष्टि से देखा जाए तो बालक के सर्वांगीण विकास के लिए उसके शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक विकास के साथ-साथ इतिहास, भूगोल, विज्ञान, कंप्यूटर, कृषि, सूचना प्रौद्योगिकी, योगा, आर्ट एवं क्राफ्ट, संविधान, सभ्यता, संस्कृति, विश्व शांति इत्यादि समस्त विषयों का शिक्षण आवश्यक है। किंतु आज हम देखते हैं कि मानवीय एवं भौतिक संसाधनों के अभाव में हम इन विषयों को ठीक ढंग से हमारे पाठ्यक्रम में समाहित नहीं कर पा रहे हैं। यद्यपि, आजादी के बाद से शिक्षा के लिए गठित विभिन्न आयोगों एवं शिक्षा पर बनाई गई नीतियों के समावेश से हमारी शिक्षा व्यवस्था में सुधार करने के कई प्रयास हुए हैं। जैसे वर्ष 2001-2002 में सर्व शिक्षा अभियान का आगाज, इस दिशा में उठाया गया एक बड़ा कदम था। इसके अंतर्गत सब पढ़े और सब बढ़े के लक्ष्य को हासिल करने के लिए एवं ड्रॉपआउट, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए विद्यालयों की संख्या में एकाएक वृद्धि भी हुई।

विद्यालयों की संख्या में वृद्धि से, बालकों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के हमारे उद्देश्य को तो सफलता मिली, किंतु एक समस्या पैदा हो गई जिसका कि अंदेशा था। विद्यालयों की संख्या में बढ़ोतरी ने शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित किया क्योंकि विद्यालयों की संख्या में बढ़ोतरी के अनुपात में हम पर्याप्त मानवीय एवं भौतिक संसाधन नहीं जुटा पाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी हमें, वर्ष 2026 तक (फंडामेंटल लिटरेसी एंड न्यूमरेसी) पर हमारा ध्यान केन्द्रित करना पड़ रहा है जो की चिंता का विषय है कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम सब बच्चों के मूलभूत गणितीय संक्रिया और अक्षर ज्ञान भी पूरी तरह नहीं दे पाए हैं। बात स्पष्ट है कि कहाँ प्राचीन समय में हमारा लक्ष्य मुक्ति प्रदान करने वाली विद्या था और कहाँ लिटरेसी और न्यूमरेसी में सुधार करने वाली आज की हमारी शिक्षा? अर्थात संसाधनों के अभाव में हमें कहीं न कहीं गुणवत्ता से समझौता करना पड़ रहा है।

यू डाइस 2016-17 के आंकड़ों के अनुसार भारत के 20% सरकारी प्राथमिक स्कूलों में 30 से भी कम छात्र पढ़ते हैं वही 14.8% उच्च प्राथमिक स्कूलों में भी 30 से कम छात्र पढ़ते हैं अर्थात सुदूर क्षेत्रों में शिक्षा की अलख तो हमने जगा दी किंतु बालक के सर्वांगीण विकास के लिए समग्र विषयों के समावेश सहित कौशल युक्त शिक्षा आज भी दूर की कौड़ी है। 30 से कम बच्चों के लिए संचालित विद्यालयों में हमारे सीमित वित्तीय संसाधन पर्याप्त मानवीय और भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की इजाजत कैसे दे सकते हैं?

हम सबका मत यही होगा कि यह तो टेढा काम है। क्या उच्च प्राथमिक स्तर पर 30 से कम नामांकन वाले विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों के लिए प्रत्येक विषय के शिक्षकों की उपलब्धता हो पाएगी? खेल, आर्ट एवं क्राफ्ट, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कौशलों के विकास के लिए आवश्यक व्यावसायिक शिक्षा की बात एकबारगी छोड़ भी दे तब भी क्या मुख्य विषयों जैसे हिंदी, गणित, विज्ञान, सामाजिक ज्ञान, संस्कृत एवं अंग्रेजी इत्यादि के लिए भी विषय वार शिक्षक उपलब्ध करवाना हमारे लिए संभव है? मूलभूत आवश्यकताए यथा कमरे, शौचालय, पेयजल, बिजली, खेल के मैदान की पूर्ति कर पाना भी हमारे लिए संभव कहाँ हो पा रहा है?

यू डाइस 2016-17 के आंकड़े यह भी बताते हैं कि कक्षा 1 से 8 तक के विद्यालयों में प्रति कक्षा औसत 14 छात्र हैं जबकि बहुत से विद्यालयों में तो यह औसत मात्र 6 से कम है। इसी का परिणाम रहा कि 2016-17 में 1,08,017 विद्यालय एकल अध्यापकीय थे इनमें से आधे 85,743 कक्षा 1 से 5 तक संचालित होने वाले प्राथमिक स्कूल थे।

निश्चित तौर पर बालक का सर्वांगीण विकास इन परिस्थितियों में तो कठिन है। कहाँ एक और तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हम स्किल बेस्ड टीचिंग द्वारा व्यवसायिक शिक्षा के विकास पर जोर दे रहे हैं, वहीं दूसरी ओर वे चुनौतीपूर्ण स्थितियाँ है जिनके चलते हमारे होनहार बुनियादी दक्षताओं पर अटके हुए हैं। क्या इतने कम नामांकन पर विद्यालय में कला, संगीत, विज्ञान, कृषि, खेल, भाषा, प्रयोगशाला एवं व्यावसायिक शिक्षा के विकास के लिए आर्ट एंड क्राफ्ट कक्ष की स्थापना के साथ-साथ शिक्षण के लिए काउंसलर की उपलब्धता संभव है? क्या इन विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों के लिए पुस्तकालय, डिजिटल क्लासरूम, कंप्यूटर, कौशल विकास के लिए सामग्री, विभिन्न विषयों की प्रयोगशाला, खेल के मैदान की उपलब्धता संभव है?

इस समस्या के समाधान के लिए हमारा ध्यान विद्यालयों के समूहन की ओर जाता है। नामांकन के आधार पर एकीकरण न सही, संसाधनों के समूहन के बारे में तो हमें सोचना ही पड़ेगा। पंचायत स्तर पर उपलब्ध विद्यालय आपसी तालमेल द्वारा संसाधनों का उपयोग करें तो निश्चित रूप से कुछ हद तक उपर्युक्त समस्याओं से निजात पाया जा सकता है।

क्लस्टर से आशय :- क्लस्टर का हिंदी में अर्थ समूह, झुण्ड से है। शिक्षा के क्षेत्र में क्लस्टर का अर्थ विद्यालयों के समूह से है, जो

Rajasthan Education Department

आपस में मिलकर शैक्षिक उन्नयन के लिए समन्वय से कार्य करें। क्लस्टर विद्यालय अपने परिक्षेत्र में ऐसे स्थान पर स्थित हो जहाँ आवागमन की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हो ताकि निकटतम विद्यालयों के शिक्षक सुगमता से निर्धारित समय पर पहुँच सके। विद्यालय के अतिरिक्त, क्लस्टर विद्यालय में (कक्षा कक्ष या हॉल जिसमें 50 व्यक्तियों की बैठक व्यवस्था हो) होना चाहिए ताकि आवश्यकतानुसार परिक्षेत्र के समस्त शिक्षक शैक्षिक चिंतन कर सके।

क्लस्टर विद्यालय के लाभ :–

(1) पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता:– एकल स्कूल के बजाय एक समूह के लिए योजना बनाकर संसाधनों की आवश्यक उपलब्धता एवं उपयोग को ज्यादा बेहतर तरीके से सुनिश्चित किया जा सकता है। पंचायत स्तरीय सबसे बड़े विद्यालय के नेतृत्व में सभी राजकीय और निजी विद्यालय भौतिक एवं मानवीय संसाधनों को उपयोग करते हुए बच्चों के लिए हितकारी साबित हो सकते हैं। एक स्कूल में कला, संगीत, खेल, विज्ञान, भाषा एवं व्यावसायिक विषयों को पढ़ाने के लिए पर्याप्त संख्या में परामर्शदाता, प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षक मौजूद हो यह आवश्यक नहीं, किन्तु पंचायत स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का बारी-बारी से सबके हित में उपयोग किया जा सकता है।

(2) विद्यालय में शिक्षकों की अनुपलब्धता की समस्या से निजात भी क्लस्टर विद्यालय से पाया जा सकता है। किसी विद्यालय में हो सकता है किसी विषय का शिक्षक ना हो किंतु पूरी पंचायत में उसकी उपलब्धता सबके हित में हो सकती है, जैसे गणित का शिक्षक किसी स्कूल विशेष में भले नहीं हो परन्तु उनकी पंचायत के किसी स्कूल में उपलब्धता का लाभ योजना बनाकर सबके हित में हो सकता है।

(3) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए संदर्भ शिक्षक की उपलब्धता:– हमारी जनसंख्या का लगभग 2.18% हिस्सा विशेष योग्यता वाले नागरिकों का होता है यानी 100 नामांकन वाले विद्यालयों में भी एक या दो बच्चे विशेष योग्यता वाले हो सकते हैं। संदर्भ शिक्षकों के अभाव में इन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संभव नहीं है, पुनः इक्के-दुक्के बच्चों के लिए प्रत्येक विद्यालय में संदर्भ शिक्षक उपलब्ध कराना संभव नहीं है। विद्यालयों का संकुल बनाकर शिक्षक की बदलती ड्यूटी से इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

(4) आजकल बच्चों की अलग-अलग खेलों में रुचि होती है। क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, वालीबॉल, हैंडबॉल एवं फुटबॉल के लिए खेल-मैदान, कोर्ट, नेट, बैट-बॉल इत्यादि ढेर सारी सामग्री की आवश्यकता होती है। उक्त समस्त प्रकार की खेल सामग्री की उपलब्धता एक स्कूल विशेष के बूते से बाहर है किंतु क्लस्टर स्तर पर विद्यालय में खेल सामग्री द्वारा सभी बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार सीखने के अवसर उपलब्ध करवाए जा सकते हैं।

(5) यही स्थिति संगीत के क्षेत्र में काम आने वाले यंत्रों की है:– हारमोनियम, तबला, गिटार, सितार, तंदूरा, ढोलक, मृदंग एवं इसके अतिरिक्त कई अन्य यंत्रों की व्यवस्था भी क्लस्टर स्तर पर संभव है।

(6) कृषि के क्षेत्र में फलदार वृक्ष, हवादार वृक्ष, सब्जी वाले पौधे, अनाज वाले पौधे, औषधीय पौधे और उनके लिए वाटिका का संचालन अकेले एक विद्यालय को करने में संसाधनों की चुनौती हो सकती है, किंतु अलग-अलग विद्यालयों में इनके विकास के लिए सफलतापूर्वक कार्य किया सकता है। क्लस्टर स्तर पर समय-समय पर बच्चों का इन संबंधित विद्यालयों में भ्रमण करवाकर समस्त बच्चों को इनके अनुभव का लाभ दे सकते हैं।

(7) बच्चों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विद्यालय स्तर पर तो संभव है ही, परंतु इसे अंतर्विद्यालयी स्वरूप प्रदान करते हुए इनका क्लस्टर आयोजन ज्यादा बेहतर हो सकता है। बच्चे समूह में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। खेल गतिविधियाँ, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, बाल मेले के साथ बाल सभा और वार्षिक उत्सव का भी संयुक्त आयोजन क्लस्टर विद्यालयों के बीच संभव है।

(8) विद्यार्थी क्लबों का बेहतर संचालन : विद्यालय में संचालित विद्यार्थी क्लब एक ऐसी गतिविधि है जिसके माध्यम से बच्चे विभिन्न प्रवृतियों में भाग लेकर आसानी से सीखते हैं। अकेले एक विद्यालय में किन-किन विद्यार्थी क्लबों का संचालन किया जाए, ये एक चुनौती है। क्लस्टर के माध्यम से अकादमिक, खेल, कला, शिल्प, संगीत, भाषा, विज्ञान के साथ-साथ शिक्षा से जुड़े विभिन्न विद्यार्थी क्लबों का संचालन अलग-अलग स्कूल स्तर पर करके क्लस्टर स्तर पर इनकी संयुक्त प्रस्तुति करवाई जा सकती है।

(9) किसी भी व्यवस्था के सफल संचालन के लिए नियोजन आवश्यक है। क्लस्टर द्वारा दोनों अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक संदर्भ में योजनाबद्ध तरीके से काम करने की संस्कृति का विकास होगा। इस योजना में मानव संसाधन शिक्षण, अधिगम, संसाधन, भौतिक संसाधन और इंफ्रास्ट्रक्चर सुधार के लिए नियोजन किए जा सकते हैं।

(10) व्यावसायिक शिक्षा में बच्चों को दक्ष करने के लिए तथा उनमें श्रम के प्रति रुचि विकसित करने के लिए अलग-अलग व्यवसाय पर कार्य करने की आवश्यकता होती है, इसके लिए समय-समय पर विद्यालय में दर्जी, लुहार, बढ़ई, मिस्त्री, कारीगर, नल-लाइट की जानकारी रखने वाले, माली इत्यादि को बुलाकर बच्चों को व्यावसायिक रूप से दक्ष बनाया जा सकता है। इसके लिए क्लस्टर स्तर पर किए जाने वाले प्रयास सार्थक सिद्ध हो सकते हैं।

(11) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, हर राज्य और जिला स्तर पर बाल भवन की स्थापना का प्रावधान करती है। कला, खेल और कॅरियर संबंधी गतिविधियों में भागीदारी कर सके ऐसे बाल भवन जहाँ संभव हो, स्कूल क्लस्टर के हिस्से हो सकते हैं।

स्पष्ट रूप से अलग-अलग स्तर पर किए जाने वाले प्रयासों की अपेक्षा मिलजुल कर चुनौतियों का सामना करने के कई फायदे हो सकते हैं। आँगनबाड़ी केन्द्रों सहित 5 से 10 किमी के दायरे में आने वाले विद्यालयों के समूहन का सुझाव सर्वप्रथम कोठारी आयोग (1964-66) ने दिया। इसे अमल में लाकर मूर्त रूप प्रदान करना वर्तमान की आवश्यकता है। यह कदम भावी शिक्षा के उत्थान में मील का पत्थर साबित होगा।

वर्तमान परिस्थितियों में विद्यालय स्तर पर संसाधनों के अभाव में बालक का सर्वांगीण विकास एक चुनौती है, जिसे क्लस्टर विद्यालय की संकल्पना को मूर्त रूप देकर कुछ हद तक कम किया जा सकता है।

प्राध्यापक,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
नाथद्वारा, राजसमंद (राज.)
मो: 9929477180

Rajasthan Education Department

पर्यावरण संरक्षण

जन-जन में आई जागरूकता

❒ मुकेश बोहरा अमन

दुनिया भर में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या बहुत ही विकराल होती जा रही है। जिस पर हमें सजग होकर ठोस व धरातलीय कार्य करने की सख्त जरूरत है। यह बात स्वयंसिद्ध है कि कोरोना महामारी के इन वर्षो ने हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति भली-भांति सजग व जागरूक किया है और हमारी आदतों में पर्यावरण संरक्षण से जुड़े छोटे-छोटे परन्तु बहुत ही महत्त्वपूर्ण बदलाव आए हैं। बीते वर्ष पर्यावरण संरक्षण को लेकर भारत ही नही बल्कि दुनिया भर के देशों के माथे पर चिन्ता की लकीर स्पष्ट रूप से देखी गई। जिस पर वैश्विक स्तर पर चिन्तन-मंथन के साथ-साथ कार्यरूप देने को लेकर कई सम्मेलन आयोजित हुए। उन पर कानून-कायदे, नियमादि बने। वहीं धरातल पर भी सरकारों से लेकर आम-आदमी तक ने अपनी-अपनी हैसियत के मुताबिक पर्यावरण संरक्षण का कार्य किया।

दुनिया भर में कोरोना जैसी लाईलाज वैश्विक महामारी के फैलने से पर्यावरण जैसे बिन्दुओं पर नए सिरे से विचार-विमर्श हुआ। वैज्ञानिकों व पर्यावरण विशेषज्ञों की चिन्ता व चेतावनियों को गम्भीरता से लिया जाने लगा। जिस कड़ी में वैश्विक स्तर पर विभिन्न सम्मेलनों सहित कई गतिविधियाँ आयोजित हुई। नवम्बर माह में ग्लासगो शहर में 26वां जलवायु परिवर्तन अर्थात् कॉप-26 का आयोजन हुआ। जिसमें पर्यावरण एवं जैव-विविधता संरक्षण के लिए ठोस व पुख्ता कदम उठाए जाने की पैरवी हुई।

वहीं इससे पूर्व 11 जनवरी 2021 को फ्रांस की राजधानी पेरिस में वन प्लेनेट समिट 2021 का आयोजन हुआ। यह सम्मेलन मूल रूप से जलवायु शिखर सम्मेलन की ही शृंखला है। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य प्रकृति की सुरक्षा को बढ़ावा देना रहा। जिसमें पारिस्थितिकी प्रणालियों की रक्षा के लिए जैव विविधता पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस शिखर सम्मेलन का आयोजन संयुक्त राष्ट्र और विश्व बैंक के सहयोग से किया गया था। शिखर सम्मेलन के माध्यम से जैव विविधता संरक्षण को

लेकर स्थलीय और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा, कृषि विज्ञान का प्रचार, जैव विविधता के लिए धन जुटाना, वनों की कटाई, प्रजातियों और मानव स्वास्थ्य के बीच की कड़ी जैसे बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित रहा।

दुनिया भर में ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु संकट को लेकर दिनों-दिन चिन्ता बढ़ती ही जा रही है। इस साल हीटवेव, वायु प्रदूषण, तूफान और आग ने दुनिया भर में समस्याएँ पैदा की है। वहीं भारत ने भी पर्यावरण संरक्षण और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए कई बड़े व महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। हाल ही में भारत सरकार ने रिपोर्ट ऑफ द एक्सपर्ट कमेटी ऑन रोडमैप फॉर इथेनॉल ब्लेंडिंग इन इंडिया 2020-2025 जारी की। पुणे में इथेनॉल के उत्पादन और पूरे देश में वितरण के लिए महत्त्वाकांक्षी ई-100 पायलट परियोजना का शुभारंभ किया। भारत जलवायु परिवर्तन से पैदा हुई चुनौतियों के प्रति जागरूकता के साथ कार्य कर रहा है। अक्षय ऊर्जा के लिए हमारी क्षमता में पिछले 6-7 वर्षो में 250 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। भारत आज नवीनीकरणीय ऊर्जा क्षमता के मामले में दुनिया के शीर्ष 5 देशों में हैं। विशेषकर सौर ऊर्जा की क्षमता पिछले 6 वर्षो में लगभग 15 गुना बढ़ी है। अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के साथ-साथ वन भी पिछले कुछ वर्षो में 15 हजार वर्ग किलोमीटर तक बढ़े हैं। पिछले कुछ वर्षो में हमारे देश में बाघों की संख्या दोगुनी हो गई है और तेंदुओं की संख्या में भी लगभग 60 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

पर्यावरण संरक्षण को लेकर भारत जैसे विशाल व विकासशील देश के सन्दर्भ में बात करें तो यहाँ की बढ़ती जनसंख्या, नगरीकरण एवं औद्योगीकरण की तीव्र गति, वाहनों की तादाद में हो रही अप्रत्याशित बढ़ोतरी जैसे कई मुद्दों ने पर्यावरण को लेकर चिन्ताएँ बढ़ाई है। जिस ओर सरकारों को मजबूती के साथ कार्य करने की जरूरत है। मानव का सुखद भविष्य, स्वच्छ पर्यावरण से ही सुनिश्चित होता है। हमें आज यह विचार करना है कि क्या सही है और क्या गलत? ऐसे में हमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का भी समूचित व सही दिशा में उपयोग लेने की सख्त जरूरत है।

कोराना महामारी ने सरकारों से लेकर आमजन को यह स्पष्ट रूप से दिखा दिया है कि प्रकृति के साथ खिलवाड़ अथवा उसकी अनदेखी ठीक नही है। कोरोना के दौरान सरकारों की ओर से लगे लॉकडाउन ने जहाँ आमजन की परेशानियाँ बढ़ाई वहीं लॉकडाउन ने हमें साफ हवा, खुला आसमान, पक्षियों की चहचाहट और प्रकृति के सुन्दरतम रूप के दर्शन भी करवाए। एक ओर जहाँ भारत सरकार सहित राज्य सरकारें नदियों को साफ करने, डॉलफिन के संरक्षण, पौधारोपण व संरक्षण और वायु प्रदूषण को कम करने सहित कई सारे प्रयास कर रही है। वहीं दूसरी ओर आमजन को भी इस बात को समझना होगा कि जैव-विविधता ही पर्यावरण को बचाने का सबसे बेहतर माध्यम है। हमें अपने आसपास अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने पर जोर देना होगा तथा पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कारकों से दूरी करनी होगी। हमें निरन्तर पर्यावरण को बचाने व संरक्षित करने को पूरी ऊर्जा व लग्न के साथ कार्य करने की जरूरत है। तभी हम प्रकृति के अज्ञात खतरों व प्रकोप आदि से बच सकते हैं।

संयोजक, एक घर एक पौधा अभियान
बाड़मेर, राजस्थान
मो. 8104123345

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

आदेश-परिपत्र : मार्च, 2022

● 1. सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय पुरस्कार योजना सत्र : 2020-21 हेतु शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन के सम्बन्ध में। ● 2. पदोन्नति में दिव्यांगजनों हेतु 4 प्रतिशत आरक्षण प्रावधान की पालना एवं क्रियान्विति हेतु समस्त संवर्गों की वरिष्ठता सूचियों में पात्र कार्मिकों की बैंचमार्क दिव्यांगता की प्रविष्टि की सुनिश्चितता बाबत। ● 3. निरीक्षण, दौरे एवं रात्रि विश्राम के निर्धारित लक्ष्यों की क्रियान्विति सम्पर्क पोर्टल पर अपलोड कराने के संबंध में।

1. सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय पुरस्कार योजना सत्र : 2020-21 हेतु शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/डी-1/21902/विपु/2019-21/212-213 दिनांक : 18.02.2022 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी। ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक। ● विषयः सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय पुरस्कार योजना सत्र : 2020-21 हेतु शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : शासन उप सचिव, प्रथम शिक्षा विभाग, ग्रुप-I, जयपुर/प.17(8) शिक्षा-1/2008 जयपुर दिनांकः 14.02.2022 एवं समसंख्यक परिपत्र क्रमांक : 144-150 दिनांक 09.11.2021 तथा 07.12.2021 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि इस कार्यालय द्वारा जारी समसंख्यक पत्र दिनांक 07.12.2021 के द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय पुरस्कार योजना' सत्र : 2020-21 हेतु शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन के सम्बन्ध में पंचांग जारी किया गया था। इस सम्बन्ध में आंशिक संशोधन जारी करते हुए स्पष्ट किया जाता है कि सर्वश्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार योजना सत्रः 2020-21 हेतु से सम्बन्धित सभी कार्यों के समयबद्ध निष्पादन हेतु अग्रानुसार नवीन समय-सारिणी निर्धारित की जाती है-

क्र.सं.	कार्य का विवरण	निर्धारित तिथि
1.	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वारा परीक्षणोपरांत ब्लॉक के प्रथम तीन वरीयता वाले माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों को मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को ऑनलाइन अग्रेषित करना।	21 फरवरी
2.	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा जिला स्तरीय चयन समिति के माध्यम से जिला क्षेत्राधिकार के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक वर्ग में तीन-तीन विद्यालयों के चयनोपरांत प्रस्ताव संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय को ऑनलाइन अग्रेषित करना।	23 फरवरी
3.	संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय द्वारा प्राप्त प्रस्तावों की समीक्षोपरांत संभाग के प्रत्येक जिले से माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक वर्ग में तीन-तीन विद्यालयों के प्रस्ताव निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर कार्यालय को ऑनलाइन अग्रेषित करना।	
4.	निदेशालय द्वारा संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय के माध्यम से प्रत्येक जिले से ऑनलाइन प्राप्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक वर्ग में तीन-तीन विद्यालयों के प्रस्तावों का परीक्षणोपरांत दोनों वर्गों में राज्य स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यालयों की सूची तथा जिला स्तर पर दोनों वर्गों में एक-एक सर्वश्रेष्ठ विद्यालय एवं ब्लॉक स्तर पर एक सर्वश्रेष्ठ माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय की सूची का विभागीय पत्रिका 'शिविरा' में प्रकाशन।	आगामी माह में

नोटः शेष शर्तें मूल परिपत्र दिनांक : 09.11.2021 के अनुसार यथावत रहेगी।

● **(काना राम) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. पदोन्नति में दिव्यांगजनों हेतु 4 प्रतिशत आरक्षण प्रावधान की पालना एवं क्रियान्विति हेतु समस्त संवर्गों की वरिष्ठता सूचियों में पात्र कार्मिकों की बैंचमार्क दिव्यांगता की प्रविष्टि की सुनिश्चितता बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/सस्था/वरि./के-1/दि.प.आ./2021 दिनांक 16.02.2022 ● संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा विभाग-समस्त। ● विषय : पदोन्नति में दिव्यांगजनों हेतु 4 प्रतिशत आरक्षण प्रावधान की पालना एवं क्रियान्विति हेतु समस्त संवर्गों की वरिष्ठता सूचियों में पात्र कार्मिकों की बैंचमार्क दिव्यांगता की प्रविष्टि की सुनिश्चितता बाबत्। ● प्रसंग : समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक : 21.01.2022 ● संदर्भ : कार्मिक विभाग का परिपत्रांक : प.14(36) कार्मिक/क-2/2007 पार्ट-1, जयपुर दिनांक 01.12.2021

उपर्युक्त विषय एवं प्रसंगान्तर्गत कार्मिक विभाग के संदर्भित निर्देशों के क्रम में लेख है कि समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक : 21.01.2022 द्वारा पदोन्नति में दिव्यांगजनों हेतु 4 प्रतिशत आरक्षण प्रावधान की पालना एवं क्रियान्विति हेतु संभाग क्षेत्राधिकार में समस्त संवर्गों की वरिष्ठता सूचियों में पात्र कार्मिकों की बैंचमार्क दिव्यांगता की प्रविष्टि की सुनिश्चितता एवं प्राध्यापक (स्कूल शिक्षा) तथा इससे उच्च स्तर के अधिकारियों की वांछित सूचना निर्धारित प्रपत्र में निदेशालय को प्रेषण हेतु समयबद्ध कार्य योजना एवं निर्धारित समय रेखा के अनुरूप कार्य निष्पादन के निर्देश प्रदान किए गए थे। पूर्व प्रदत्त निर्देशों के अनुवर्तन में संभाग क्षेत्राधिकार में अग्रांकित निर्देशों की पालना सुनिश्चित करावें :-

1. प्रासंगिक पत्र में प्रदत्त समय-रेखा के अनुसार दिनांक : 15.02.2022 तक पात्र कार्मिकों द्वारा बैचमार्क दिव्यांगता की शाला दर्पण के प्रपत्र-10 में ''व्यक्तिगत विवरण'' के अन्तर्गत तथा सम्बंधित वरिष्ठता सूचियों में यथास्थान प्रविष्टि हेतु आवेदन

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

की अंतिम तिथि निर्धारित है। तत्पश्चात् स्वयं आपके तथा अधीनस्थ अधिकारियों के स्तर से निम्नांकित विवरणानुसार संलग्न प्रेषित प्रारूप (1/2/3/4) में कार्य पूर्णता सम्बंधी प्रमाण-पत्र निर्धारित तिथि तक प्राप्त किए जाने/प्रेषित किए जाने की सुनिश्चितता करावें:-

(i) **प्रारूप-1 :** उक्त प्रमाण-पत्र समस्त PEEO/UCEEO/संस्था प्रधान-रामावि/राउमावि/कार्यालयाध्यक्ष द्वारा स्वयं अधीनस्थ कार्यरत समस्त कार्मिकों के प्रपत्र-10 के प्रथम पृष्ठ पर ''व्यक्तिगत विवरण'' के अन्तर्गत "Is handicapped" फील्ड की प्रविष्टि विद्यालय/कार्यालय के शाला दर्पण लॉगिन में करने के पश्चात् सम्बंधित CBEO कार्यालय को दिनांक : 18.02.2022 तक आवश्यक रूप से प्रेषित किया जाएगा।

(ii) **प्रारूप-2 :** समस्त CBEO द्वारा उपर्युक्त बिन्दु संख्या (i) में उल्लिखित अनुसार समस्त अधीनस्थ कार्यालयाध्यक्ष से प्रारूप-1 में निर्धारित प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के पश्चात् प्रारूप-2 में निर्धारित प्रमाण-पत्र सम्बंधित संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय को दिनांक 24.02.2022 तक आवश्यक रूप से प्रेषित किया जाए।

(iii) **प्रारूप-3 :** समस्त DEO (HQ)-SEC तथा DEO (HQ)-ELE द्वारा निर्धारित प्रारूप-3 में उनके कार्यालय द्वारा संधारित वरिष्ठता सूचियों में पात्र कार्मिकों की बैंचमार्क दिव्यांगता की प्रविष्टि का कार्य पूर्णता प्रमाण-पत्र दिनांक : 24.02.2022 तक आवश्यक रूप से सम्बंधित संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय को प्रेषित किया जाएगा।

(iv) **प्रारूप-4 :** समस्त संभागीय संयुक्त निदेशकों द्वारा समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक : 21.01.2022 में प्राध्यापक तथा इनसे उच्च स्तर के समस्त अधिकारियों की निर्धारित प्रारूप में वांछित सूचना तथा प्रारूप-4 में कार्य पूर्णता सम्बंधी प्रमाण-पत्र दिनांक : 25.02.2022 तक आवश्यक रूप से निदेशालय के वरिष्ठता अनुभाग में प्रेषित किया जाएगा।

2. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (CDEO) उपर्युक्त निर्देशित कार्यवाही के निर्धारित समयावधि में सम्यक् निष्पादन हेतु जिला क्षेत्राधिकार में सतत् पर्यवेक्षण तथा प्रभावी प्रबोधन की सुनिश्चितता करते हुए अधीनस्थ अधिकारियों को उक्त बाबत वांछित सम्बलन प्रदान करेंगे।

3. समस्त कार्यालयाध्यक्ष यह सुनिश्चित करें कि उनके क्षेत्राधिकार में किसी भी पात्र दिव्यांग कार्मिक की बैंचमार्क दिव्यांगता की वरिष्ठता सूची में प्रविष्टि की कार्यवाही लंबित ना रहे। इस हेतु किसी भी विभागीय कार्यालय में किसी दिव्यांग कार्मिक का आवेदन पत्र प्राप्त होने पर उक्त आवेदन पत्र को कार्यालयाध्यक्ष सम्बंधित नियुक्ति अधिकारी अथवा सम्बंधित संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय, जिसमें भी सम्बंधित हो, को तत्काल भिजवाए जाने की सुनिश्चितता करेंगे, जिससे कि किसी भी पात्र आवेदक की वरिष्ठता सूची में प्रविष्टि का कार्य शेष/लम्बित ना रहे।

4. पूर्व प्रेषित समसंख्यक पत्र दिनांक : 21.01.2022 एवं संलग्न प्रेषित कार्मिक विभाग के पत्र दिनांक : 01.12.2021 में संदर्भित निम्नांकित अधिनियम-परिपत्रादि की प्रतियां सहज संदर्भ हेतु पत्र के संलग्न प्रेषित है, जिससे कि बैचमार्क दिव्यांगता से सम्बंधित किसी भी जिज्ञासा/शंका का त्वरित समाधान विद्यमान एवं अद्यतन नियमों/प्रावधानों के आलोक में नियमानुसार किया जा सके :-

(i) समसंख्यक विभागीय पत्र दिनांक : 21.01.2022
(ii) कार्मिक विभाग का परिपत्र क्रमांक : प.14(36) कार्मिक/क-2/2007 पार्ट-1, जयपुर दिनांक : 01.12.2022
(iii) कार्मिक विभाग का परिपत्र क्रमांक : पं.7(2) कार्मिक/क-2/2019 जयपुर, दिनांक 29.08.2019
(iv) सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की अधिसूचना क्रमांक : F(10)/SAP/ACT/15374, Dated : 14-10-2021 (राजपत्र में प्रकाशन दिनांक : 21.10.2021)
(v) राजस्थान दिव्यांगजन अधिकार नियम-2018 (सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की अधिसूचना दिनांक : 23.01.2019 को राजपत्र में प्रकाशित)
(vi) सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार की अधिसूचना दिनांक : 04.01.2021 (राजपत्र में प्रकाशन दिनांक : 07.01.2021)
(vii) दिव्यांगजन अधिकार नियम-2016 (भारत सरकार के विधि एवं न्याय मंत्रालय की अधिसूचना दिनांक : 27.12.2016, दिनांक 28.12.2016 को राजपत्र में प्रकाशित)

● संलग्न : यथोक्त

● **(धमेन्द्र कुमार जोशी),** संयुक्त निदेशक (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर।

प्रारूप-1

समस्त PEEO/UCEEO/संस्थाप्रधान-रामावि/राउमावि/कार्यालयाध्यक्ष द्वारा सम्बन्धित CBEO को प्रेषणीय प्रमाण-पत्र (दिनांक : 18.02.2022 तक)

कार्यालय का नाम :

यह प्रमाणित किया जाता है कि इस विद्यालय/कार्यालय के अधीन कार्यरत समस्त कार्मिकों के प्रपत्र-10 के प्रथम पृष्ठ पर ''व्यक्तिगत विवरण'' के अन्तर्गत "Is handicapped" फील्ड की प्रविष्टि विद्यालय/कार्यालय के शाला दर्पण लॉगिन में कर दी गई हैं।

दिनांक :

हस्ताक्षर कार्यालयाध्यक्ष मय मुहर
नाम-.....
पद-.....

प्रेषित :-
मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
ब्लॉकः .....
जिलाः .....

प्रारूप-2

समस्त CBEO द्वारा सम्बन्धित संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल

शिक्षा को प्रेषणीय प्रमाण-पत्र (दिनांक : 24.02.2022 तक)

कार्यालय का नाम : मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी.....

यह प्रमाणित किया जाता है कि ब्लॉक-..... (जिला-.....) के अधीन कार्यरत/संचालित समस्त PEEO/UCEEO/ संस्था प्रधान-रामावि/राउमावि/कार्यालयाध्यक्ष से उनके अधीन कार्यरत समस्त कार्मिकों से सम्बन्धित बैंचमार्क दिव्यांगता की प्रविष्टि शाला दर्पण लॉगिन में यथास्थान किए जाने बाबत् प्रमाण-पत्र (प्रारूप-1 में) प्राप्त किए जाकर कार्यालय अभिलेखों में सुरक्षित रख लिए गए हैं।

दिनांक :

हस्ताक्षर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
मय मुहर
नाम-.....

प्रेषितिः-
संभागीय संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा,.....

प्रारूप-3

समस्त DEO (HQ)-SEC/DEO(HQ)-ELE द्वारा सम्बन्धित संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा को प्रेषणीय प्रमाण-पत्र (दिनांक : 24.02.2022)

कार्यालय का नाम : जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-प्रारंभिक/माध्यमिक.....

यह प्रमाणित किया जाता है कि इस कार्यालय के क्षेत्राधिकार के अनुरूप संधारित समस्त वरिष्ठता सूचियों में निदेशालय के निर्देश पत्र क्रमांक : शिविरा/मा/संस्था/वरि./के-1/दि.प.आ./2021, दिनांकः 21.01.2022 द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार समस्त पात्र दिव्यांग कार्मिकों से सम्बंधित प्रविष्टियां यथास्थान की जाकर वरिष्ठता सूचियां अद्यतन कर दी गई है।

दिनांक :

हस्ताक्षर जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारंभिक
नाम-.....

प्रेषितिः-
संभागीय संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, ...

प्रारूप-4

समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा द्वारा निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को प्रेषणीय प्रमाण-पत्र (दिनांक : 25.02.2022 तक)

कार्यालय का नाम : संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, ...

(i) यह प्रमाणित किया जाता है कि इस कार्यालय के क्षेत्राधिकार के अधीन कार्यरत समस्त जिला शिक्षा अधिकारियों से प्रारूप-3 में यथानिर्देशित प्रमाण-पत्र प्राप्त किए जाकर कार्यालय अभिलेखों में सुरक्षित रख लिए गए हैं।

(ii) यह भी प्रमाणित किया जाता है कि इस कार्यालय द्वारा संधारित समस्त वरिष्ठ अध्यापक एवं समकक्ष पदों की वरिष्ठता सूचियों पात्र दिव्यांग कार्मिकों की बैंचमार्क दिव्यांगता की प्रविष्टि यथास्थान कर दी गई है तथा उक्त बाबत जारी समस्त आदेशों की प्रतियां (हार्ड कॉपी एवं सॉफ्ट कॉपी में) निदेशालय के वरिष्ठता अनुभाग को प्रेषित कर दी गई है।

(iii) यह भी प्रमाणित किया जाता है कि संभाग क्षेत्राधिकार में कार्यरत समस्त प्राध्यापक एवं समकक्ष स्तर के अधिकारियों एवं उनसे उच्च स्तर के समस्त अधिकारियों में से बैंचमार्क दिव्यांगता हेतु पात्र अधिकारियों की सूचना निर्धारित प्रपत्र में निदेशालय के वरिष्ठता अनुभाग (हार्ड कॉपी एवं सॉफ्ट कॉपी में) को उपलब्ध करवा दी गई है।

हस्ताक्षर संभागीय संयुक्त निदेशक
नाम-.....

प्रेषिति :-
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर।

3. निरीक्षण, दौरे एवं रात्रि विश्राम के निर्धारित लक्ष्यों की क्रियान्विति सम्पर्क पोर्टल पर अपलोड कराने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/सतर्कता/टाइम्स पोर्टल/2022 दिनांक 23.02.22 ● संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, स्कूल शिक्षा ● विषय : निरीक्षण, दौरे एवं रात्रि विश्राम के निर्धारित लक्ष्यों की क्रियान्विति सम्पर्क पोर्टल पर अपलोड कराने के संबंध में। ● प्रसंग : प्रमुख शासन सचिव, प्रशासनिक सुधार (टाईम्स) विभाग का अ.शा. टीप, क्रमांक प.3(1) प्रसु/टाईम्स/2019 पार्ट दिनांक 01.02.22 एवं विशेषाधिकारी-शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग के पत्रांक पं. 17(4) शिक्षा -1/निरीक्षण दौरे/2003 पार्ट जयपुर दिनांक 21.02.22

उपर्युक्त विषय एवं प्रसंगान्तर्गत निवेदन है कि विभागीय अधिकारियों द्वारा निरीक्षण, दौरे एवं रात्रि विश्राम के निर्धारित लक्ष्यों की क्रियान्विति राजस्थान सम्पर्क पोर्टल पर अपलोड कराने के संबंध में प्रशासनिक सुधार (टाइम्स) विभाग एवं विशेषाधिकारी-शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग से पत्र प्राप्त हुआ है। उक्त पत्र के अनुसार विभागीय अधिकारियों द्वारा दौरे एवं निरीक्षण एवं रात्रि विश्राम कर पोर्टल पर क्रियान्विति के अंकन का प्रतिशत अत्यन्त कम अथवा न्यून है। इससे यह प्रतीत होता है कि अधिकारियों द्वारा दौरे, निरीक्षण एवं रात्रि विश्राम नहीं किए गए है अथवा उनके द्वारा क्रियान्विति का अंकन पोर्टल पर नहीं किया गया है जिसे शासन ने गंभीरता से लिया है। अतः प्रासंगिक पत्र की प्रति संलग्न कर निवेदन है कि कृपया निरीक्षण, दौरे एवं रात्रि विश्राम के निर्धारित लक्ष्यों की क्रियान्विति राजस्थान सम्पर्क पोर्टल पर शीघ्र अपलोड करवाते हुए अक्षरशः पालना सुनिश्चित करवाने का श्रम करावें।

●संलग्न-उपर्युक्तानुसार

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

● भवदीय **(मनीष कस्वां) सहायक निदेशक,** निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

राजस्थान सरकार

शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग

●क्रमांक : प.17(4)शिक्षा-1/निरीक्षण दौरे/2003 पार्ट जयपुर, दिनांक : 21.02.2022 ● राज्य परियोजना निदेशक, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, जयपुर। ●निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● विषयः निरीक्षण, दौरे एवं रात्रि विश्राम के निर्धारित लक्ष्यों की क्रियान्विति सम्पर्क पोर्टल पर अपलोड कराने के संबंध में। ●प्रसंग : प्रमुख शासन सचिव, प्रशासनिक सुधार (टाइम्स) विभाग का अ.शा.टीप. क्रमांक प.3(1)प्रसु/टाइम्स/2019 पार्ट दिनांक 01.02.2022

उपरोक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक अ.शा.टीप. के क्रम में लेख है कि विभागीय अधिकारियों द्वारा निरीक्षण, दौरे एवं रात्रि विश्राम के निर्धारित लक्ष्यों की क्रियान्विति राजस्थान सम्पर्क पोर्टल पर अपलोड कराने के संबंध में प्रशासनिक सुधार (टाइम्स) विभाग से अ.शा.टीप. प्राप्त हुआ हैं।

अतः प्रासंगिक पत्र की छायाप्रति संलग्न कर निर्देशानुसार लेख है कि कृपया निरीक्षण, दौरे एवं रात्रि विश्राम के निर्धारित लक्ष्यों की क्रियान्विति राजस्थान सम्पर्क पोर्टल पर शीघ्र अपलोड करवाते हुए अक्षरशः पालना सुनिश्चित करवाने का श्रम करावें।

●संलग्न : उपरोक्तानुसार।

●भवदीय : **(भारतेन्द्र जैन)** शासन उप सचिव-प्रथम

राजस्थान सरकार

प्रशासनिक सुधार (टाइम्स) विभाग

● विषय : निरीक्षण, दौरे एवं रात्रि विश्राम के निर्धारित लक्ष्यों के विरूद्ध क्रियान्विति सम्पर्क पोर्टल पर अपलोड कराने के संबंध में।

जैसाकि विदित है राज्य सरकार ने विभागाध्यक्ष एवं उनके अधीनस्थ अधिकारियों के दौरे, निरीक्षण एवं रात्रि विश्राम के मानदण्ड निर्धारित करते हुए यह निर्देशित किया हुआ है कि वे दौरे, निरीक्षण, रात्रि विश्राम की क्रियान्विति राजस्थान सम्पर्क पोर्टल पर यथासमय अपलोड करें।

राजस्थान सम्पर्क पोर्टल पर माह सितम्बर, 2021 से दिसम्बर, 2021 की अवधि में समीक्षा किए जाने पर आपके अधीनस्थ विभाग के अधिकारियों द्वारा अपलोड की गई सूचना की वस्तुस्थिति निम्नानुसार हैंः-

माह	कुल अधिकारी	अधिकारी जिन्हें दौरे पर जाना है	अधिकारी जिन्होंने क्रियान्विति	
			अंकित की	अंकित नहीं की
सितम्बर, 2021	55	55	23	32
अक्टूबर, 2021	55	55	21	34
नवम्बर, 2021	54	54	17	37
दिसम्बर, 2021	55	55	17	38

उक्तानुसार आपके अधीनस्थ विभागीय अधिकारियों द्वारा दौरे, निरीक्षण एवं रात्रि विश्राम कर पोर्टल पर क्रियान्विति के अंकन का प्रतिशत अत्यन्त न्यून अथवा शून्य है। इससे यह प्रतीत होता है कि अधिकारियों द्वारा दौरे, निरीक्षण एवं रात्रि विश्राम नहीं किए जा रहे हैं अथवा उनके द्वारा क्रियान्विति का अंकन पोर्टल पर नहीं किया जा रहा है।

अतः निवेदन है कि मुख्य सचिव महोदय के आदेश दिनांक 24.12.2014 के बिन्दु संख्या 20 (2) के अनुसार दौरे एवं निरीक्षण की समीक्षा के लिए प्रशासनिक स्तर पर शासन उप सचिव या उससे उच्च अधिकारी को नोडल अधिकारी नियुक्त कर, निर्देशित करें कि प्रतिमाह सम्पर्क पोर्टल पर अधिकारियों द्वारा अंकित की गई क्रियान्विति की समीक्षा करें एवं स्थिति में सुधार हेतु अधीनस्थ अधिकारियों को निर्देशित करावें।

● **(अश्विनी भगत)** प्रमुख शासन सचिव

Rajasthan Education Recruitment
सत्यमेव जयते

शिविरा पञ्चाङ्ग

मार्च-2022

रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

मार्च 2022 ● कार्य दिवस-24, रविवार-04, अवकाश-03, उत्सव-03 ● 01 मार्च-महा शिवरात्रि (अवकाश-उत्सव)। 15 मार्च-विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव)। 17 मार्च-होलिका दहन (अवकाश)। 18 मार्च-धुलण्डी (अवकाश)। 30 मार्च-राजस्थान दिवस (उत्सव)। मार्च के अन्तिम सप्ताह/अप्रेल माह में प्रथम सप्ताह-वार्षिक परीक्षा का आयोजन। नोट- (1) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं का आयोजन। (2) बोर्ड परीक्षा आयोजन के कारण सामुदायिक बाल सभा आयोजन स्थगित रखा गया है। ● प्रत्येक सोमवार-WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12) WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)। ● NO BAG DAY से सम्बन्धित (शनिवार को आयोजित होने वाली) उद्देश्य परक अवधारणाओं पर आधारित हैप्पीनेस थैरेपी, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, जीवन मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, भाषा कौशल विकास तथा निरोगी राजस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।

वर्ष–2022 में जिलेवार जिला कलक्टर द्वारा घोषित अवकाश

क्र. स.	जिले का नाम	दिनांक	वार	अवकाश का कारण
1.	श्री गंगानगर	26.07.22	मंगलवार	श्रावणी शिवरात्रि
		13.01.22	गुरुवार	लोहड़ी
2.	बीकानेर	04.04.22	सोमवार	गणगौर मेला
		02.05.22	सोमवार	अक्षय तृतीया
3.	हनुमानगढ़	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		13.10.22	गुरुवार	करवाचौथ
4.	कोटा	31.08.22	बुधवार	गणेश चतुर्थी
		09.09.22	शुक्रवार	अनन्त चतुर्दशी
5.	बारां	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		06.09.22	मंगलवार	जलझूलनी एकादशी (डोल मेला)
6.	बून्दी	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		31.08.22	बुधवार	गणेश चतुर्थी
7.	झालावाड़	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		31.08.22	बुधवार	गणेश चतुर्थी
8.	जयपुर	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		25.03.22	शुक्रवार	शीतला अष्टमी (मेला चाकसु)
9.	अलवर	11.07.22	सोमवार	मेला श्री जगन्नाथ जी महाराज
		30.08.22	मंगलवार	मेला श्री हनुमानजी महाराज (पाण्डूपोल)
10.	दौसा	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		31.08.22	बुधवार	गणेश चतुर्थी
11.	पाली	24.03.22	गुरुवार	शीतला सप्तमी
		09.09.22	शुक्रवार	अनन्त चतुर्दशी
12.	जालोर	15.02.22	मंगलवार	जालोर महोत्सव
		24.03.22	गुरुवार	शीतला सप्तमी मेला
13.	सिरोही	07.03.22	सोमवार	रघुनाथ पाटोत्सव (केवल तहसील क्षेत्र आबूरोड)
		24.03.22	गुरुवार	शीतला सप्तमी
		07.09.22	बुधवार	श्री सारणेश्वर मेला सम्पूर्ण जिला (तहसील क्षेत्र आबूरोड़ को छोड़कर)
14.	नागौर	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		25.03.22	शुक्रवार	शीतला अष्टमी
15.	बाँसवाड़ा	06.09.22	मंगलवार	देवझूलनी एकादशी
		28.10.22	शुक्रवार	मंशावृत चौथ
16.	अजमेर	8/9.02.22 चांद दिखने पर	मंगलवार/ बुधवार	उर्स मेला
		07.11.22	सोमवार	पुष्कर मेला
17.	चितौड़गढ़	25.03.22	शुक्रवार	केवल उपखण्ड क्षेत्र कपासन, राशमी, भोपालसागर एवं गंगरार में
		30.03.22	बुधवार	उपखण्ड क्षेत्र कपासन, राशमी, भोपालसागर एवं गंगरार क्षेत्र को छोड़ कर सम्पूर्ण जिले में।
		28.07.22	गुरुवार	हरियाली अमावस्या सम्पूर्ण जिले में
18.	डूंगरपुर	16.02.22	बुधवार	वेणेश्वर मेला
		12.09.22	सोमवार	रथोत्सव
19.	प्रतापगढ़	30.03.22	बुधवार	रंगतेरस
		31.08.22	बुधवार	गणेश चतुर्थी
20.	राजसमन्द	24.03.22	गुरुवार	शीतला सप्तमी
		06.09.22	मंगलवार	जल झूलनी एकादशी
21.	उदयपुर	04.04.22	सोमवार	गणगौर
		06.09.22	मंगलवार	जलझूलनी एकादशी
22.	भीलवाड़ा	25.03.22	शुक्रवार	शीतला अष्टमी
		06.09.22	मंगलवार	जल झूलनी एकादशी
23.	टोंक	31.08.22	बुधवार	गणेश चतुर्थी
		06.09.22	मंगलवार	जल झूलनी एकादशी
24.	चूरू	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		13.10.22	गुरुवार	करवाचौथ
25.	झुन्झुनू	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		13.10.22	गुरुवार	करवाचौथ
26.	सीकर	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		14.03.22	सोमवार	श्री खाटूश्यामजी मेला
27.	भरतपुर	13.07.22	बुधवार	गुरू पूर्णिमा
		31.08.22	बुधवार	गणेश चतुर्थी
28.	धौलपुर	02.09.22	शुक्रवार	देवछठ (मचकुण्ड मेला)
		04.10.22	मंगलवार	महानवमी
29.	करौली	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		04.11.22	शुक्रवार	देवउठनी एकादशी (अंजनी माता मेला)
30.	सवाई मधोपुर	21.01.22	शुक्रवार	माघ कृष्ण पक्ष संकट चतुर्थी
		31.08.22	बुधवार	गणेश चतुर्थी
31.	जोधपुर	29.03.22	सोमवार	बाबा रामदेव मेला (मसूरिया)
		25.03.22	शुक्रवार	शीतला अष्टमी
32.	बाड़मेर	24.03.22	गुरुवार	शीतला सप्तमी
		10.06.22	शुक्रवार	निर्जला एकादशी
33.	जैसलमेर	14.01.22	शुक्रवार	मंकर संक्रान्ति
		04.10.22	मंगलवार	महानवमी

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

पर्यावरण और विरासत

सहेजने में सहभागी बने विद्यालय और समुदाय

❒ देवी बिजानी

हमारे समुदाय ज्ञान और कौशलों का असीम स्रोत हैं, विशेषकर जब हम राजस्थान की बात करते हैं तो राजस्थान अपने आप में एक पूरे देश को समेटे हुए हैं जहाँ एक तरफ प्राकृतिक पर्यावरण में अरावली की पहाड़ियों से लेकर जैसलमेर के रेगिस्तान, चंबल के बीहड़ों से लेकर वांगड के घने जंगल, गंगानगर में नहर सिंचित खेती से लेकर बाड़मेर में बारिश की राह तकती नजरें देखने को मिलती है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक रीति-रिवाजों में शहरी आधुनिकता के साथ जमीन से जुड़े रीति-रिवाजों को मानने वाले लोग देखने को मिलते हैं, जहाँ एक और उस्ताद सुल्तान खान शास्त्रीय संगीत सुनने को मिलता है, वहीं दूसरी ओर लंगा मंगनियारों का लोक संगीत यहाँ की हवाओं में घुला है और इन विविध ज्ञान और कौशलों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने में समुदाय की महत्ती भागीदारी हो सकती है। जिससे विद्यार्थी अपने आसपास के पर्यावरण, परंपराओं और संस्कृति के बारे में जानकर उनके प्रति गौरव अनुभव कर सके। हमारे यहाँ, जहाँ एक ओर हस्त कलाओं में निपुण कारीगर मौजूद है वहीं विभिन्न प्रकार के गीत जिनमें विवाह गीत, फाग, प्रभाती आदि गाने के लिए कोई विशेष ट्रेनिंग नहीं दी जाती पर पीढ़ी दर पीढ़ी यह कौशल आगे हस्तांतरित होते रहे हैं पर वर्तमान युग में हम एक बड़ी समस्या का सामना कर रहे हैं कि हम इन लोक परंपराओं, लोक कलाओं, लोक रीतियों एवं कौशलों को अगली पीढ़ी को उस रूप में हस्तांतरित नहीं कर पा रहे जिस रूप में किया जाना चाहिए। आज के तकनीकी युग में हमारी नई पीढ़ी मोबाइल, लैपटॉप बड़ी आसानी से चला लेते हैं पर ओरण, बिनोटा, सिंठणा, लप्पा लपी, सूढ़, मेमद, हालरिया जैसे शब्द प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नों का हिस्सा बन कर रह गए हैं। हमारे पर्यावरण, संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के लिए हमारे विद्यालय एक बहुत अच्छा माध्यम बन सकते हैं, जहाँ समुदाय आर्थिक सहायता द्वारा विद्यालयों की भौतिक विकास एवं व्यवस्थाओं में सहयोग कर रहे हैं वहीं यदि विद्यालय की व्यवस्थाओं में थोड़ा सा बदलाव हो तो वे समुदाय के सहयोग से ज्ञान और कौशल को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का बेहतरीन माध्यम है। शनिवार को जब नो बैग डे मनाना होता है, तब स्कूलों के लिए एक अतुल्य अवसर होता है कि वे इसे मात्र औपचारिकता या बोझ ना मानकर विद्यार्थियों एवं समुदाय को एक मंच दें तथा विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से हमारे पारंपरिक ज्ञान और कौशलों को अनवरत कायम रखने में सहयोग करें। विद्यालय, समुदाय की भागीदारी के माध्यम से विद्यार्थियों को पर्यावरण और विरासत के प्रति संवेदनशील रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित करने के लिए आगे लिखे उपायों को अपना सकते हैं-

- विद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया जाए जिनमें लुप्त होने की कगार पर खड़ी कलाओं, व्यवसायों एवं परंपराओं के प्रदर्शन के अवसर उपलब्ध करवाए जाएँ जैसे पारंपरिक हस्तकला-मांडणा बनाना, बंधेज बांधना, कसीदा, ब्लॉक प्रिंटिंग, लोक गीत/विवाह गीत/फ़ाग गायन/ प्रभाती गायन, साफा/पगड़ी बांधना, लोककथा- लोकोक्ति सुनना आदि से संबन्धित गतिविधि/ प्रतियोगिताएँ शामिल की जा सकती है।
- विद्यालय में ऐसे स्थानीय लोगों को आमंत्रित किया जाए जिनसे प्रेरणा लेकर वे सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए आस पास के पर्यावरण एवं विरासत संरक्षण में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा सके। जैसे पद्मश्री से सम्मानित श्री श्याम सुंदर पालीवाल जिन्होंने गाँव में बेटी के जन्म पर पौधे लगाने की परंपरा शुरू कर ग्रामीण क्षेत्र में कन्या जन्म को उत्सव का रूप देने के साथ ही भूमिगत जल स्तर को बढ़ाने के लिए भी प्रयास किए, एकल खोरी के राणा राम जी द्वारा 27000 से अधिक पौधे लगाकर उनकी सिंचाई का कार्य स्वयं किया, अमृता देवी बिश्नोई पुरस्कार से सम्मानित श्री किशोर कुमावत जिन्होंने रणकपुर रामदेवरा मार्ग को ग्रीन कॉरिडोर में बदल दिया।
- विद्यालय में आसपास के क्षेत्रों में काम करने वाले विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देने वाले विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं को आमंत्रित करके उनके अनुभवों को विद्यार्थियों के साथ साझा करने का मंच उपलब्ध करवाया जाए जिसमें दो तरफा संवाद के द्वारा विद्यार्थियों के अनुभवों को सुनने तथा अपनी जिज्ञासा के समाधान के अवसर दिए जाएं। जैसे जैसलमेर में कार्यरत डॉ. श्रवण सिंह राठौड़ जिन्हें पेंथर मैन भी कहा जाता है, जिन्होंने राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से तेंदुए व चीते रेस्क्यू किए व माचिया बायलॉजिकल पार्क, जोधपुर में शावकों की विशेष देखभाल करके उन्हें जीवनदान दिया।
- विद्यालय द्वारा वृक्ष मित्र योजना लागू करके जिसके तहत विद्यालय परिसर सहित उसके आसपास के क्षेत्र में समुदाय के सहयोग से पौधे लगाए जाएं जिन की देखभाल का उत्तरदायित्व विद्यार्थियों को दिया जाए जैसा कि राजकीय अंध विद्यालय, जोधपुर में 2018 में किया गया, वहाँ विद्यालय परिसर के बाहर सड़क के दोनों तरफ उपलब्ध क्षेत्र में एक दानदाता द्वारा एक पौधे व ट्री गार्ड का खर्च वहन किया गया तथा एक दृष्टिबाधित छात्र द्वारा उस पौधे की देखभाल की जिम्मेदारी ली गई और 2 वर्षों में 200 से अधिक पौधे लगाए गए।
- स्थानीय विरासत/पर्यावरण के संरक्षण द्वारा- राजस्थान के हर छोटे बड़े गाँव में स्थानीय विरासत के रूप में छोटे किले, हवेलियाँ, बावड़ी, तालाब, गोचर, ओरण, बगीचे इत्यादि हैं जिनकी सफाई देखभाल का जिम्मा समुदाय व विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा संयुक्त रूप से लिया जाकर उन्हें उपयोग योग्य स्थान/ पिकनिक स्पॉट में बदला जा सकता है। इसका एक अच्छा उदाहरण ओसियां के रायमलवाड़ा गाँव का है जहाँ ग्रामीणों ने वर्षा से पूर्व एक साथ 100 ट्रेक्टर से गोचर भूमि की जुताई करके पशुओं के लिए हरी घास का प्रबंध किया।
- माँ-बेटी/नानी-दादी सम्मेलन, नानी-दादी के किस्से (जिसमें विद्यार्थी अपने घर के बुजुर्गों से उनके किस्से सुनकर आए और विद्यालय में सुनाएं) जैसे कार्यक्रम के आयोजन द्वारा इसके साथ लोक कलाकारों तथा स्थानीय व्यवसायों को करने वाले लोगों को भी प्रदर्शन के लिए बुलाया जा सकता है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तनावड़ा,
लूणी, जोधपुर (राज.)

Rajasthan Education Department

राज्य में अभिनव पहल

प्रतिभावान विद्यार्थियों हेतु कॅरियर गाइडेंस प्रेरणा स्रोत एवं मार्गदर्शक : श्रीमान संम्भागीय आयुक्त भरतपुर

❒ राजेश कुमार

शिक्षा ग्रहण कर प्राणी से मनुष्य कहलाया अन्यथा बिना शिक्षा के मनुष्य पशुवत की श्रेणी में आता है। शिक्षा जीने की कला ही नहीं अपितु जीवन की दिशा व दशा भी तय करती है। शिक्षा एक ऐसा महत्त्वपूर्ण सामाजिक निवेश है जो व्यक्ति को स्वाध्यायी, अनुशासित, विनम्र एवं रोजगार की ओर उन्मुख करते हुए भावी जीवन का निर्माण करती है। लक्ष्य आधारित शिक्षा ही उद्देश्य पूर्ण शिक्षा की श्रेणी में आती है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक स्पष्ट सोच होना नितान्त आवश्यक है यदि साथ ही मार्गदर्शन और प्रेरणा मिल जाए तो लक्ष्य पाना आसान हो जाता है।

वर्तमान में विद्यार्थी स्कूल शिक्षा प्राप्त करने के बाद स्वयं को ऐसे चौराहे पर खड़ा पाता है जहाँ हर रास्ता उसे आगे बढ़ने के लिए आकर्षित करता है लेकिन इन रास्तों का अंतिम पड़ाव क्या होगा यह स्पष्ट नहीं होता है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी भँवर जाल में फंसा हुआ महसूस करता है। इस मनोस्थिति में यदि प्रार्वद अनुसार कोई मार्गदर्शन मिल जाता है तो उसकी सफलता का मार्ग प्रशस्त हो सकता है अन्यथा बिना लक्ष्य निर्धारण के लक्ष्य से भ्रमित होकर दिशाहीन भी हो सकता है। ऐसी स्थिति में योजना गत लक्ष्य निर्धारण कर शिक्षा ग्रहण करना तथा समय-समय पर यथोचित मार्गदर्शन की नितान्त आवश्यकता होती है। कक्षा 12 तक शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत भी विद्यार्थी परिपक्व नहीं होते, यहाँ उन्हें परामर्शदाता की आवश्यकता होती है। परामर्शदाता उस माली के समान है जो पौधों के लिए मिट्टी तैयार करता है और पौधें उसमें स्वयं विकसित होते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मूल्य परक एवं रोजगार उन्मुख शिक्षा की वकालात की है। इन्ही आशय को लेकर भरतपुर के **सम्भागीय आयुक्त श्रीमान पी.सी. बेरवाल आई.ए.एस.** द्वारा विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को कक्षा-10 व कक्षा-12 उत्तीर्ण करने के पश्चात आगामी कक्षाओं में कब, क्यों और कैसे अपनी भावी पढ़ाई का चयन करें साथ ही उन सभी तकनीकी एवं गैर तकनीकी शिक्षा के क्षेत्रों की जानकारी हासिल हो सके, इसके लिए एक अनूठी पहल की है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को ब्लॉक स्तर पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन करवाकर विद्यार्थियों को स्कूल शिक्षा पूर्णता पश्चात आगामी पढ़ाई के लिए दिशा तय करने का उद्देश्य रखा गया है।

सर्वप्रथम भरतपुर जिले के ब्लॉक सेवर से राजकीय विद्यालियों में अध्ययन करने वाले प्रतिभावान विद्यार्थियों का चयन कर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में चयनित विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को आमंत्रित करते हुए विषय विशेषज्ञों द्वारा आगामी शिक्षा के क्षेत्रों, पाठ्यक्रम, कोर्स, कोर्स की अवधि तथा प्रवेश प्रक्रिया से लेकर कोर्स समाप्ति तक सभी पहलुओं पर क्षमता संवर्धन का प्रयास किया गया। विद्यार्थियों की क्षमता संवर्धन हेतु कार्यशाला में उपस्थित सम्भागियों से पूर्व परख एवं पश्च परख के माध्यम से कार्यशाला की उपलब्धि का भी आकलन किया गया।

कार्यशाला में विभिन्न सत्र तथा Power Point Presentation के माध्यम से राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में संचालित विभिन्न कोर्स के बारे में विस्तार से समझाया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य न केवल विद्यार्थियों अपितु उनके अभिभावकों को भी आगामी रोजगार परक शिक्षा के क्षेत्रों की जानकारी उपलब्ध करवाना रहा ताकि वर्तमान युग में देश का प्रत्येक नागरिक अपने स्वतंत्र भाव से आगामी शिक्षा ग्रहण करने का स्वयं निर्णय ले सके।

इस अनूठी पहल के अन्तर्गत राज्य एवं राष्ट्र की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं द्वारा संचालित कोर्स, प्रवेश प्रक्रिया, प्रवेश आयु के साथ-साथ सम्पूर्ण कोर्स हेतु निर्धारित फीस तथा सरकार द्वारा विभिन्न लाभकारी योजनाओं से भी अवगत करवाया जिससे अभिभावकों को अपने बच्चों की पढ़ाई पर होने वाले आर्थिक व्यय में मदद मिल सके। कार्यशाला में श्रीमान संभागीय आयुक्त ने स्वयं अपने जीवन के संस्मरण व अनुभवों से विद्यार्थियों को संबलन प्रदान किया तथा भावी जीवन को किस प्रकार सफल बनाते हुए न केवल स्वयं का अपितु अपने परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति में सहभागी बनने का मार्ग प्रशस्त किया। कार्यशाला में कॅरियर वार्ताकार द्वारा अलग-अलग विषयों पर कॅरियर गाइडेंस संबंधित वार्ता द्वारा उपस्थित संभागियों का मार्गदर्शन प्रदान एवं क्षमता संवर्धन किया। इस हेतु आगामी शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन की सम्भावनाए तथा चुनौतियों पर भी विशेष बल दिया गया।

कार्यशाला के आयोजन हेतु शिक्षा विभाग तथा राजकीय संस्थाओं के संस्थाप्रधानों के सामुहिक प्रयासों से विगत वर्षों के बोर्ड परीक्षा परिणाम के आधार पर ब्लॉक की प्रत्येक पंचायत के कक्षा-10 व कक्षा-12 में उत्तीर्ण विद्यार्थियों का चयन कर 80 से 100 बच्चों को तथा उनके अभिभावकों को आमंत्रित किया। इस एक दिवसीय कार्यशाला में Open Session के माध्यम से संभागियों को स्वयं के विचार प्रस्तुत करने का भी अवसर प्रदान किया साथ ही बच्चों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का विषय विशेषज्ञों द्वारा हल करने का प्रयास किया गया। इस प्रकार की कार्यशाला का आयोजन जिले के अन्य ब्लॉक स्तर पर चरणबद्ध तरीके से आयोजन करने की योजना है, जिसे विस्तार करते हुए अन्य जिलों में भी आयोजित करने की पहल का लक्ष्य रखा गया है। जिससे अधिक से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो सकेंगे।

विभाग द्वारा विद्यार्थियों के लिए संचालित राजीव गाँधी कॅरियर पोर्टल के रजिस्ट्रेशन से लेकर पोर्टल को सुचारू रूप से संचालन की प्रक्रिया के बारे में बताया जैसे-उच्च अध्ययन के लिए संचालित संस्थानों की

जानकारी, पुस्तकालयों के बारे में विभिन्न लेखकों की पुस्तकों के अध्ययन आदि के बारे में।

केन्द्र व राज्य सरकार के द्वारा अधिकृत रोजगार भर्ती आयोग एवं संस्थाएं जो प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन कराती है, उन संस्थाओं के बारे में जानकारी देने के साथ विभिन्न पदों के लिए प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी किस प्रकार की जाए एवं तैयारी की सहायता के लिए किन-किन कोचिंग संस्थानों में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए प्रवेश लिया जा सके, उन संस्थानों का संचालन कहाँ-कहाँ हो रहा है। उनकी संबंधित प्रतियोगिता परीक्षा तैयारी के लिए क्या फीस संभावित होगी एवं अन्य खर्चों की जानकारी दी जिससे कि विद्यार्थियों व अभिभावकों को निर्णय लेने में सहायक हो। विद्यार्थियों को सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग करने के बारे में भी बताया कि मोबाइल व इंटरनेट के माध्यम से Online Study Classes join की जा सकती, जिससे संबंधित विषय के बारे में घर बैठे जानकारी प्राप्त की जा सकती है साथ ही Offline अध्ययन सामग्री के बारे में भी जानकारी दी गई।

उक्त के साथ-साथ विद्यार्थियों द्वारा व्यावहारिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों/चुनौतियों के बारे में प्रश्न पूछे इनके समाधान के लिए श्रीमान आयुक्त महोदय, श्रीमान संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा तथा आमंत्रित विषय विशेषज्ञों द्वारा अपने अनुभवों को समाहित करते हुए विस्तार से बताया।

विद्यार्थियों को समय पर कॅरियर गाइडेंस नहीं मिल पाता है तो विद्यार्थी लक्ष्य से भ्रमित होकर यह सोचने लगता है कि कक्षा-10 व कक्षा-12 उत्तीर्ण करने के बाद क्या करें, कैसे करें व कहाँ जाए आदि प्रश्नों में उलझ जाते हैं लेकिन इन कार्यशाला के आयोजन से विद्यार्थी एवं अभिभावक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने/करवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी जिससे विद्यार्थी अपने लक्ष्य प्राप्त करने स्वयं के जीवन, समाज व राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगे।

ऊर्जावान एवं सतत अध्ययनशील वरिष्ठ आई.ए.एस. आयुक्त महोदय द्वारा विद्यार्थियों से सीधा संवाद किया जिसमें सभी विद्यार्थियों को बताया कि किस प्रकार कार्य योजना बनाकर अध्ययन किया जाए और आने वाली कठिनाइयों/चुनौतियों के बारे में बताते हुए उनके निवारण का उचित समाधान भी उनके द्वारा सुझाया गया कार्यशाला में विद्यार्थियों से पंजीयन प्रपत्र भी भरवाए गए, जिसमें भविष्य की योजना, कठिनाइयों/ चुनौतियों के बारे में पूछा गया, जिनका निस्तारण उसी समय आयुक्त महोदय द्वारा निस्तारण किया गया।

श्रीमान की इस अनूठी पहल से विद्यार्थियों को नई दिशा, नए जोश एवं उत्साह की ओर अग्रसर होंगे। इसी आशा और विश्वास के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

सहायक निदेशक, कार्यालय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा सम्भाग, भरतपुर
मो. 8003441330

राजस्थानराज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर
प्रभाग-4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग, राजस्थान, अजमेर

Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya
(March 2022)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

S.No.	Class	Course Link	QR Code	S.No.	Class	Course Link	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/3hizvUF		2.	Class VII	https://bit.ly/3t4Twn2	
3.	Class II	https://bit.ly/3JW1JB0		4.	Class VIII	https://bit.ly/3M06vPx	
5.	Class III	https://bit.ly/352nq3w		6.	Class IX	https://bit.ly/3t34rhb	
7.	Class IV	https://bit.ly/36Jv17D		8.	Class X	https://bit.ly/350fDTP	
9.	Class V	https://bit.ly/3JUs7eg		10.	Class XI	https://bit.ly/3hfaxp9	
11.	Class VI	https://bit.ly/3llb0SC		12.	Class XII	https://bit.ly/3tq7pfZ	

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

विद्यालयी शिक्षा में मूल्य शिक्षा की महत्ता

❒ डॉ. महेश चन्द्र शर्मा

किसी भी समाज और राष्ट्र की मानव शक्ति ही उसके विकास की मुख्य धरोहर है। मानव सभ्यता के विकास की इस कहानी में 'शिक्षा एक ऐसा पारस पत्थर है, जिसके स्पर्श से ही व्यक्ति सोने की तरह चमकने लगता है। शिक्षा ही वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनुकूलता प्राप्त कर सकता है।'

समाज और राष्ट्र के विकास के लिए मानव शक्ति का सभ्य, बुद्धिमान, शारीरिक, मानसिक और नैतिक रूप से सुदृढ़, अनुशासित, जिज्ञासु और क्रियाशील होना आवश्यक है।

शिक्षा एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा मानव शक्ति में समस्त वांछित गुणों को प्रस्फुटित और विकसित किया जा सकता है।

सच्ची शिक्षा ही व्यक्ति में आदर्शों और जीवन मूल्यों की स्थापना कर विकास कर सकती है। आज के इस प्रगतिशील भौतिकवादी युग में शिक्षा ही व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए समृद्धशाली बनाती है, उसे सामाजिक, सांस्कृतिक और अन्य दायित्व निर्वहन के लिए तैयार भी करती है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्ति और कौशल सम्पन्न बनाना ही नही है अपितु इसका उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व को संवारना, जीवन को एक सही दिशा प्रदान करना और उसके श्रेष्ठतम अंश का अन्य व्यक्तियों से सम्पर्क कराना है। शिक्षा व्यक्ति के मस्तिष्क को प्रशिक्षित कर उसको अच्छे तथा बुरे में अन्तर करने योग्य बनाती है। उसे अनैतिक आचरण से दूर करती है तथा मनुष्य में अनुशासन और निष्ठा के द्वारा चरित्र निर्माण का पथ प्रदर्शित करती है। कहा गया है कि-विद्या से विनय, विवेक और विश्वास उत्पन्न होता है, जिससे जीवन में विजय और यश की प्राप्ति होती है।

शिक्षा की इन विशेषताओं से प्रेरित होकर ही सम्पूर्ण विश्व में सभी देशों में शिक्षा के विकास सम्बन्धी कार्यक्रमों के द्वारा शत-प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य प्राप्त करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

इसी कड़ी में भारत सरकार द्वारा छः वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु के सभी बालक-बालिकाओं के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागू किया गया है।

इस अधिनियम के लागू होने से हमारे देश के सभी बच्चों को शिक्षा का अधिकार तो मिल गया किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में समाज में फैल रहा सांस्कृतिक प्रदूषण और संस्कारों को रुढ़ियाँ समझने की प्रवृत्ति ही विद्यार्थियों को 'जीवन मूल्यों' से भटका रही है।

'मूल्य शिक्षा' का अभिप्रायः उन सभी प्रक्रियाओं से है जो किसी भी व्यक्ति में ऐसे सकारात्मक गुणों, अभिरुचियों तथा विशेषताओं का विकास करते हैं, जिनसे कि उसमें समाज में सही ढंग से स्थापित होने की क्षमताएँ विकसित हो जाती है।

आज के इस बढ़ते सूचना एवं संचार क्रांति के युग में 'गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर' के ये विचार अत्यंत प्रासंगिक है कि 'हम बच्चों के मस्तिष्क में सूचनाएँ उड़ेल रहे हैं और जीवन मूल्यों, अनुभवों तथा अध्यात्म की अवहेलना कर रहे हैं।' किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व और व्यवहार के लिए पाँच मूलभूत जीवन मूल्य बताए गए हैं- 1. सत्य, 2. अहिंसा, 3. प्रेम, 4. शांति, 5. धर्म अथवा सही कार्य।

अनेक विद्वानों ने इनको सार्वभौमिक या विश्व व्यापी मूल्य कहा है- बुड्स ने लिखा है कि-'मूल्य मानव व्यवहार के घटक और निर्धारक तत्व है। ये आदर्श और ध्येय दोनों का कार्य करते हैं।' कैटल के शब्दों में 'मूल्यों से हमारा अर्थ होता है- सामाजिक, कलात्मक, नैतिक और अन्य मानक जिसके अनुसार एक व्यक्ति स्वयं चलना चाहेगा और दूसरों को भी चलाना होगा।'

जॉन के अनुसार 'मूल्य आदर्श विश्वास या मानक है जिन्हें सम्पूर्ण समाज या समाज का एक बड़ा हिस्सा धारण किए हुए हैं।'

'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज' के अनुसार मूल्य का अभिप्रायः रुचियों, आनन्द, पसन्द, उत्तरदायित्व एवं अनेक सामाजिक झुकाव के तरीकों से है।

आज के इस बदलते परिवेश में विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के लिए इन मूल्यों की जितनी आवश्यकता है उतनी शायद ही पहले कभी अनुभव की गई। आज विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों के घटने का मूल कारण इन मूल्यों को विकसित करने के मूल स्रोतों का ही प्रदूषित हो जाना है।

जब समाज और राष्ट्र की बागडोर इस भावी पीढ़ी को सौंपा जाना सुनिश्चित है तो इस पीढ़ी में घटते जीवन मूल्यों के पहलुओं पर चिंतन किया जाना भी आवश्यक है। विद्यार्थियों में इन जीवन मूल्यों के विकास में परिवार और समाज के साथ ही विद्यालय की भी भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। परिवार, समाज और विद्यालय तीनों स्थानों के वातावरण में समरसता होने पर ही विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

कहा जाता है कि 'मूल्यों को पढ़ाया नहीं जाता है, वे तो विद्यार्थियों द्वारा स्वतः ही पकड़ लिए जाते हैं।' अर्थात यदि विद्यार्थियों के सामने परिवार, समाज और विद्यालय में उत्तम जीवन मूल्यों की मिशाल होगी तो वे स्वतः ही उन मूल्यों को ग्रहण कर लेंगे।

प्रोफेसर किरीट जोशी ने अपने लेख 'An Out line programme of Value Oriented Education' में लिखा है कि 'मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने का रहस्य यह है कि शिक्षक स्वयं अपने चरित्र के उदाहरण और ज्ञान पर अपनी अधिकार कुशलता से विद्यार्थियों को प्रभावित करें।'

संत विनोबा भावे के अनुसार 'एक सच्चा शिक्षक शिक्षा देता नही है, उसके पास स्वयं शिक्षा प्राप्त हो जाती है। सूर्य प्रकाश देता नहीं है किन्तु स्वाभाविक रूप से सभी को मिल जाता है।

यदि विद्यालयों में सामूहिक रूप से निम्नलिखित प्रयास हो तो विद्यार्थियों में आवश्यक जीवन मूल्य विकसित किए जा सकते हैं-

1. शिक्षक द्वारा मानवीय गुणों को विकसित करने के लिए विद्यार्थियों को केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करने की अपेक्षा मूल्य आधारित एवं दिशाहीन चिंतन से मुक्त शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

Rajasthan Education Department

2. विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों का विकास करने के लिए शिक्षक का व्यवहार और आचरण भी उसी अनुरूप होना आवश्यक है।
3. विद्यार्थियों में अनुशासन, नियम पालन, कर्त्तव्य बोध, धैर्य, संयम, आज्ञापालन, ईमानदारी जैसे गुणों के विकास के लिए विद्यालय में आयोजित होने वाली सहपाठ्येत्तर गतिविधियाँ जैसे प्रार्थना सभा कार्यक्रम, खेलकूद, उत्सव एवं जयंतियाँ, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ, बाल सभा आदि कार्यक्रम अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
4. विद्यार्थियों में पूर्व विकसित गलत दृष्टिकोण के बदलाव हेतु अच्छे संस्कार, शिष्टाचार, धन कमाने के लिए साधन और साध्य की पवित्रता एवं अच्छी आदतों और विचारों के विकास हेतु प्रेरक प्रसंग और वीर गाथाएँ सुनानी चाहिए।
5. विद्यार्थियों को अनेक अच्छे आचरण एवं व्यवहार के लिए उन्हें पुरस्कृत किया जाना आवश्यक है। विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान करने से मिलने वाले प्रोत्साहन से जीवन मूल्य आसानी से ग्रहण किए जा सकते हैं।
6. शिक्षक के साथ ही परिवार और समाज भी विद्यार्थियों में इन मूल्यों को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान रखते हैं अतः विद्यालयों को इनका पूरा सहयोग लेना आवश्यक है।

इस प्रकार भावी पीढ़ी में जीवन मूल्यों के निर्माण एवं सेवा तथा समर्पण की भावना के विकास हेतु 'मूल्य शिक्षा' का विशेष महत्त्व है।

'मूल्य शिक्षा' विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को दिशाहीन चिंतन से बचाकर चिंता मुक्त करने का माध्यम है।

अतः विद्यार्थियों को सामाजिक और राष्ट्रीय गतिविधियों के साथ समाज की मुख्य धारा में अग्रसर करने के लिए विद्यालयों को इसमें प्रभावी बनाना अत्यंत आवश्यक है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सेखाला
बावड़ी, जोधपुर (राज.)
मो: 9414918748

बहुभाषिकता और हमारी कक्षाएँ

❐ विजय प्रकाश जैन

भारतीय कक्षाओं में पढ़कर ना समझने के मुख्य कारकों में हमारी कक्षा में बहुभाषिकता को भी माना जाता है। बच्चे की घर की भाषा और स्कूल की भाषा में असमानता होने के कारण बड़ी संख्या में बच्चे पढ़कर समझ नहीं पाते और इसी कारण लंबे समय तक वे पढ़ने-लिखने की समस्या से जूझते रहते हैं। आखिर बहुभाषिकता क्या है? इसे हम समझने का प्रयास करेंगे।

किसी व्यक्ति अथवा समुदाय के द्वारा अपने दैनिक जीवन में आवश्यकतानुसार दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग करना बहुभाषिकता है। यह बहुभाषिकता पढ़ने लिखने सुनकर समझने, बोलने या भाषा के किसी भी कौशल में हो सकती है। बहुभाषी लोग अलग-अलग परिस्थिति में आपसी बातचीत में अपने शब्द भंडार का प्रयोग करते हैं। अधिकांश लोग एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान रखते हैं लेकिन उनमें समान रूप से दक्षता नहीं रखते हैं।

यदि हम हमारे देश की भाषाई विविधता की बात करें तो 2001 की भारत की राष्ट्रीय जनगणना के अनुसार-

- भारत में 1652 मातृभाषाएँ दर्ज की गई हैं। जिन्हें 122 भाषासमूहों में समूहबद्ध किया गया है।
- शेष के एक तिहाई से ज्यादा जिलों में एक से ज्यादा भाषाएँ बोली जाती हैं। इन जिलों की 20 प्रतिशत से ज्यादा आबादी मुख्य भाषा नहीं बोलती है। यानि हमारा भाषाई परिदृश्य बहुत पेचीदा है।
- जनगणना में दर्ज 122 भाषाओं में से केवल 26 भाषाएँ ही शिक्षा का माध्यम है।

उपर्युक्त स्थिति को देखने से समझ आता है कि हमारा देश एक बहुभाषी देश है। जिसके कारण हमारे यहाँ विविधता पूर्ण भाषाई परिदृश्य दिखाई देता है।

बहुभाषिकता हमारे भारतीय समाज की जीवनशैली का हिस्सा है यहाँ अधिकांश लोग दो या अधिक भाषाएँ बोलते हैं। जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में लोग अलग-अलग

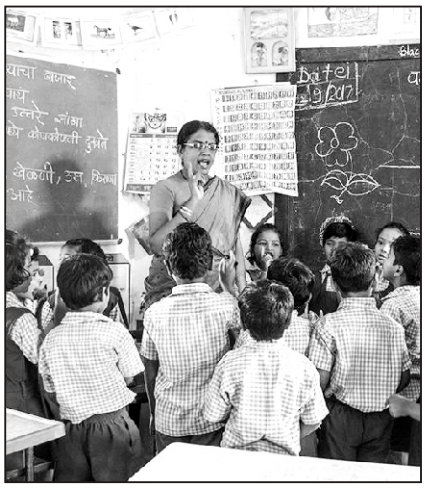

भाषाओं का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए औपचारिक कार्यालयी सम्प्रेषण में, बाजार में, घर में, बुजुर्गो के साथ और अन्य अवसरों पर लोग अलग-अलग भाषाओं या बोलियों का प्रयोग करते हुए देखे जा सकते हैं। हमारे यहाँ प्रयुक्त की जाने वाली भाषाओं की हैसियत में भारी फैसला दिखाई देता है। जहाँ एक तरफ अंग्रेजी, हिन्दी या कई प्रांतीय भाषाओं को बेहद सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है दूसरी तरफ बहुत सारी भाषाओं को हेय दृष्टि से भी देखा जाता है। इनमें से कई भाषाएं तो ऐसी हैं जिन्हें लाखों लोग बोलते हैं, जैसे- सदरी, निमाड़ी, मेवाड़ी, बागड़ी आदि। इन भाषाओं को ऊँची हैसियत प्राप्त करने और औपचारिक क्षेत्र में उनका लगभग कोई प्रयोग नहीं होता है। इसलिए भारतीय बहुभाषिता को अक्सर असमानों की बहुभाषिता भी कहा जाता है।

शिक्षा के माध्यम के रूप में भाषाएँ-

हमारे यहाँ जनगणना में दर्ज 122 भाषाओं में से केवल 26 भाषाएँ ही ऐसी हैं जिन्हें प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा के माध्यम के रूप में काम में लिया जाता है। भारत के तीन राज्यों जम्मू-कश्मीर, नागालैंड और अरूणाचल प्रदेश के सभी सरकारी स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। शहरों और छोटे कस्बों में बहुत सारे निजी स्कूल प्री-प्राइमरी या कक्षा एक से ही अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाना शुरू कर देते हैं।

भाषाविद् अक्सर यह तर्क देते हैं कि

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

लगभग सभी बच्चे द्विभाषी या बहुभाषी होते हैं। पाँच साल के बच्चों के मामलों में यह बात हमेशा सही लगती है। 5-6 साल के बच्चों में एक तरफ ऐसे बच्चे हैं जो सुदूर आदिवासी इलाकों में रहते हैं जहाँ दूसरी भाषाओं की पैठ बिल्कुल नहीं होती है। संभव है ऐसे बच्चे स्कूल के दाखिले के समय केवल अपनी मातृभाषा ही बोलते हों। इसी शृंखला में दूसरे छोर पर ऐसे बच्चे भी हैं जो किसी शहरी इलाकों में रहते हैं जिन्हें एक साथ कई भाषाओं के अनुभव प्राप्त होते है इसके फलस्वरूप दो या अधिक भाषाओं की कुछ समझ और संप्रेषण क्षमता हासिल कर लेते हैं। ऐसे बच्चों के पास अपनी भाषा की समझ तो होती है लेकिन स्कूल में दाखिले के समय स्कूली भाषा की उनकी समझ प्राय: अच्छी नहीं होती।

यदि हम हमारी कक्षाओं में देखें तो वहाँ भी बहुभाषाई परिस्थितियाँ देखने को मिल सकती हैं। हमारे यहाँ आमतौर पर बच्चों को ऐसी भाषा में शिक्षा दी जाती है जिससे बच्चे स्कूली शिक्षा में प्रवेश लेते समय अच्छी तरह से परिचित नहीं होते हैं। बच्चों की घर की भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में शामिल नहीं हो पाती है जिससे बच्चों के लिए चुनौतियाँ और बढ़ जाती हैं। प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की भाषाई पृष्ठभूमि को समझकर उसे शामिल कर पाने में हमारी शिक्षा व्यवस्था असफल रही है।

कुछ भाषाई सर्वेक्षण और शिक्षाविदों से बातचीत के आधार पर यह बात सामने आती है कि प्राथमिक स्कूलों में जाने वाले लगभग 25 प्रतिशत बच्चे अपनी भाषाई पृष्ठभूमि के कारण मध्यम से गंभीर अधिगम अभाव की स्थिति से गुजरते हैं। बच्चों के पास सबसे कठिन स्थिति वह होती है जब उनके पास स्कूली भाषा की समझ बहुत सीमित होती है या बिल्कुल नहीं होती है और अध्यापक भी बच्चों की भाषा को नहीं समझते।

बच्चों की भाषा के संदर्भ में तीन तरह की स्थितियाँ होती हैं-

1. पहली स्थिति में, सुदूर आदिवासी इलाकों में प्रारंभिक स्कूलों की कक्षाएँ हैं जहाँ सभी बच्चे एक ही स्थानीय भाषा सीखते हैं। सामान्य तौर पर, इस स्थिति में बच्चे की प्रथम भाषा स्कूल की भाषा से बहुत अलग होती है।
2. दूसरी स्थिति में, वे इलाके हैं जहाँ एक ही स्थानीय भाषा बोलते हैं जो स्कूल की भाषा से मिलती जुलती है।
3. तीसरी स्थिति में इलाके में दो या उससे अधिक भाषाएँ बोली जाती है। इसलिए कक्षा में दो या उससे अधिक बच्चे ऐसे हो सकते हैं जो घर की भाषा बोलते हैं। इन भाषाओं में से कुछ स्कूल की भाषा से मिलती-जुलती हो सकती है और कुछ बहुत अलग।

अध्यापकों का बच्चों की प्रथम भाषा या भाषाओं पर नजरिया अलग-अलग प्रकार का होता है। कुछ अध्यापक मानते हैं कि बच्चों की घरेलू बोल-चाल की भाषा का इस्तेमाल स्कूल में पढ़ने-लिखने में नहीं किया जा सकता क्यों कि इसके लिए एक मानक भाषा की आवश्यकता होती है। जबकि कुछ अध्यापक बच्चों की घर की भाषा को कक्षा में स्थान देते हैं और कोई कठिन बात समझाने के लिए बच्चों की घर की भाषा का इस्तेमाल करते हैं।

अध्यापकों और बच्चों को घर की भाषा का ज्ञान भी अलग-अलग स्तर का हो सकता है। बच्चों की घर की भाषाओं में अध्यापक की दक्षता स्कूल में सीखने-सिखाने में अहम भूमिका निभाती है। जहाँ बच्चों और अध्यापक की घर की भाषा एक ही होती है वहाँ बच्चों की भाषा की समझ अच्छी होती है। कुछ परिस्थितियों में अध्यापक बच्चों की भाषा में थोड़ा-बहुत बोल समझ लेते हैं और एक हद तक की दक्षता रखते हैं। कुछ परिस्थितियों में ऐसा भी होता है कि अध्यापक बच्चों की भाषा से अपरिचित होते हैं।

अभिभावक भी यह अपेक्षा रखते हैं कि बच्चे जल्द से जल्द स्कूल की भाषा और अंग्रेजी सीख जाए वे स्कूल की भाषा सीखने को सामाजिक और आर्थिक उन्नति से जोड़ते हैं। वे घर की भाषा के प्रति लगाव रखते हैं लेकिन उसे पढ़ाई-लिखाई में इस्तेमाल करने के समर्थक नहीं होते हैं। कक्षाओं में भाषा की इस विविधिता और इसका सीखने पर पड़ने वाले प्रभावों के कारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस पर समुचित ध्यान दिया गया है। इस नीति में फाउंडेशनल स्टेज यानि 3 वर्ष की आयु से कक्षा 8 तक और संभव हो तो आगे तक भी सार्वजनिक और निजी दोनों तरह के स्कूलों को शिक्षा का माध्यम, घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा रखने पर जोर दिया है। साथ ही उद्धृत किया है कि-

''यह सुनिश्चित करने के सभी प्रयास किए जाएंगे कि बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शिक्षण के माध्यम के बीच कोई अंतराल मौजूद हो तो उसे समाप्त किया जाए। एसे मामलों में जहाँ घर की भाषा की पाठ्य सामग्री उपलब्ध नहीं है, शिक्षकों और छात्रों के बीच संवाद की भाषा भी जहाँ संभव हो, घर की भाषा बनी रहेगी। शिक्षकों को उन छात्रों के साथ जिनके घर की भाषा/मातृभाषा शिक्षा के माध्यम से भिन्न है, द्विभाषी शिक्षण-अधिगम सामग्री सहित द्विभाषी एप्रोच का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। सभी भाषाओं को सभी छात्रों को उच्चतर गुणवत्ता के साथ पढ़ाया जाएगा, एक भाषा को अच्छी तरह से सिखाने के लिए इसे शिक्षा का माध्यम होने की आवश्यकता नहीं है।

उम्मीद है 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' की इस पहल से बच्चों की भाषाई समस्या और उसके कारण सीखने पर पड़ने वाले प्रभावों को कम किया जा सकेगा।

प्रबोधक,
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मेंदिया डिडोर,
बाँसवाड़ा (राज.)

आवश्यक सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अत: अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**
- **रचनाकार अपनी रचना के संदर्भ में इस आशय का अवश्य प्रमाण पत्र रचना के साथ प्रेषित करेगा कि उसकी रचना मौलिक, स्वरचित एवं अप्रकाशित है। उक्त प्रमाण पत्र के अभाव में रचना के प्रकाशन पर विचार नहीं किया जाएगा। -वरिष्ठ संपादक**

Rajasthan Education Department

परीक्षा में उत्तर पुस्तिका का प्रस्तुतीकरण

❒ अरविन्द शर्मा

हमारा मन सदैव त्योहार एवं उत्सवों का इंतजार करता है। हम इनको मनाने की तैयारी करते है और रूपरेखा भी बनाते है। इसी प्रकार नया शैक्षिक सत्र आरंभ होने के साथ ही शिक्षक एवं विद्यार्थी परीक्षा के बारे में सोचते हैं। ऐसा विश्वास है कि उत्सव के दिनों में की गई साधना,इबादत तुलनात्मक रूप से अधिक प्रभावी एवं फलदायी होती हैं। इसी प्रकार परीक्षा काल में किया गया अध्ययन-अध्यापन भी अधिक सार्थक होता है।

परीक्षा क्या है? यह क्यों आवश्यक है? मेरा मानना है कि एक विद्यार्थी निर्धारित मापदंडो पर खरा है या नहीं यह जानने के लिए परीक्षा ली जाती है। एक शिक्षक कक्षा में सभी विद्यार्थियों को समान रूप से एक जैसा अध्यापन कार्य करवाता है। लेकिन हर विद्यार्थी की योग्यता, क्षमता एवं रुचि अलग-अलग होती है, उनको किसी पाठ्यवस्तु को समझने एवं ग्रहण करने की तरीका भी अलग-अलग होता है इसलिए उनके मूल्यांकन करने की आवश्यकता होती है, ताकि यह निर्णित किया जा सके कि विद्यार्थी आगामी कक्षाओं की शिक्षा प्राप्त करने के लिए परिपक्व हुआ है या नहीं।

प्रतिदिन हम जीवन में अघोषित रूप से अनेक परीक्षाओं का सामना करते हैं। इन परीक्षाओं का न तो कोई पाठ्यक्रम होता है और न ही कोई तिथि निर्धारित होती हैं। लेकिन जब औपचारिक शिक्षा में परीक्षा की तिथि निर्धारित हो जाती है तो परीक्षार्थी को यह बोझिल लगता है और वे तनावग्रस्त हो जाते हैं। यदि इसे मन से स्वीकार कर आत्मविश्वास एवं सूझबूझ से सत्र पर्यन्त की गई तैयारी की पुनरावृति की जाए तो श्रेष्ठ परिणाम आ सकते हैं। परीक्षा काल में अभिभावक एवं शिक्षकों की भूमिका एवं दायित्व अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। एक विद्यार्थी अपने जीवन का अधिकांश समय घर पर अपने परिवार के साथ व्यतीत करता है। पारिवारिक सदस्य विशेष रूप से अभिभावकों को अपनी जिम्मेदारी गंभीरता से निभाने की आवश्यकता हैं। बच्चों को समय प्रबंधन की सीख उनकी आदतों में डालनी होगी।

जितिन चावला, कॅरियर कांउसलर के अनुसार अभिभावक बच्चों को रिलेक्स महसूस करवाएं उनके साथ बातचीत करें तथा उन्हें बताएं कि परीक्षाओं से जीवन निर्धारित नही होता है।परीक्षा में उनके बेहतर प्रदर्शन के लिए दबाव न डालें इससे बच्चें तनावग्रस्त हो जाते है। परीक्षाकाल में फाइव लर्निंग मेथड से बच्चों को परीक्षा की तैयारी करवानी चाहिए। इसे निम्नानुसार समझा जा सकता है-

- टाइम मैनेजमेन्ट : समय कर महत्त्व समझाते हुए इसके सदुपयोग पर ध्यान देना चाहिए।
- मजबूत मैमोरी (कार्ड्स साइज) बनाकर स्टडी टेबल के आसपास लगाए।
- रिटेंशनं बढ़ाए: चैप्टर रिडिंग से पहले सब टॉपिक्स देखें। इससे हिंट मिलना आसान होगा।
- सेल्फ मॉटिवेशन: स्वयं को पढ़ाई के प्रति मॉटिवेट करें। बहानेबाजी के प्रति जवाबदेही रखें।
- ऑटो सजेशन: थोड़ी देर बैठकर पढ़ने का समय सेट करे एवं इस पर काम करे। डिस्ट्रेक्शन ना हो।

यद्यपि अध्यापक कक्षा में सत्र पर्यन्त अध्यापन कार्य करवाते हैं, गृहकार्य देते है, उसकी जाँच भी करते हैं। कक्षा जाँच, अर्द्ध वार्षिक परीक्षाओं के उपरान्त विद्यार्थियों की उपलब्धि के आधार पर उनका मार्गदर्शन कर काठिन्य निवारण भी करते हैं। फिर भी विद्यार्थियों के मन में परीक्षा की चिंता स्वाभाविक है। यदि विद्यार्थी प्रसन्न मन से परीक्षा के बारे में विचार करेंगे तो महसूस होगा कि थोड़े से प्रयास एवं सावधानी से अच्छे अंक प्राप्त किए जा सकते है। वर्ष भर में मेहनत, लगन और एकाग्रता से जो भी हासिल किया है उसे परीक्षा कक्ष में उत्तर पुस्तिकाओं पर लिखने का समय आ गया है। एक परीक्षक के पास विद्यार्थी की कोई जानकारी नहीं होती है। तीन घंटे में उत्तर पुस्तिका पर हल किए गए प्रश्न पत्र के आधार पर ही परीक्षार्थी का मूल्यांकन किया जाता है। वर्ष भर की मेहनत को सार्थक कर अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए वार्षिक एवं बोर्ड परीक्षाओं में प्रश्न पत्र हल करते समय अग्रांकित सावधानियाँ विद्यार्थियों को ध्यान में रखनी जरूरी है:-

1. प्रवेश पत्र को देखकर उत्तर पुस्तिका पर सही एवं स्पष्ट रोल नम्बर दिनांक, विषय आदि वांछित जानकारी अंकित करें।
2. यदि भाषा विषय का प्रश्न पत्र है तो उत्तर पुस्तिका पर माध्यम अंकित नहीं करना है।
3. प्रश्न पत्र मिलते ही एकाग्रता के साथ प्रश्न पत्र को पढ़ें। यह ध्यान देना जरूरी है कि उसके किस भाग में क्या जानकारी पूछी गयी है। प्रश्न के विभिन्न भाग को एक दूसरे से समन्वित करके समझें।
4. प्रश्न को समझने के लिए यह देखना जरूरी है कि प्रश्न की समाप्ति में किन शब्दों का प्रयोग किया है इन शब्दों से यह आभास होता है कि परीक्षार्थी। को किस प्रकार का प्रश्न उत्तर देना है। यदि प्रश्न के अंत में प्रकाश डालिए/व्याख्या कीजिए/स्पष्ट कीजिए जैसे शब्द आते है तो यहाँ परीक्षार्थी से यही उम्मीद की जाती है कि प्रश्न से संबधित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ सरल भाषा में समझाते हुए लिखनी है।
5. जिन प्रश्नों का उत्तर भली-भाँति आता है। उन्हें स्वत: ही जल्दी लिखा जाता है इसलिए उन्हें हल करने में ज्यादा समय नहीं लगता। लेकिन जिन प्रश्नों का उत्तर अच्छी तरह से नहीं आता उन्हें सोच-समझकर धीरे लिखा जाना चाहिए। इसलिए समय प्रबंधन तदनुसार करें
6. यह ध्यान देना भी आवश्यक है कि प्रश्न के कितने भाग है और परस्पर किस प्रकार सबंधित है।
7. परीक्षार्थी को प्रश्न पढ़ने के साथ-साथ मानसिक रूप से इस बात के लिए भी तैयार

Rajasthan Education Department

होना आवश्यक है कि प्रश्न का उत्तर कैसे लिखना है पढ़ने के साथ ही उत्तर के मुख्य बिंदुओं का प्रत्यास्मरण करना चाहिए।

8. जिन प्रश्नों में शब्द सीमा दी गई है उसका भी ध्यान रखना जरूरी है। हालांकि परीक्षक उत्तर में लिखे शब्दों की गिनती नहीं करता लेकिन उसे तर्जुबे के आधार पर शब्द संख्या का आभास हो जाता है। शब्द सीमा में 10-15 प्रतिशत की कमी-वृद्धि होना सामान्य बात है लेकिन इससे अधिक अतिक्रमण ही माना जाएगा।
9. प्रश्न की प्रकृति के अनुरूप आवश्यकता अनुसार रेखाचित्र/चित्र बनाना चाहिए। चित्र स्पष्ट एवं नामांकित होना चाहिए।
10. लिखे गए उत्तर में महत्त्वपूर्ण शब्दों एवं वाक्यों को आवश्यकता अनुसार रेखांकित करें। इसके लिए परीक्षार्थी नीले एवं काले रंग की स्याही का पेन उपयोग में ले सकते है। यदि नीली स्याही के पेन से उत्तर लिखा है तो काले रंग की स्याही से रेखांकन किया जा सकता है।
11. यदि परीक्षार्थी का हस्तलेख सुंदर है तो निश्चय ही परीक्षक प्रभावित होगा। यदि लिखावट अच्छी नहीं है तो भी इस बात प्रयास करे कि आपने जो भी लिखा है साफ,स्पष्ट एवं पढ़ने योग्य हो। शब्दों के मध्य पर्याप्त अंतराल हो।
12. नया पैराग्राफ हाशिए से दो तीन शब्द का स्थान छोड़कर आरम्भ करें। प्रत्येक नया पैराग्राफ शुरू करते समय सामान दूरी छोड़े।
13. परीक्षा में समय प्रंबधन भी महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक प्रश्न को उसके अंकभार को ध्यान में रखते हुए समय दिया जाए। जिन प्रश्नों का उत्तर आपको अच्छे से याद है उन्हें आप सबसे पहले करें। इस प्रकार शुरूआत में संतोषजनक उत्तर पढ़ने से परीक्षक प्रभावित होता है। उसके मन में अंत तक परीक्षार्थी के प्रति अच्छी राय बनी रहती है।
14. समय बचने पर उत्तर पुस्तिका को दोहराना सार्थक होता हैं। इससे अनेक छोटी-छोटी गलतियाँ सुधार की जा सकती है।

सहायक निदेशक,
प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर

विद्यालय की बदली तस्वीर....

❐ डॉ. रूप सिंह जाखड़

पश्चिम राजस्थान में स्थित थार नगरी बाड़मेर जिले में धोरीमना ब्लॉक का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भीमथल एजुकेशन के पर्यटन डेस्टिनेशन से कम नहीं है। स्कूल को यह मूर्त रूप देने के लिए यहाँ के प्रधानाचार्य डॉ. रूप सिंह जाखड़ के कुशल नेतृत्व में संस्था प्रधान ने कोरोना काल में विद्यालय समय व शाला समय पश्चात के समय का सदुपयोग करते हुए मजदूर, कारीगर, कलाकार की भूमिका निभाकर रोजाना 6 से 8 घंटे तक कार्य करके बहुत ही सुंदर आकर्षक कोरोना दीवार का निर्माण करवाया। जिले में पहली कोरोना जागरूकता का संदेश देने वाली यह दीवार पर्यटकों, ग्रामीणों व दूरदराज के विद्यालयों के शिक्षकों के आकर्षण का केंद्र बनी। इस दीवार को राजस्थान के तात्कालिक शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह डोटासरा ने ट्विट करके बहुत हीं सराहनीय और नवाचार की पहल बताते हुए कोरोना जागरूकता का संदेश देने वाली दीवार बताया।

स्पोर्ट्स गैलरी का निर्माण : विद्यार्थियों में खेल की भावना विकसित करने व खेलो के नियम की जानकारी प्रदान करने के लिए भामाशाह के सहयोग से स्पोर्ट्स गैलरी का निर्माण किया गया जो जिले की प्रथम स्पोर्ट्स गैलरी है। इस गैलरी को देखकर छोटे-छोटे बच्चे खेलों के नियम सीखते हैं। इस गैलरी के निर्माण के पश्चात विद्यालय की बालिकाओं ने प्रथम बार कबड्डी जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया और जिले में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। स्पोर्ट्स गैलरी में राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा जिन खेलों को स्कूल एजुकेशन में शामिल किया गया उन सभी को दर्शाया गया है।

नि.शुल्क स्टेशनरी बैंक की स्थापना : विद्यालय में पढ़ने वाले जरूरतमंद और असहाय विद्यार्थियों के लिए स्टेशनरी, पोशाक, छात्र-छात्राओं को गंभीर बीमारी से ग्रसित विद्यार्थियों के इलाज करवाने की व्यवस्था बैंक व भामाशाह के सहयोग से किए जाने का प्रावधान किया।

भामाशाहों ने दिल खोलकर किया सहयोग : प्रधानाचार्य व स्टाफ की कार्यशैली से प्रभावित होकर भामाशाहों ने विद्यालय में जल मंदिर, सरस्वती मंदिर, रंगमंच निर्माण, सरस्वती वाटिका, स्पीच स्टैंड का निर्माण करवाया।

रेल की कलाकृति का निर्माण : विद्यालय को आकर्षक व सुहावना दृश्य प्रदान करने के लिए कोरोनाकाल में भामाशाह के सहयोग से रेलवे की कलाकृति को विद्यालय की मुख्य द्वार पर बनाकर बहुत ही सुंदर दृश्य प्रदान किया। आसपास के विद्यालयों के शिक्षक व लोग इस विद्यालय को भारतीय रेल वाला विद्यालय के नाम से भी कहने लगे।

विद्यार्थी प्लास्टिक की बोतलों से विद्यालय में भर रहे खुशनुमा रंग : प्लास्टिक को मानव जीवन के लिए अभिशाप माना जाता है और इसका निस्तारण आज भी दुनिया के लिए एक बड़ी समस्या है। विद्यालय प्रशासन की प्रेरणा से स्कूल के बच्चें गांव और सड़कों पर बिखरी हुई प्लास्टिक की बोतलों को इकट्ठा कर उसमें रंग भरकर स्कूल के बगीचे को खूबसूरत बना रहे हैं। विद्यार्थियों द्वारा इन बोतलों को स्कूल के बगीचे में विविध चित्रांकन कर सजाया जा रहा है। इस नवाचार से न सिर्फ गांव प्लास्टिक मुक्त हो रहा है बल्कि विद्यार्थियों में रचनात्मकता का संचार भी हुआ है।

प्रधानाचार्य व स्टाफ की कड़ी मेहनत से बदली विद्यालय की तस्वीर : प्रधानाचार्य सहित विद्यालय के स्टाफ के सहयोग से विद्यालय की तस्वीर बदल गई। पर्यावरण संरक्षण हेतु भामाशाह के सहयोग से 51 ट्री गार्ड व विद्यालय की पूर्व स्टॉफ लाइब्रेरियन दिव्या मिश्रा ने 101 औषधीय पौधे भी भेंट किए जो आज विद्यालय की शोभा बढ़ा रहे हैं।

ऑनलाइन व स्मार्ट क्लास का संचालन : विद्यालय में अवकाश व रविवार को भी विषय अध्यापकों के रिक्त पदों के कारण गणित व अन्य विषयों की पढ़ाई ऑनलाइन स्मार्ट क्लास के माध्यम से आईसीटी लैब प्रभारी रमेश कुमार पवार के निर्देशन में नियमित रूप से होती है ताकि बोर्ड का बेहतर परीक्षा परिणाम रखा जा सके।

प्रधानाचार्य की कलम से : विद्यालय के नवाचारो से विद्यालय का परीक्षा परिणाम व नामांकन में बढ़ोतरी हुई है। विद्यालय के नवाचारों के मॉडल भारतीय रेलवे की कलाकृति, कोरोना दीवार, स्पोर्ट्स गैलरी आदि देखने के लिए विद्यालय समय के पश्चात आसपास के गाँवों से से विद्यार्थी, ग्रामीण, शिक्षक बंधु व अभिभावक संस्था प्रधान आते हैं तथा कई विद्यालयों में इन नवाचारों को लागू भी किया है। भीमथल विद्यालय को ब्लॉक, जिला और मंडल स्तर पर प्रशंसा पत्र प्राप्त हो चुके हैं।

प्रधानाचार्य,
राउमावि भीमथल, बाड़मेर (राज.)
मो. 9460853012

Rajasthan Education Department

शाला दर्पण

विद्यालयी संसाधनों की मॉनिटरिंग हेतु एक मजबूत स्तंभ

❒ नीरज कांडपाल

राजस्थान में माध्यमिक तथा प्रारंभिक शिक्षा की 66 हजार से अधिक राजकीय विद्यालय हैं तथा सभी विद्यालयों में शाला दर्पण पोर्टल संचालित है। शाला दर्पण पोर्टल द्वारा विद्यालय के विभिन्न संसाधनों अर्थात् कार्मिक, विद्यालय तथा विद्यार्थी संबंधी मॉनिटरिंग की जा रही है। शाला दर्पण पोर्टल पर विद्यालय स्तर से अपडेशन शाला दर्पण प्रभारी द्वारा किया जाता है तथा संस्थाप्रधान, शाला दर्पण प्रभारी द्वारा किए गए प्रत्येक प्रविष्टि हेतु पूर्णतः उत्तरदायी है। अतः इस आलेख का उद्देश्य मुख्यतः माध्यमिक तथा प्रारंभिक शिक्षा के विद्यालयों में संस्थाप्रधान या कार्यवाहक संस्थाप्रधान का कार्य कर रहे शिक्षकों को विद्यालय के विभिन्न संसाधनों की शाला दर्पण पोर्टल से मॉनिटरिंग हेतु मार्गदर्शन प्रदान करना है। इस आलेख में मॉड्यूल वार मॉनिटरिंग हेतु सुझाव दिए जा रहे हैं।

शाला दर्पण के समस्त मॉड्यूल तीन मूल संसाधन कार्मिक, विद्यार्थी तथा विद्यालय से संबंधित है। शाला दर्पण के कुछ मॉड्यूल की प्रतिदिन मॉनिटरिंग की जानी आवश्यक है तथा कुछ मॉड्यूल की सतत मॉनिटरिंग प्रति सप्ताह/प्रतिमाह की जानी चाहिए।

शाला दर्पण पोर्टल पर प्रतिदिन मॉनिटरिंग योग्य मॉड्यूल

1. शाला दर्पण पर कार्मिकों की दैनिक उपस्थिति की प्रविष्टि– 'कार्मिक मॉड्यूल के अंतर्गत स्टाफ उपस्थिति मॉड्यूल की मॉनिटरिंग अति आवश्यक है। प्रतिदिन स्टाफ उपस्थिति सबमिट करने से पूर्व अवकाश अनुमोदन किया जाना आवश्यक है। कार्मिक द्वारा 'स्टाफ कॉर्नर लॉगइन' से ऑनलाइन अवकाश आवेदन करने के पश्चात, अवकाश 'अवकाश अनुमोदन के पश्चात ही स्वीकृत माना जाता है। अतः संस्थाप्रधान से यह अपेक्षा की जाती है कि अपने विद्यालय के समस्त कार्मिकों को स्टाफ कॉर्नर का उपयोग करके अवकाश के लिए आवेदन करने को कहें। हर बार अवकाश प्रविष्टि हेतु 'On Leave' ऑप्शन का उपयोग नहीं किया जाए। ऑनलाइन स्टाफ उपस्थिति की मासिक रिपोर्ट में सभी कर्मचारियों के अवकाश प्रविष्टि के लिए 'On Leave' ऑप्शन से यह स्पष्ट होता है कि स्टाफ द्वारा ऑनलाइन अवकाश आवेदन नहीं किया जा रहा है।

यदि किसी कार्मिक द्वारा आवेदन किए गए अवकाश के दिनों से पूर्व में ही उपस्थिति दे दी जाती है तो विद्यालय लॉगइन से पूर्व में प्रोसेस कर स्वीकृत की गई अवकाश आवेदन को निरस्त किया जाना है। इसके पश्चात कार्मिक के द्वारा उपयोग किए अवकाश के दिनों का आवेदन पुनः स्टाफ कॉर्नर लॉगइन से किया जाएगा। स्टाफ ऑनलाइन उपस्थिति में किसी भी प्रकार की गलती होने पर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय से 7 दिनों के अंदर संशोधन करवाया जा सकता है।

2. शाला दर्पण पर विद्यार्थियों की दैनिक उपस्थिति की प्रविष्टि– इस सत्र से विद्यार्थी दैनिक उपस्थिति प्रारंभ की गई है। विद्यालय में उपस्थित विद्यार्थियों की प्रतिदिन उपस्थिति शाला दर्पण पोर्टल पर ऑनलाइन की जानी है। प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थी उपस्थिति रजिस्टर से उपस्थित विद्यार्थियों की सही प्रविष्टि शाला दर्पण पर ऑनलाइन की जानी सुनिश्चित करें।

शाला दर्पण पोर्टल पर सतत मॉनिटरिंग हेतु मॉड्यूल

1. कक्षावार कुल मासिक कार्य दिवस प्रविष्टि– 'विद्यालय मॉड्यूल' में कक्षावार कुल मासिक कार्य दिवस प्रविष्टि की जाँच करें। इसके उपरांत 'विद्यार्थी मॉड्यूल' में विद्यार्थी मासिक उपस्थिति प्रविष्टि की फीडिंग प्रतिमाह की जानी सुनिश्चित करें। परीक्षा परिणाम मॉड्यूल में विद्यार्थियों की उपस्थिति इस मॉड्यूल से ऑटोमेटिक ली जाती है। इस मॉड्यूल की जाँच प्रतिमाह प्रथम कार्य दिवस को कर ली जानी चाहिए।

2. शाला दर्पण पोर्टल पर समस्त विद्यार्थियों की प्रविष्टि की जाँच– विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या तथा शाला दर्पण पर ऑनलाइन अपलोड की गई विद्यार्थियों की संख्या समान होनी अति आवश्यक है। समय-समय पर किन्हीं कारणों से विद्यार्थियों का नाम पृथक किया जाता है। इसके अतिरिक्त कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों का बीच सत्र में भी प्रवेश किया जाता है अतः शाला दर्पण के विद्यार्थी मॉड्यूल के अंतर्गत विद्यार्थी विवरण प्रविष्टि प्रपत्र-9 की छात्र उपस्थिति रजिस्टर के साथ जाँच की जानी चाहिए। छात्र उपस्थिति रजिस्टर में विद्यार्थियों की संख्या, विद्यार्थी विवरण प्रविष्टि प्रपत्र-9 तथा विद्यार्थी विवरण संशोधन प्रपत्र-5 में विद्यार्थियों की संख्या एक समान होनी आवश्यक है।

3. कार्मिक विस्तृत विवरण प्रविष्टि प्रपत्र 10 की जाँच– विद्यालय में कार्यरत कार्मिकों की समस्त जानकारी कार्मिक विस्तृत विवरण प्रविष्टि प्रारूप 10 में रहती है। यह समस्त जानकारी कार्मिक की सेवा पुस्तिका के आधार पर प्रविष्ट की जाती है। समय-समय पर जारी आदेशों के अनुसार प्रपत्र 10 को प्रत्येक कार्मिक से वेरीफाई करवाना आवश्यक है। नवीन व्यवस्था के तहत विद्यालय लॉगिन से कार्मिकों के प्रपत्र 10 को लॉक कर वेरीफाई करवा दिया गया है। वेरीफाई करने के उपरांत यह सुनिश्चित हो जाता है कि संस्थाप्रधान तथा कार्मिक के द्वारा संपूर्ण सूचनाओं को चेक कर लिया गया है तथा आगे होने वाले किसी भी प्रकार के विभागीय कार्य जैसे स्थायीकरण, एसीपी, एसीआर, टैफ, वरिष्ठता इत्यादि के कार्य के लिए यह डेटा पूर्णता सही है। विद्यालय स्तर पर भी आवश्यक है कि प्रत्येक कर्मचारी से प्रपत्र 10 को वेरीफाई करवा कर विद्यालय स्तर पर संधारित कर लिया जाए।

Rajasthan Education Department

यदि कार्मिक का प्रपत्र 10 को लॉक कर दिया गया है तो विद्यालय लॉगिन पर ही इसे अनलॉक करने की सुविधा उपलब्ध है, परंतु यदि कार्मिक के प्रपत्र 10 को विद्यालय स्तर पर लॉक तथा वेरीफाई दोनों कर दिया गया है तब मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय के माध्यम से प्रपत्र 10 में संशोधन हेतु आवश्यक पेज को ही अनलॉक करावें।

4. विद्यालय इंफ्रास्ट्रक्चर की सूचना की प्रविष्टि व अपडेट की जाँच– विद्यालय के समस्त भौतिक संसाधनों का संपूर्ण विवरण विद्यालय इंफ्रास्ट्रक्चर प्रपत्र में दर्ज किया जाता है। इस मॉड्यूल के अंतर्गत विद्यालय परिसर, भवन व उपलब्ध भूमि की सूचना की प्रविष्टि की जाती है। इसके अलावा विद्यालय में कक्षा कक्षों की संख्या, पेयजल सुविधा, विभिन्न उपकरणों का विवरण व अन्य भौतिक संसाधनों की विवरण की संपूर्ण जानकारी इंफ्रास्ट्रक्चर प्रपत्र में दर्ज की जाती है। इनमें से बहुत से प्रपत्र समय-समय पर अपेडेट करने योग्य हैं। विद्यालय में किसी भी प्रकार के भौतिक संसाधन की नवीन उपलब्धता के पश्चात् इंफ्रास्ट्रक्चर प्रपत्र को अपेडेट किया जाना आवश्यक है। अतः समय-समय पर विद्यालय इंफ्रास्ट्रक्चर प्रपत्र की जांच व अपेडेशन आवश्यक है। यहां इस बात का जिक्र करना आवश्यक है कि विभिन्न विभागीय योजनाओं के लिए विद्यालय का चयन, भरे गए इंफ्रास्ट्रक्चर प्रपत्र की सूचनाओं के आधार पर किया जाता है अतः इस प्रपत्र को अद्यतन रखें।

विद्यालय स्तर से इंफ्रास्ट्रक्चर प्रपत्र को लॉक करने के उपरांत मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय से अनलॉक करवा कर पुनः अपडेट किया जा सकता है।

5.विद्यालय प्रोफाइल अवलोकन आवश्यकतानुसार अपडेट– विद्यालय प्रोफाइल में विद्यालय की संपूर्ण जानकारी उपलब्ध होती है। विद्यालय के स्तर, क्रमोन्नति के वर्ष, संचालित संकाय, विषय तथा भौगोलिक स्थिति के बारे में संपूर्ण जानकारी विद्यालय प्रोफाइल में उपलब्ध होती है। संकाय तथा विषय परिवर्तन का कार्य माध्यमिक शिक्षा निदशालय स्तर से ही किया जाता है। यदि विद्यालय में कुछ छात्रों को स्व-अध्ययन हेतु अनुमति प्रदान की गई है तब स्व अध्ययन हेतु अनुमति दिए जाने संबंधी प्रमाण पत्र सहित, निदेशालय शाला दर्पण प्रकोष्ठ को संपर्क कर विषयों को अपडेट करवाया जा सकता है। यह विद्यालय स्तर से अपडेट नहीं होता है।

6. विद्यार्थी लाभाकारी योजनाओं में प्रविष्टि– विद्यार्थियों को दी जाने वाली विभिन्न लाभकारी योजनाओं की प्रविष्टि शाला दर्पण के माध्यम से की जाती है। इनमें मुख्य योजनाएं निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण, साइकिल/लैपटॉप वितरण, ट्रांसपोर्ट वाउचर, छात्रवृत्ति वितरण इत्यादि है। इन सभी योजनाओं में विभागीय निर्देशानुसार प्रविष्टि कर निर्धारित समय सीमा में सममिट किए जाने हेतु प्रभावी प्रबोधन किया जाना अति आवश्यक है।

छात्राओं को मिलने वाली साइकिल अथवा ट्रांसपोर्ट वाउचर स्कीम विद्यार्थियों की घर से विद्यालय की दूरी पर निर्भर करती है। यदि विद्यार्थी के घर से स्कूल की दूरी परिवर्तित कराने की आवश्यकता है तब मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में संपर्क कर दूरी परिवर्तित कराई जा सकती हैं।

7. विद्यार्थी परीक्षा परिणाम प्रविष्टि– प्रथम परख से पूर्व सभी विद्यार्थियों को रोल नंबर आवंटित किए जाने की जांच की जानी है। परीक्षा परिणाम की प्रविष्टि पूर्व में 'परिणाम' माड्यूल के अंतर्गत होती रही है परंतु कोविड-19 के कारण इस वर्ष परीक्षा के प्रकार तथा अंक विभाजन में कुछ परिवर्तन किया गया है तथा इनकी प्रविष्टि 3.0 के अंतर्गत विद्यालय लॉगइन व स्टाफ कॉर्नर कर्मचारी लॉगइन से की जा रही है। संस्था प्रधान द्वारा प्रत्येक परीक्षा के उपरांत शाला दर्पण पर अंक अपलोड किए जाने की सतत मॉनिटरिंग की जानी आवश्यक है। शाला दर्पण पर अंक कार्मिक के स्टाफ लॉगइन तथा विद्यालय लॉगिन दोनों के माध्यम से की जाने की सुविधा प्रदान की है। अतः सभी कक्षा अध्यापकों को उनके खुद के स्टाफ लॉगइन से अंको की प्रविष्टि करने हेतु प्रेरित करना चाहिए ताकि शाला दर्पण कार्य विभाजन समुचित रूप से हो सके।

8. कक्षा अध्यापक व विषय अध्यापक मैपिंग– 'कार्मिक' मॉड्यूल के अंतर्गत 'कक्षा अध्यापक मैपिंग' तथा 'परीक्षा' मॉड्यूल के अंतर्गत 'विषय अध्यापक मैपिंग की प्रविष्टि सही-सही की जाने की जाँच करें। समय-समय पर जारी आदेशानुसार, शाला दर्पण प्रभारी के साथ-साथ कक्षा अध्यापक, विद्यार्थी संबंधी समस्त प्रकार की शाला दर्पण प्रविष्टि के लिए समान रूप से प्रभारी है। शाला दर्पण प्रभारी के साथ-साथ कक्षा अध्यापक को भी विद्यार्थियों की शाला दर्पण प्रविष्टि की जांच तथा वेरीफाई करने के लिए निर्देशित करें।

9.विद्यालयों की समस्याओं हेतु हेल्प सेंटर– शाला दर्पण पर हेल्प डेस्क मॉड्यूल के अंतर्गत 'हेल्प सेंटर-विद्यालयों की समस्याएं' सब-मॉडयूल दिया गया है। शाला दर्पण के प्रत्येक मॉड्यूल से संबंधित समस्या के लिए अलग-अलग कैटेगरी बनाई गई है। इससे समस्या सीधे मॉड्यूल प्रभारी, कार्यक्रम अधिकारी के लॉगिन पर समाधान के लिए जाती है तथा संबंधित कार्यक्रम अधिकारी के द्वारा समस्या को हल कर विद्यालय लॉगिन पर ही जवाब प्रेषित किया जाता है। अतः शाला दर्पण संबंधी समस्त प्रकार के समस्याओं के लिए विद्यालय लॉगिन में स्थित हेल्प सेंटर का उपयोग किया जाना सुनिश्चित करें।

10. शिक्षक परीक्षक डाटा मैपिंग : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर, राजस्थान के द्वारा आयोजित होने वाली विभिन्न परीक्षाओं की नियुक्ति के लिए शिक्षकों की जानकारी शाला दर्पण के शिक्षक परीक्षक डाटा मैपिंग मॉड्यूल के माध्यम से ली जाती है। अपने विद्यालय के समस्त शिक्षकों से संबंधित बोर्ड डाटा को इस मॉड्यूल के माध्यम से अपडेट किया जा सकता है। पिछले वर्ष परीक्षाएं नहीं होने के कारण अधिकांश कर्मचारियों का यह डाटा अपडेट नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए शिक्षण में अनुभव लगभग सभी शिक्षकों का अपडेट किया जाना है। शिक्षक परीक्षक डाटा मैपिंग रिपोर्ट के माध्यम से विद्यालय के शिक्षकों की डाटा मैपिंग की अद्यतन जानकारी प्राप्त हो जाएगी।

अनुसंधान अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान,
बीकानेर
मो. 8107847570

Rajasthan Education Department

कोविड काल में शिक्षा की निरन्तरता में सोशल मीडिया की प्रासंगिकता

❐ डॉ. डी.डी. गौतम

Covid-19 जैसी वैश्विक महामारी ने मानव जीवन को असहाय और पंगू बना कर रख दिया। वर्तमान पीढ़ी ने इन परिस्थितियों की कभी कल्पना भी नहीं की। इतिहास की नजर से हर शताब्दी में कोई ना कोई विषम परिस्थितियाँ अथवा महामारी जन्म लेती आ रही है, लेकिन कोविड महामारी के दौरान जनता कर्फ्यू, लॉकडाऊन तथा नाइट कर्फ्यू जैसे शब्द केवल शब्दकोष तक ही सीमित थे। व्यवहारिक जीवन में इनका कोई भी सरोकार नहीं रहा। मार्च, 2020 से जून, 2021 तथा 2022 के प्रारम्भ तक इन असामान्य परिस्थितियों में मानव जाति ने इनका आत्मसात भी किया। इस अवधि में जीवन की सामान्य दिनचर्या मानो ठहर सी गई अर्थात जीवन शैली में भी एक विराम की स्थिति उत्पन्न कर दी। जब सारी दुनिया चार दीवारी में सिमट कर रह गई, तो आवश्यकता इस बात की महसूस की जाने लगी कि नवीन तकनीक और उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से दैनिक जीवन की राह को पटरी पर लाया जाए। व्यवसायिक क्षेत्र में वर्क ऐट होम के माध्यम से निरन्तरता बनाए रखी गई। लेकिन शिक्षण संस्थाओं पर इसका सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

उक्त परिस्थिति में शिक्षा के प्रवाह को सतत् बनाने के लिए परम्परागत शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव की आवश्यकता महसूस की जाने लगी, क्योंकि विद्यार्थियों में लर्निंग लोस एवं लर्निंग गेप जैसी चुनौती महसूस होने लगी। शिक्षा के अधिकार अधिनियम-2009 में वर्णित दायित्वों के अन्तर्गत किसी भी स्थिति में शैक्षिक वातावरण को निरन्तर बनाये रखना प्राधिकरण अथवा सरकार का दायित्व होता है। इसी को ध्यान में रखते हुए कोविड काल में राज्य सरकार, शिक्षा विभाग तथा स्टेक होल्डर के सामूहिक प्रयासों के अन्तर्गत सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाईन शिक्षण को सूचारू एवं निरन्तर बनाये रखने का प्रयास किया। इस व्यवस्था में अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए संचार संसाधनों के नवाचारी आयामों को अपनाते हुए हर संभव प्रयास किए गए।

भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान सबसे बड़ा राज्य है। गत वर्षों में कोरोना जैसी महामारी/महाविभिषिका के कारण न केवल राज्य ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व, विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। कोरोना से न केवल हमारी दिनचर्या अपितु उद्योग-धन्धे, अर्थव्यवस्था के साथ-साथ शैक्षिक ढाँचे को भी झकझोर कर रख दिया है। बंद शिक्षण संस्थानों एवं ठप्प शिक्षण व्यवस्था के कारण शिक्षक व शिष्य के मध्य न केवल दूरिया बढ़ी बल्कि बच्चों में Learning Gap जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। वर्तमान परिपेक्ष में परिस्थितियों से हार मानना मानवीय प्रद्धति नहीं है। आत्मविश्वास एवं दृढ़ इच्छा-शक्ति के बल पर हम परिस्थितियों का सामना कर, बेपटरी हुई शिक्षण व्यवस्था को शिक्षा विभाग द्वारा नवाचारी शैक्षिक कार्यक्रमों को अपनाते हुए शिक्षा की गुणवत्ता एवं अधिगम सक्रियता को सोशल मीडिया के माध्यम से बरकरार रखा।

राज्य में कक्षा 1 से 12 तक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की निरन्तरता के लिए इंटरनेट के माध्यम से e-लर्निंग, डिजिटल क्लास एवं स्मार्ट क्लास जैसी तकनीक को अपनाते हुए कोविड काल में शिक्षण व्यवस्था को सजीव बनाये रखने के प्रयास किए गए। 21वीं सदी में संचार क्रान्ति के इस युग में हर दिन संचार के क्षेत्र में नवीन अवधारणा जन्म ले रही है, जिसमें वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सोशल लर्निंग, एम-लर्निंग, ई-लर्निंग, माइक्रो लर्निंग तथा ई-लाइब्रेरी जैसे नवाचारों ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम, सरल एवं व्यवहारिक बना दिया है जिससे कोविड काल में शिक्षा के क्षेत्र में परम्परागत शिक्षण व्यवस्था को सोशल मीडिया पर विकल्प के रूप में अपनाया जाने लगा है। वर्तमान परिदृश्य में पारम्परिक शिक्षण प्रक्रिया में सोशल मीडिया की सहभागिता से औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षण में गुणात्मक अभिवृद्धि महसूस की जाने लगी है। वर्तमान परिस्थितियों में समय, स्थान और देश की सीमाओं को लांघकर ऑफ केम्पस लर्निंग जैसी अवधारणा को जन्म दिया, जो कि पढ़ने-पढ़ाने के कौशल में सहायक सिद्ध हो रही है। इस व्यवस्था में न केवल विद्यार्थियों अपितु शिक्षकों में रचनात्मकता के कौशल विकसित हुए, इसके साथ-साथ मनोवैज्ञानिक व बौद्धिक क्षमताओं में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

राजस्थान में राज्य सरकार एवं शिक्षा विभाग द्वारा कोविड महामारी के मद्देनजर बाधित हुई शिक्षण व्यवस्था तथा बंद पड़ी शिक्षण संस्थाओं के बावजूद शिक्षण कार्य को निरन्तर बनाये रखने के लिए हर संभव प्रयास किए। इसके अन्तर्गत ऑनलाईन के साथ ऑफलाईन प्रक्रिया को अपनाते हुए प्रत्येक विद्यार्थी तक शिक्षण-अधिगम सामग्री को उपलब्ध करवाने के प्रयास किए। इस प्रक्रिया में शिक्षण व्यवस्था की निरन्तरता बनाये रखने के लिए सोशल मीडिया के माध्यम से न केवल ऑनलाईन बल्कि बच्चों से घर-घर सम्पर्क कर ऑफलाईन प्रयास भी किये गए।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की निरन्तरता हेतु किए गए प्रयास-

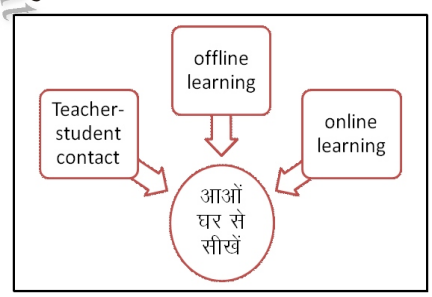

कोविड काल में राज्य सरकार द्वारा लर्निंग गेप को Full-Fill करने हेतु संचालित शैक्षणिक एवं ब्रिज कोर्स कार्यक्रम-

- SMILE- 1, 2 एवं 3
- आओ घर से सीखें
- मिशन ज्ञान
- बेक टू स्कूल
- होनहार राजस्थान
- हर सवेरे हर घर स्कूल घंटी बजे
- STAR (Set to Augment Results)
- 100 दिवस आनन्द पूर्वक अधिगम (रीडिंग कैम्पेन)
- हवामहल
- मिशन समर्थ

Rajasthan Education Department

- शिक्षा वाणी
- शिक्षा दर्शन
- शिक्षकों द्वारा घर-घर सम्पर्क

कोविड काल के दौरान राज्य में शिक्षण व्यवस्था को निरन्तर बनाये रखने के लिए Online एवं Offline जैसे अभिनव प्रयास किए गए, जिसमें (Social Media Interface for Learning Engagement) के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए घर पर online शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित की गई। इसके अन्तर्गत 14 अप्रेल, 2020 को इस कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया जिसमें विद्यार्थियों को स्कूलों के माध्यम से स्टूडेन्ट-पेरेन्ट्स-टीचर्स व्हाट्सअप ग्रुप से जोड़ा गया। कक्षा 1 से 12 के पाठ्यक्रम की विषयवस्तु आधारित शिक्षण सामग्री के 30 से 40 मिनट के छोटे-छोटे विडियो के रूप में विद्यार्थियों को online सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की गई। इस प्रक्रिया में यू-ट्यूब लिंक को राज्य स्तर पर स्थापित केन्द्र के माध्यम से जिले तथा जिला स्तर से ब्लॉक एवं ब्लॉक स्तर से पंचायत स्तर पर उपलब्धता सुनिश्चित की। इसी क्रम में पंचायत स्तर पर PEEO संस्था प्रधान द्वारा शिक्षक एवं विद्यार्थियों को उनके व्हाट्स अप समूह में प्रतिदिन प्रात: 9 बजे ''हर सवेरे 9 बजे, हरघर, स्कूल घंटी बजे'' कार्यक्रम के द्वारा कक्षावार-विषयवार शिक्षण सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की। सम्प्रेषण के इस कार्यक्रम को SMILE नाम दिया गया। इसके पश्चात् इस कार्यक्रम में और आधुनिक तकनीक को समाहित करते हुए परिस्कृत किया गया जिसे 2 नवम्बर, 2020 को SMILE-II एवं तत्पश्चात् SMILE-III के नाम से संचालित किया गया। इसके अंतर्गत लगभग 400 दिवस के कार्यक्रम में 10,000 व्हाट्सअप समूह के माध्यम से 3.28 लाख शिक्षक तथा लगभग 27 लाख विद्यार्थियों तक पहुँच सुनिश्चित की गई। इसके अलावा जो विद्यार्थी संसाधनों के अभाव में online व्यवस्था द्वारा सम्पर्क में नहीं थे उन्हें शिक्षकों द्वारा घर-घर जाकर नियमित offline शिक्षण-अधिगम व्यवस्था सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया।

शैक्षणिक गतिविधि के साथ सह-शैक्षिक गतिविधि हेतु प्रत्येक शनिवार को online कार्यक्रम ''हवामहल'' के माध्यम से रोचक एवं प्रेरणादायी लघु कहानियाँ तथा कविताएँ विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाई गई। प्रत्येक शनिवार को सप्ताह में सीखी गई विषय-वस्तु की प्रतिपुष्टि हेतु क्विज कार्यक्रम संचालित किए गए। जिसका राज्य स्तर पर गठित विषय-विशेषज्ञों के दल द्वारा निरन्तर आकलन/मूल्यांकन किया गया। online व्यवस्था से जुड़े विद्यार्थियों एवं offline के से मुख्यधारा में सम्मिलित विद्यार्थियों को प्रदत्त कार्यो का आकलन करते हुए रिकॉर्ड को पोर्टफोलियो के रूप में संधारित किया गया।

सीखना व्यक्ति में निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसके लिए नवोन्मेष चाहिए। जिससे सीखना रूचिपूर्ण बना रहे। विद्वानों ने कहा है कि ''यदि परिवर्तनशीलता नहीं होगी तो सीखने में जड़त्व आ जाएगा और यह बहुत विनाशकारी है।'' इसलिए परिवर्तनशीलता बहुत आवश्यक है और इसे ही नवाचार की संज्ञा दी गई है। शिक्षकों को कक्षा-कक्षीय गतिविधि के क्षमता संवर्द्धन हेतु online DIKSHA कार्यक्रम के माध्यम से दक्ष किया गया। इस online शिक्षक प्रशिक्षण को DIKSHA Portal के माध्यम से शिक्षकों का आकलन कर निर्धारित दक्षताओं को हासिल करने वाले शिक्षकों को स्तर पूर्णता के online प्रमाण-पत्र भी जारी किए गए। कोविड काल में शिक्षा की निरन्तरता बनाये रखने के लिए विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम अनुरूप विषय-वस्तु के अलावा Psychometric Assessment के लिए Aptitude और Personality Development के लिए Life Skill Development कार्यक्रम भी सोशल मीडिया के माध्यम से संचालित किए गए।

सोशल मीडिया के माध्यम से राज्य में संचालित किए गए नवाचारिक शैक्षिक एवं ब्रिज कोर्स कार्यक्रमों का श्रेणीगत विवरण :-

श्रव्य-दृश्य	श्रव्य	दृश्य	प्रिन्ट सामग्री	परस्पर संवाद
• व्हाट्स अप समूह • यू-ट्यूब विडियो • e-कक्षा • स्मार्ट क्लास • शिक्षा दर्शन (दूरदर्शन कार्यक्रम) • हवामहल (सह शैक्षिक कार्यक्रम) • वर्चुअल क्लास • e-कटेन्ट • e-लर्निंग • शनिवार क्विज कार्यक्रम (होम वर्क/ असाईनमेन्ट) • मिशन ज्ञान	शिक्षा वाणी (आकाशवाणी कार्यक्रम) प्रतिदिन 55 मिनट का कक्षावार-विषयवार शिक्षण कार्यक्रम, जिसे राज्य के 25 रेडियो स्टेशन से नियमित प्रसारित किया गया।	मिशन समर्थ द्विव्यांग छात्रों को साइन लेंगवेज में कक्षा 1 से 12 के लिए प्रत्येक सोमवार से शनिवार 195 मिनट का डी.डी. राजस्थान के दूरदर्शन पर प्रसारण किया गया।	ऑफ लाइन एवं ऑन लाइन अभ्यास कार्य हेतु • पहल (कक्षा-3) • प्रयास (कक्षा-4-5) • प्रवाह (कक्षा-6-7) • प्रखर (कक्षा-8) तथा कक्षा 1 से 5 के बिहान्ड ग्रेड के छात्रों के लिए। • साथी • सीख • समर्थ नामक कार्य पुस्तिकाओं की उपलब्धत। • e-लाइब्रेरी	गूगल जूम मीट, विडियो कान्फ्रेसिंग गूगल क्लास तथा टीचर होम विजिट, चौपाल कार्यक्रम के माध्यम से

विद्यार्थी–शिक्षक मैपिंग (डाटा संकलन)–

विद्यालय स्तर से संस्था प्रधान द्वारा शिक्षकों के स्टॉफ लॉगिन हेतु कक्षाध्यापक मैपिंग शाला दर्पण पोर्टल पर की जाने के पश्चात् शिक्षकों द्वारा उनके शालादर्पण पोर्टल की स्टॉफ विन्डों लॉगिन से प्रत्येक विद्यार्थी को प्रदत्त कार्य/गृहकार्य का आकलन/मूल्यांकन उपरान्त प्रविष्टि की गई।

गुणवत्ता शिक्षा हेतु वर्तमान में संचालित कार्यक्रम

रीडिंग कैम्पेन (100 दिवस आनन्दायी अधिगम)–

राज्य में 1 जनवरी, 2022 से बच्चों के लिये आनंदमय पठन की रूचि में अभिवृद्धि के लिए रीडिंग कैम्पेन कार्यक्रम संचालित किया गया है। इसके अन्तर्गत प्राथमिक स्तर कक्षा 1 से 8 के बच्चों में पठन कौशल विकास का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। पढ़ना जो कि स्वाभाविक रूप से नहीं आता बल्कि, इसे सीखने की आवश्यकता होती है। इससे बच्चों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिन्तन, शब्दावली विकास और मौखिक व लिखित में अभिव्यक्त करने की दक्षता का विकास होता है।

रीडिंग कैम्पेन के लक्ष्य –

- पठन कौशल उन्नयन व चिन्तन विकास।
- सीखने का अभ्यास।
- नियमित पठन की रूचि का विकास।
- पढ़ने की प्रवृत्ति का वातावरण निर्माण।
- विद्यालयों में पठन सामग्री उपलब्धता सुनिश्चित करना।

STAR (Set to Augment Results) रेमीडिऐशन कार्यक्रम –

कोरोना काल में बाधित शिक्षण व्यवस्था के कारण बच्चों में Learning Gap की स्थिति उत्पन्न हुई है। इसी को ध्यान में रखते हुए निदेशालय माध्यमिक शिक्षा द्वारा उपचारात्मक कार्यक्रम STAR (Set To Augment Results) संचालित किया गया है। इसके अन्तर्गत कक्षा 1 से 8 में अध्ययरनरत बच्चों का प्री टेस्ट के माध्यम से शैक्षिक स्तर का आकलन कर समूहवार उपचारात्मक शिक्षण कार्य करवाते हुए प्रत्येक बच्चे को At Grade तक लाने के उद्देश्य से प्रयास किए जा रहे हैं। इस ब्रिज कोर्स के अन्तर्गत शिक्षक द्वारा Behind Grade शैक्षिक स्तर वाले विद्यार्थी को कार्य-पुस्तिकाओं का नियमित अभ्यास कार्य करवाते हुए At Grade की दक्षताएं हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

सोशल मीडिया के शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में लाभ–

- सर्वत्र उपलब्धता एवं त्वरित सूचना सम्प्रेषण।
- स्थाई संग्रहित एवं सुविधा परक।
- शिक्षण–अधिगम की सहजता के साथ अधिगम कौशल का विकास।
- उच्च कोटि अनुदेशन तथा दूरस्थ शिक्षा हेतु उपयुक्त।
- समय, स्थान तथा भौगोलिक सीमा की बाध्यता की समाप्ति।
- शिक्षण प्राविधि को प्रभावी बनाने का साधन।
- विषयवस्तु के प्रदर्शन में आकर्षकता तथा प्रत्यक्ष अन्त: क्रिया में अभिवृद्धि।
- विषयवस्तु का बहुविषयक एवं बहुभाषीय सम्प्रेषण तथा गुणवत्ता में अभिवृद्धि।
- शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकी के समावेश के साथ प्रौद्योगिकी कौशल का विकास।
- परम्परागत शिक्षण प्रक्रिया में सारथी।

सोशल मीडिया द्वारा शिक्षण व्यवस्था में चुनौतियाँ–

- शिक्षक–विद्यार्थियों में संचार तकनीक ज्ञान में नवाचार एवं उपयोग में निपुणता का अभाव।
- सूचना तकनीकि एवं आधुनिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता।
- इन्टरनेट तथा सोशल मीडिया पर निर्भरता।
- दुर्गम स्थलों पर पर्याप्त संचार सुविधाओं की उपलब्धता का अभाव।
- परम्परागत शिक्षण व्यवस्था का चलन एवं आत्मसाथ ।
- भौतिक संसाधनों (स्मार्टफोन, लेपटॉप एवं कम्प्यूटर) की अपेक्षित उपलब्धता का अभाव।
- शिक्षार्थियों में एकाकी प्रवृत्ति पनपने की संभावना के साथ स्वतंत्र संवाद की प्रवृत्ति में कमी।
- शिक्षार्थियों में अनुशासनात्मक प्रवृत्ति पर प्रतिकूलता के साथ भटकाव की संभावना।
- समुदाय पर आर्थिक बोझ तथा उनकी सहभागिता एवं आपसी मेल–मिलाप के सम्बन्धों में दूरिया।
- शिक्षकों और छात्रों में सामाजिक–भावनात्मक सह–सम्बन्ध में कमी।
- समुह चर्चा एवं सह–शैक्षिक गतिविधियों में गतिरोध तथा वैचारिक सम्बन्धों में कमी।

सोशिल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव रोकने हेतु सुझाव –

वर्तमान परिपेक्ष तथा कोविड काल में शिक्षा को क्षेत्र ही नहीं, अपितु दैनिक क्रियाकलापों में सोशल मीडिया का उपयोग वरदान साबित हुआ है। परन्तु इसके नकारात्मक पहलू को नजरन्दाज नहीं किया जा सकता। इसके लिए यूजर्स (विद्यार्थियों) की प्राइवेसी को पैरेन्टस द्वारा ट्रेक करने के विकल्प तलासने होंगे। जिससे विद्यार्थी सोशल मीडिया पर उपलब्ध अनावश्यक सामग्री देखने से बच सकें। साथ ही बच्चों द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफार्म के दूरुपयोग को रोकने के लिए 'लत' वाले फीचर्स को डिसेबल करने के साथ–साथ लाइक और ऑप्ट आउट करने विकल्प भी उपलब्ध करवाने होंगे।

समीक्षा–

आज हम संचार क्रांति के युग में जी रहे है। संचार साधन मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। सोशल मीडिया शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शिक्षण संस्थाओं के लिए सर्व सुलभ एवं लोकप्रिय बन चुका है। ई–अधिगम के माध्यम से औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षण व्यवस्था काल, स्थान, देश, विदेश की सीमाओं को लाँघ चुकी है। सूचनाओं के सम्प्रेषण की गति जितनी तेज हुई है, अधिगम की गति भी उतनी ही तेज हो गई है। कोरोना काल में राजस्थान में संचालित विभिन्न ई–लर्निंग कार्यक्रमों ने प्रमाणित कर दिया है कि शिक्षा की निरन्तरता, रोचकता एवं उत्सुकता बढ़ाने के साथ–साथ नवाचारों के द्वारा विद्यार्थियों के पढ़ने–लिखने के कौशल में अभिवृद्धि का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों ही वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक के माहौल में अपने आप को समायोजित कर सफल जीवनयापन करने में निपुण हो सकेंगे।

अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी–प्रथम,
ब्लॉक–कुम्हेर, जिला भरतपुर
9413671118

Rajasthan Education Department

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!

घमंडिया : मेरा गाँव मेरा विद्यालय

❒ प्रेम कुमार सुथार

किसी भी गाँव की जीवन शैली, परम्पराओं, रीति-रिवाजों पर उस गाँव की भौगोलिक दशा, इतिहास, सामाजिक स्वरूप व शिक्षा व्यवस्था का गहरा प्रभाव होता है, गाँव घमंडिया भी इससे अलग नहीं है। गाँव के बुजुर्गों, गणमान्य नागरिकों के अनुभवों, उनके संस्मरणों से इसे बखूबी जाना जा सकता है। यहाँ भी गाँव की विकास यात्रा के साथ-साथ शैक्षिक परिदृश्य, सामाजिक स्तर में अभूतपूर्व बदलाव आया है। उच्च माध्यमिक स्तर पर क्रमोन्नति के पश्चात दिनांक 23 मई, 2018 से मुझे राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय घमंडिया में प्रथम प्रधानाचार्य के रूप में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ग्रामीण परिवेश के इस विद्यालय में प्राथमिक तौर पर निम्नलिखित चुनौतियों पर कार्य किया गया-

1. भौतिक संसाधनों व कक्षा-कक्षों का अभाव व जर्जर भवन व खेल सुविधा का अभाव।
2. विद्यार्थियों व स्टाफ के लिए पेयजल, शौचालय, मूत्रालय का अभाव।
3. विद्यालय के प्रति आमजन का कम रुझान व कम नामांकन व कम ठहराव।
4. विद्यालय में ग्रीनरी/पार्क व सौंदर्यकरण का अभाव।
5. विद्यार्थियों का कमजोर शैक्षिक स्तर व परीक्षा परिणाम। सहशैक्षिक गतिविधियों में विद्यार्थियों की कम भागीदारी।

कार्यग्रहण के बाद से आर्थिक तंगी से जूझ रहे इस विद्यालय को संवारने सुधारने हेतु ग्राम के भामाशाहों, प्रबुद्ध नागरिकों, ग्राम पंचायत व स्टाफ के सहयोग से एक सामूहिक मिशन के तहत कार्य प्रारंभ किया गया।

विद्यालय सुरक्षा सर्वोपरि- विद्यालय में पहला कार्य विद्यालय परिसर सुरक्षा का किया गया ताकि विद्यालय के प्रति जनमानस का विश्वास पैदा हो सके, इस हेतु ग्राम के प्रबुद्ध नागरिकों, पूर्व अध्यापकों, ग्राम पंचायत व स्टाफ से व्यापक चर्चा कर सकारात्मक माहौल विद्यालय के प्रति तैयार किया गया व एसडीएमसी की प्रथम बैठक में ही गाँव के सेवाभावी नागरिकों की एक निगरानी टीम तैयार कर विद्यालय समय के बाद व देर रात तक भी निगरानी नियमित रूप से की जानी शुरू की गई, जिसका सकारात्मक परिणाम मिला एवं आमजन भी इससे जुड़ता चला गया।

सामान्य जनमानस के जुड़ने से विद्यालय के प्रति सकारात्मक माहौल बना व शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी, फलस्वरूप विद्यालय विकास में आमजन ने दिल खोलकर सहयोग किया।

विद्यालय भवन व भौतिक विकास- विद्यालय में सबसे बड़ी कमी कक्षा-कक्षों, शौचालय, जलघर, कुण्ड का अभाव व जर्जर भवन था। अब तक जर्जर भवन को गिराकर आठ कक्षा-कक्षों को तैयार किया जा चुका है, पूरे भवन का रंगरोगन करवाकर कक्षा-कक्षों व बरामदों में लर्निंग फ्लेक्स लगवाकर भवन को आकर्षक बनाया गया है। प्रत्येक कक्षा-कक्ष ग्रीन बोर्ड व डिस्पले बोर्ड युक्त है। परिसर में स्वच्छ पेयजल हेतु जलघर, जल संग्रह हेतु कुण्ड और बालकों हेतु शौचालय मूत्रालय का निर्माण जनसहयोग से करवाया गया है। शाला के शिक्षक श्री देव कुमार ने स्टाफ हेतु शौचालय मूत्रालय का निर्माण करवाया गया है। इंटरलॉकिंग ईंटों से प्रार्थना स्थल का निर्माण करवाया गया है। जनसहयोग से खेल मैदान का समतलीकरण कर खो-खो, वॉलीबाल, फुटबाल के मैदान विकसित कर लिए गए है। भामाशाहों के सहयोग से विद्यालय में विद्युत जनरेटर, सैनेटरी नैपकिन्स इंसीनरेटर-डिस्पेंसर, साउंड सिस्टम, विद्यार्थियों हेतु फर्नीचर, सभी कक्षा-कक्षों में पंखों, प्रिंटर, ऑफिस हेतु मेज, लेक्चर स्टैण्ड, अलमारी आदि सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की गई है। जनसहयोग से विद्यालय परिसर में सीसीटीवी कैमरे भी लगवा दिए गए है।

विद्यालय के भौतिक विकास के साथ स्टाफ की सकारात्मक मेहनत से नामांकन व परीक्षा परिणाम में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है।

नामांकन अभिवृद्धि, शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियाँ व सुधार-

1. विद्यालय सुरक्षा एवं विद्यालय गतिविधियों के संचालन में आमजन की भागीदारी सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा प्रभाव नामांकन वृद्धि में मिला। विद्यार्थियों के लिए विभिन्न सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं व विद्यालय व्यवस्था का व्यापक प्रचार-प्रसार रैली, फ्लैक्स, होर्डिंग के द्वारा किया गया। एक अभियान के साथ डोर टू डोर सर्वे कर सभी अनामांकित विद्यार्थियों का नामांकन करवाकर ग्राम पंचायत को ड्रॉप आउट फ्री उजियारी पंचायत घोषित कर जिला स्तर पर सम्मानित करवाया गया। अन्य पंचायतों से भी विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते हैं, विद्यालय के नामांकन में लगभग 115 प्रतिशत की अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।
2. शैक्षिक स्तर सुधार हेतु सभी कक्षाओं में लक्ष्य आधारित बेसलाइन में सुधार पर जोर दिया गया व गृहकार्य में अभिभावकों का सहयोग लेकर घर पर नियमित अध्ययन को सुनिश्चित किया गया। शाला के शिक्षक श्री नेतराम तथा श्री अजमेर सिंह के नेतृत्व में SIQE के अन्तर्गत गतिविधि आधारित अधिगम कार्य के साथ विद्यार्थियों के बेसिक स्तर में बेहतरीन सुधार करवाया गया। बोर्ड परीक्षा परिणाम में मात्रात्मक व गुणात्मक सुधार हेतु नवाचार के तौर पर परीक्षा परिणाम उन्नयन योजना तैयार कर इसके प्रभावी क्रियान्वयन व वर्ष भर अतिरिक्त कक्षाएँ आयोजित कर प्रथम वर्ष में ही 100 प्रतिशत परीक्षा परिणाम का लक्ष्य प्राप्त किया। विद्यालय में आईसीटी लैब व डिजिटल माध्यम के निरंतर उपयोग ने शिक्षण कार्य को रुचिकर बनाया।

कोरोना काल में स्टाफ ने टीम वर्क के

Rajasthan Education Department

रूप में कार्य करते हुए ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित की व सभी विद्यार्थियों से सम्पर्क रखते हुए उन्हें शिक्षा से जोड़े रखा, परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर में सुधार बना रहा।

3. विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति व सृजन का विकास करने हेतु सहशैक्षिक गतिविधियों पर विशेष जोर दिया गया। विद्यालय संचालन व विभिन्न गतिविधियों में विद्यार्थियों की भूमिका सुनिश्चित करने हेतु बाल संसद का गठन कर विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक व्यवस्था तैयार की गई। जिसके सहयोग से चित्रकला, लेखन, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी, गायन, साहित्यिक, खेल आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन समय-समय पर किया गया व इसमें अधिकतम विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित की। विज्ञान शिक्षक श्री मदन लाल राजोतिया के नेतृत्व में विज्ञान क्लब के माध्यम से विज्ञान मेला मॉडल प्रदर्शनी सहित अनेक गतिविधियों का आयोजन समय-समय पर कर वैज्ञानिक वातावरण विद्यालय में तैयार किया गया। विद्यार्थियों को खेलों में भाग लेने हेतु नियमित प्रोत्साहित किया गया, शाला के शारीरिक शिक्षक श्री कुलदीप सिंह के नेतृत्व में सत्र 2018-19 में खो-खो 17 वर्ष छात्र वर्ग में विद्यालय जिला टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए राज्य स्तर पर विजेता रही व 2 खिलाड़ियों का राष्ट्रीय स्तर पर चयन हुआ, सत्र 2019-20 में खो-खो 19 वर्ष छात्र वर्ग में भी सात खिलाड़ियों का राज्य स्तर एवं दो खिलाड़ियों का राष्ट्रीय स्तर पर चयन हुआ।

हरित विद्यालय कार्यक्रम को बनाया अभियान- विद्यालय को आकर्षक बनाने के लिए पौधारोपण एवं ग्रीन पार्क व फुलवारी का विकास करना अति आवश्यक था, समस्त स्टाफ ने इसे प्राथमिकता से लिया और विद्यालय भवन के चारों ओर मैदान का समतलीकरण करवाकर हरित राजस्थान अभियान के अन्तर्गत तीन वर्ष की हरित विद्यालय योजना तैयार कर पौधारोपण कार्य स्टाफ के आर्थिक सहयोग से शुरू किया गया, जिसके अन्तर्गत शाला के स्टाफ व विज्ञान क्लब के प्रयासों से 15 अक्टूबर 2018 को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम गार्डन की स्थापना की गई, उसके बाद से विद्यालय में कीनू गार्डन, एक ओर फलदार बगीचा व दूब घास तीन पार्क व फुलवारी विकसित की जा चुकी है। वर्तमान में विद्यालय में आँवला, अर्जुन, कीनू, जामुन, अनार, नींबू, सहजन, मेहंदी, अंजीर, नीम, अशोक, बेलपत्र, आडू, गुलर, चीकू, सेमल, पीपल, बरगद, रोहिड़ा के पेड़-पौधे विद्यालय को शोभित कर रहे हैं। विद्यालय में किया गया पौधारोपण ग्रामवासियों के लिए प्रेरणा का केन्द्र बना है और गाँव में भी बड़े पैमाने पर नागरिकों के माध्यम से सार्वजनिक स्थानों पर पौधारोपण का कार्य हुआ है। विद्यालय में लगाई गई गिलोय बेल का कोरोना काल में लगभग पूरे गाँव ने स्वास्थ्य लाभ लिया। वर्तमान में पादपों की सार संभाल विद्यालय स्टाफ व बाल संसद द्वारा की जा रही है।

विद्यालय में किए गए नवाचार-

1. विद्यार्थियों से उनके घर पर अध्ययन, खेल व अन्य गतिविधियों की समय सारिणी बनवाकर उसके अनुसार कार्य करवाना व इसकी स्टाफ द्वारा समय-समय पर डोर टू डोर मॉनिटरिंग, जिससे उनके कार्य में नियमितता व अनुशासन में वृद्धि हुई व विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ।
2. स्वच्छ विद्यालय कार्यक्रम को कक्षा स्तर पर लागू कर स्वच्छता के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक किया गया। बाल संसद के माध्यम से पाक्षिक रूप से मूल्यांकन कर बारी-बारी से प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली कक्षाओं को स्वच्छता व स्व अनुशासन हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है जिससे स्वच्छता के प्रति सकारात्मक परिवर्तन आया।
3. प्रार्थना सभा में समाचार वाचन को पत्रकारिता आधारित किया, जिससे विद्यार्थियों में सूचनाओं को खोजने, सम्प्रेषण व अभिव्यक्ति में जबरदस्त सुधार हुआ।
4. कक्षा-कक्षों के शैक्षिक सौंदर्यकरण की मासिक प्रतिस्पर्धा सत्र पर्यंत रखी गई, जिससे विद्यार्थियों में शिक्षण अधिगम सामग्री यथा चार्ट, मॉडल आदि बनाने के प्रति रूझान बढ़ा और कक्षा-कक्षों में स्थापित डिस्पले बोर्ड की सार्थकता सिद्ध हुई।
5. विद्यालय संचालन व व्यवस्था में विद्यार्थियों की भूमिका को बढ़ावा दिया, प्रतिदिन ड्रेसकोड, अनुशासन, सहयोग, गृहकार्य के आधार पर एक बालक व एक बालिका का चयन कर प्रोत्साहित किया गया। जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, विद्यालय के प्रति लगाव बढ़ा एवं भयमुक्त वातावरण तैयार हुआ।
6. लेखन में सृजनशीलता विकसित करने हेतु विद्यार्थियों से डायरी लेखन शुरू करवाया गया है और प्रतिवर्ष विद्यालय स्मारिका का प्रकाशन भी विद्यालय स्तर पर करवाया जा रहा है, जिससे विद्यार्थियों व स्टाफ में लेखन में रुचि बढ़ी है।

मंजिल अभी बाकी है- कोविड-19 महामारी जैसी विकट परिस्थिति के दौरान भी हौंसला बनाए रखा व शाला विकास की गति को कम नहीं होने दिया, साथ ही प्रधानाचार्य के नेतृत्व में कोर कमेटी, स्टाफ व गाँव के जागरूक लोगों की मदद से बचाव सुरक्षा का बेहतरीन प्रबंधन कर पंचायत को मानवीय क्षति से बचाया। समाज व विद्यालय की व्यवस्था हमेशा गतिशील होती है, बदलते परिवेश व प्रतिस्पर्धा के युग में इसमें समय-समय पर परिवर्तन होना अनिवार्य है, अतः इस हेतु लगातार प्रयासों एवं नवाचारों की आवश्यकता होती है, किसी भी गाँव/समाज शैक्षिक मूल्यों की स्थापना हेतु सर्वसमाज की भागीदारी जरूरी है, बेशक हम इस दिशा में सतत रूप से कार्यरत हैं। हमारा अंतिम ध्येय विद्यालय को गाँव का केन्द्र बिन्दु बनाना व गाँव के आदर्श शिक्षा के मंदिर के रूप में स्थापित करना है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय घमंडिया,
श्रीगंगानगर (राज.)
मो: 9414760124

Rajasthan Education Department

पुस्तक समीक्षा

मुळकती मरुधरा

कविः मईनुदीन कोहरी 'नाचीज' बीकानेरी; **प्रकाशक** : राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर; **संस्करण** : 2021; **मूल्य** : ₹ 300; **पृष्ठ** : 128

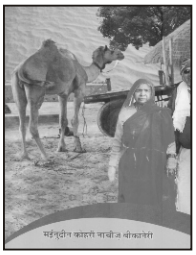

मईनुदीन कोहरी 'नाचीज' बीकानेरी रौ नूंवो कविता संग्रै 'मुळकती मरुधरा' अनुभव री आग अर जीवण रै राग रौ फूटरो सब्द चित्र है। कवि आपरी ढळती उमर रै साथै कविता नै पाताळ री गहराई अर आभै री ऊँचाई देवण रौ गिरबेजोग काम कर्यो है। मुळकती मरुधरा कवि री उड़ी दीठ अर मात भौम सूं उंडे जुड़ाव रौ परखण प्रमाण है। जीवन री अबखाई नै सबदां री सबखाई रै मारग उतारतौ कवि पाठक रै काळजै थ्यावस सूं बैठ मिनखपणै री थापना करै। हर भांत री कवितावां अर गीत इण संग्रै मांय मोती ज्यूं जड़िया है। कवि नै जो कहवणौ हो, ठोक बजा'र कह्यो है। ओ ही कारण है कै कवि सबदां सूं खेलण री जगै सीधो चटीड़ चैपे है। जद भी मईनुदीन जी रौ सीधो सुभाव टेढ़ी बातां देख छुब्ध हुवै है उण बगत व्हे कविता सूं उण टेढ़ रही रीढ़ तोड़े है। इण संग्रै मांय एड़ा घणा उदाहरण है। बानगी सारू 'रिस्ता-नाता' कविता रौ ओ उदाहरण देखो-

आपरै मुंडै री माख्यां
जग सगळो उड़ावै है
आप-आपरै गंध नै तो
सगळो जग ही चावै है।

संसार रै खारे साच नै कवि खरै सबदां सूं इण भांत प्रकट कर्यो है। कै लूकण छिपण रौ कोई मौका ही नीं। साच अर झूठ रै बीच रौ फासलो मिटावण सूं ज्यादा कवि साच रै नाम पर चालण वाळे झूठ नै मोटी खाल रै नीचे सूं खींच लायो है। एक दूजे माथै जिम्मेदारी नाखण वाळे नेतावां री खोटी नीयत पर कवि ठोड़-ठोड़ प्रहार कर्यो है। इण दृष्टि सूं 'कुण जाणै' कविता सुवारथ री राजनीति री पूरी पोल खोले है। कुण जाणै री ध्वनि ही सगळा जाणै रौ उद्घोस बणै है। सीधे सबदां सूं कवि टेढ़ी राजनीति री चाल पकड़ै।

म्हारे दैस नै
कुण जाणै
कुण चर गय्यो
गरीबां री फौज
कुण जाणै
कुण कर गय्यो। (कुण जाणै)

'मुळकती मरुधरा' एक तरह सूं जीवण री अबखाई अर मिनख रै जुझारूपण री पोथी है। जीवण रै उतार चढ़ाव नै कवि धोरे रै बिंब सूं इण भांत स्पष्ट करै के पाठक रै चित्त मांय चेतना री नूंवी दीठ सहज प्रकासित हुवै।

धोरे री चढ़ाण
चढ़णा हुवै दोरी
अर
उतरता हुवै सोरी (धोरां री धरा उड़ीकै)

मईनुदीन जी रै कनै गाड़ा भर अनुभव अर उण नै अभिव्यक्त करण सारू सीधा सादा सबदां री महताऊ गाँठड़ी है। कठै ही कांदौ (प्याज) अर कठै ही मटकी उण री कविता रा अंग बणै। आज रै मिनख रै सामै सबसूं बड़ो संकट ओ है कै व्हो दिखावै री संस्कृति रै मकड़ जाळ मायं फंसतौ जावै है। सादगी सूं अळगौ होतो जावे है। रिस्ता नाता री रीतां रिसती अर खिसकती जावै है। सुवारथ री भींता खिंचती जावै है। मिलबांट खावण री संस्कृति रा संस्कार अवै फीका होवता जावै है। कदै ही धरम रै नाम पर तो कदै ही जात रै नाम पर मिनख बंटतौ जा रह्यौ है। अर मिनखपणौ घटतो जा रह्यो है सुवारथ सूं डफाचूक हुयोड़ी औलादां मां बाप ने बांटणं मांय लागैड़ी है। ओ बंटवारो सिरफ मा बाप रौ ही नहीं है ओ बंटवारो कोरे काळजै रौ भी है जठै सुख बाट जोवती मा अर खेचळ सूं पच पच हारै बाप रा सुपणा भी इण बंटवारे री भेंट चढ़ै। मईनुदीन जी रा ऐ सब्द मा बाप री उण दास्तां नै बयां करै जिण रै भाग औलाद री मारफत बंटवारौ आयो अर आंख्यां मांय डब डब आंसू। सुबकती सांस व्है आपरौ दरद इण भांत कवै-

आंख्यां
डब डब भर
सुबक सुबक
रोवती मा
म्हनै कांई ठा
ऐ दिन भी देखणा पड़सी....
अबै थारो-महारौ बंटवारो भी हुवसी
(बंटवारो)

मईनुदीन जी रौ व्यक्तित्व उण री कवितावां री ठसक भी बणै तो कठै कठै उण री कवितावां रै असर नै कमती भी करै। कवि टाबरिया भणावण री आपरी रिजक नै ठोड़ ठोड़ कवितावां मांय दरसावै। मास्टरी मांय जीयां टाबरिया नै समझावता रह्या हा, बीयां ही व्है पाठक नै कविता मांय समझावण लाग जावै, जिण सूं कविता उपदेसात्मकता री सिकार हुवै। टाबरां नै सो क्यूं समझावण री हूंस वाळो मास्टर रूप उण री कवितावां रै सिरजणात्मक प्रभाव रै आडो आवै। पाठकीय अरथ ग्रहण री संभावनाओं री बाधा बणै। साहित रै सुभाव सारू कविता रो सौंदर्य अरथ री संकेतात्मकता सूं घणौ असरदायक हुवै। इण मोर्चे माथै म्हारी निजर सूं मुळकती मरुधरा री कई कवितावां कमजोर पड़ी है। पण जठै भी कवि इण प्रभाव सूं मुक्त हुयो है बठै कवितावां भी आपरै प्रभाव मांय खरी बणी है। ओ कोई मोटो दोस नीं है। आ म्हारी आळोचक बुद्धि री समस्या भी हो सकै।

मुळकती मरुधरा पोथी री परख करता थका म्हनै इण बात रौ हरख है कै कवि आपरै काम मांय खरो है। कवि रा विचार खुला है। अनुभव री ताकड़ी मांय सबद रा बांट राखतो कवि कांण रै पिछाण री खिमता राखै। महलै दुमहलै री दुनियां सूं दूर आखै मानखै री पीड़ नै भीगतो कवि मालिक तक आपरी अर्जी इण भांत राखै-

थारी ताकड़ी री काण निकाळ
निरधनिया सूं तूं जाण निकाळ (मालिक सूं अरदास)

म्हनै पको पतियारो है कै 'मुळकती मरुधरा' पाठक रै काळजै उंडी छाप छोड़ेली। भटकता नै गैले घालै ली। मिनखपणै रै सौध री आ पोथी जण जण रौ उजास बणैली। म्हनै पूरो बिस्वास है कै जीवण रै इंदर धनख रा सांतरा मांडणा मांडती मईनुदीन जी री कलम मायड़ भासा रौ मान बधावती रवैला। इण पोथी सारू कवि नै घणा रंग।

समीक्षकः **डॉ. प्रकाश दान चारण**
सहायक आचार्य (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय रोहट, पाली (राज.)
मोः 9829818922

Rajastha Education Department

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

कहानी पक्षियों की

एक विशाल वन में प्रतिवर्ष पक्षियों की प्रतियोगिता होती थी। सभी पक्षी अपनी-अपनी क्षमता दिखाते। कोयल गाने में, मोर नाचने व सुदंरता में, तोता भाषण में और बगुला नाटक में हमेशा जीत जाते, पर मोरों को इतने में संतोष नहीं होता था। वे बहुत सारे पुरस्कार जीतकर अन्य पक्षियों पर अपनी धाक जमाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने अपना एक प्रतिनिधि माता सरस्वती के पास भेजा।

मोरों के प्रतिनिधि घनानंद ने देवी सरस्वती से कहा- देवी जी! आप तो सर्वसमर्थ हैं। अतः कृपया हमें कोयल जैसी आवाज, कबूतर जैसे पैर तथा नीलकंठ जैसा गला दे दें, ताकि हमें अधिकतम पुरस्कार मिल जाए।

घनानंद की बात सुनकर माता सरस्वती बोली- 'घनानंद! भगवान ने सबको अलग-अलग गुण दिए हैं इसलिए दूसरे पक्षियों से ईर्ष्या मत करो। शरीर तो भगवान ने बनाया है, इसे तो बदला नहीं जा सकता परंतु स्वभाव तो बदला ही जा सकता है। अपना स्वभाव अच्छा बनाओ तथा गुणी बनो। इससे तुम्हें सबका स्नेह सम्मान मिलेगा।

रविना कंवर, कक्षा-9
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़, सायला, जालोर (राज.)
मो: 8890986017

देशभक्ति कविता

आजादी की कभी शाम ना
होने देंगे
शहीदों की कुर्बानी बदनाम ना
होने देंगे
बची हो जब तक एक भी बूँद
लहू की रगों में
तब तक भारत माता का
आँचल नीलाम न होने देंगे
वन्दे मातरम्।
भारत माता की जय।।

सिंटू कुमारी कक्षा-9 (वर्ग-बी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़, सायला, जालोर (राज.)

Sky

Blue blue sky
Up and High
You are so far.
With twinkling stars.
Lovely clouds, different hues
You're magical,
I Love you.

Name : Akansha Bishnoe
Class-5, MGGS (English Medium) Bikaner

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

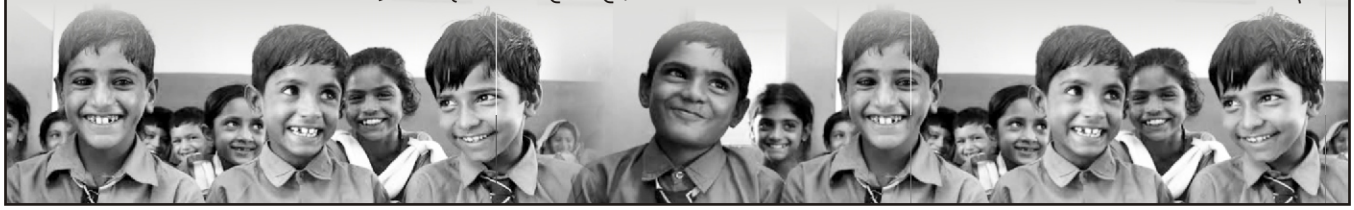

I Wonder

I wonder why the grass is green,
Why the wind is never seen?
Who thought the birds to build a nest,
And told the trees to take a rest?
O, when the moon is not quite round,
Where can the missing bit be found?
Who lights the stars, when they blowout,
And makes the lighting flash about?
Who paints the rainbow in the sky,
And hangs the fluffy clouds so high?
Why is it now, do you suppose,
That dad won't tell me, if he knows?

Name : Chhaya Suthar
Class-5, MGGS (English Medium) Bikaner

Everything is not Easy

Everything is not easy.
It is easy to tell a lie,
But difficult to speak the truth.
It is easy to be violent,
But difficult to be non-violent.
It is easy to hate,
But difficult to love.
It is easy to kill,
But difficult to save.
It is easy to destroy,
But difficult to construct.
It is easy to become angry.
But difficult to be cool and calm.
It is easy to deny God,
But difficult to accept God.

Name : Vidhi Suthar
Class-10, MGGS (English Medium) Bikaner

जीवन के कठोर सच

आदमी देवता न बने, कोई बात नहीं।
आदमी दानव न बने यह बड़ी बात है।।
आदमी पुण्य न करे, कोई बात नहीं।
आदमी पाप न करे ये बड़ी बात है।।
आदमी गिरते को न उठाए, कोई बात नहीं।
आदमी उठते को न गिराए ये बड़ी बात है।।
आदमी रोते को न हँसाए कोई बात नहीं।
आदमी हँसते को न रुलाए ये बड़ी बात है।।

Name : Ruchika Upadhyay
Class-8, MGGS (English Medium) Bikaner

आइए! कुछ पल मुस्करा लें

मॉनीः बताओ दर्दनाक का क्या अर्थ है?

टॉनी : जिसकी नाक में दर्द हो।

राखी : जब मैं सोती हूँ तो मुझे कुछ दिखाई नहीं देता।

मीरा : तो आँखें खोलकर सो जाया करो।

एक बार एक आदमी डूबते हुए बोला- 'हे गणेश! मुझे बचा लो।'

तभी गणेश आकर नाचने लगे व बोले- ''बेटा! एक महीन पहले मेरे विसर्जन पर तू भी बहुत नाचा था।''

Name : Ruchika Upadhyay
Class-8, MGGS (English Medium) Bikaner

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटड़ा को तीसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर विप्रो अर्थियन पुरस्कार

अजमेर– जिले के ब्यावर उपखण्ड में कोटड़ा गाँव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय को कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर के अर्थियन अवॉर्ड 2021 के लिए चयन हुआ है। राज्य स्तर पर चयनित रिपोर्ट को सीईई के माध्यम से अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय बेंगलुरु भेजी गई जहाँ विशेषज्ञों के पैनल की ओर से श्रेष्ठ बीस टीम में विद्यालय की टीम अवार्ड के लिए चयनित हुई। टीम प्रभारी श्री नरेन्द्र सिंह रावत के मार्गदर्शन में स्काउट विद्यार्थी गोविन्द सिंह, राहुल सिंह, मनोज सिंह, ध्रुव सिंह तथा युवराज सिंह ने यह उपलब्धि प्राप्त की है। सभी चयनित विद्यालयों को फरवरी माह में बेंगलुरु में आयोजित कार्यक्रम में अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। विद्यालय में संचालित की जा रही इस योजना के तहत विद्यार्थियों की ओर से जल, जैव विविधता एवं कचरा प्रबंधन, जैव विविधता एवं सस्टेनेबिलिटी, जल प्रबंधन पर स्काउट ने अलग-अलग प्रोजेक्ट तैयार किए। पेड़-पौधों की प्रजातियों की आपसी निर्भरता की जानकारी, पर्यावरण संतुलन में उनकी उपयोगिता, कचरे से खाद बनाने को संपूर्ण प्रक्रिया का अवलोकन, वैश्विक पर्यावरण को समझने के लिए टेरेरियम निर्माण, पशुपालकों और शहद बेचने वालों के साक्षात्कार, जीवों पर आधारित कहावतों, मुहावरों, परंपराओं और मान्यताओं का संकलन, हमारे दैनिक क्रियाकलापों का ग्लोबल वार्मिंग पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी जुटाई और इनसे संबंधित पशुपालकों और गाँवों में रहने वाले लोगों से मिली जानकारी को रिपोर्ट में शामिल किया। कचरा प्रबंधन सस्टेनेबिलिटी की गतिविधियों में भी प्रभावी प्रोजेक्ट तैयार किए।

अजीम प्रेमजी फाउंडेशन करेगा सम्मानित– अर्थियन अवार्ड से देश की बीस विद्यालयों को अजीम प्रेमजी फाउंडेशन की ओर से राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाएगा। अवार्ड में विजेता विद्यालय को एक लाख रुपए, ट्रॉफी, प्रशस्ति-पत्र व समारोह में भाग लेने के लिए शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को बेंगलुरु की फ्री हवाई यात्रा, पाँच सितारा होटल में ठहरने की सुविधा और सीईपी लर्निंग मॉड्यूल से नवाजा जाएगा। विद्यार्थियों एवं आमजन में पर्यावरण जागरूकता पैदा करने के लिए बेहतरीन गतिविधियों पर आधारित प्रोजेक्ट के लिए विद्यालय का तीसरी बार चयन होना अजमेर जिले के लिए उपलब्धि है। इससे पहले स्काउट प्रभारी श्री नरेन्द्र सिंह रावत के मार्गदर्शन में 2016 और 2020 में भी जल सस्टेनेबिलिटी के लिए विद्यालय राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हो चुका है। कचरा प्रबंधन में कचरा पैदा करने वाले स्थानों की जानकारी, प्रतिदिन तैयार होने वाले कचरे की मात्रा की ऑडिट, कचरे का वर्गीकरण, कचरा निस्तारण की विधियों की जानकारी, पर्यावरण पर कचरे के दुष्प्रभावों की जानकारी, विद्यालय और घरों को कचरा मुक्त करने की विधियों की जानकारी आदि विषयों पर स्काउट्स ने कार्य किया है। प्रधानाचार्य श्री अवधेश शर्मा के अनुसार इस उपलब्धि का श्रेय टीम प्रभारी श्री नरेन्द्र सिंह रावत के साथ-साथ पूरे विद्यालय परिवार को जाता है। इस राष्ट्रीय उपलब्धि पर प्रधानाचार्य सर्वश्री अवधेश शर्मा, अनिल शर्मा, सरपंच प्रवीण सिंह, पूर्व सरपंच लाडू सिंह, विद्यालय विकास व प्रबंधन समिति के प्रभु सिंह, प्रताप सिंह, मुकेश भट्ट, उम्मेद सिंह, पन्ना सिंह सहित समस्त विद्यालय स्टाफ़ ने हर्ष व्यक्त किया।

विधायक हरिश्चंद्र मीणा व भामाशाह किस्तूर चंद मीणा ने विवेकानंद माडल स्कूल में बच्चों को स्वेटर वितरण किया

टोंक–उनियारा तहसील के एक मात्र अंग्रेजी माध्यम विद्यालय स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल खातोली उनियारा मे भामाशाह श्री किस्तूर चंद मीणा ने देवली-उनियारा विधायक श्री हरिश्चंद्र मीणा के हाथों नव चेतना शिक्षा समिति के तत्वावधान मे समिति के अध्यक्ष श्री टीकाराम मीणा, मॉडल स्कूल प्रधानाचार्य श्री रामसिंह मीणा व वरिष्ठ अध्यापक विज्ञान श्री मीठालाल मीणा के आग्रह पर बच्चों को लगभग 2 लाख 25 हजार की लागत से गर्म ब्लेजर/स्वेटर वितरण किया व विद्यालय की प्रतिभाओं राहुल मीणा व हर्षिता कुमावत का सम्मान किया और इसके बाद माननीय विधायक महोदय ने मॉडल विद्यालय के लिए मैदान समतलीकरण कार्य, साइकिल स्टेण्ड निर्माण कार्य व विद्यालय के बाहर पानी निकासी हेतु नाला निर्माण की घोषणा की व भामाशाह श्री किस्तूर चंद मीणा द्वारा बच्चों के लिए किए कार्य की प्रशंसा की व भामाशाह द्वारा उनियारा क्षेत्र मे शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने, बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने व औद्योगिक क्षेत्र को विकसित करने की बात से विधायक महोदय को अवगत कराया इस अवसर पर उपखण्ड अधिकारी रजनी

मीणा, पुलिस उपाधीक्षक सर्वश्री शकिल अली खान, गुलाब चंद मीणा, हेमराज मीणा, उप प्रधान जगदीश बैरवा, हनुमान मीणा, हंसराज गुंजल व सरपंच उम्मेद चौधरी व गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

विद्यालय में बालिका दिवस मनाया गया

बूँदी– दिनांक 24 जनवरी को राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा में बालिका दिवस का आयोजन किया गया। प्रधानाध्यापक श्री जितेंद्र शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम की अध्यक्षता छात्रा सुखसेना एवं मुख्य अतिथि छात्रा किरण मेघवाल एवं विशिष्ट अतिथि छात्रा शिवानी मीणा एवं पूजा प्रजापत ने की। इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करते हुए अध्यापक श्री महेंद्र स्वामी द्वारा प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। अध्यापक श्री गजेंद्र कुमार राठौड़ एवं श्री परशुराम मेघवाल द्वारा छात्रों को विभिन्न गीतों के माध्यम से बालिका सशक्तीकरण हेतु प्रेरित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिवार द्वारा छात्र छात्राओं को मास्क वितरण किया गया एवं प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले छात्र छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में हुआ आयोजन

सिरोही–राउमावि निचलागढ़ में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के रेडियो मधुबन 98.4 के तत्वावधान में राउमावि के स्कूली बच्चों को सर्दी से बचाव हेतु करीब 500 जोड़ी बूट मोजों का वितरण किया। दानदाता श्री यशवंत जी पाटिल ने करीब एक लाख की लागत से जूते क्रय कर बांटे और कुसंगति से बचने के लिए अच्छे मीत (मित्र) बनाने की सीख दी। मधुबन के सह संयोजक श्री रमेश भाई ने उपस्थित छात्रों और ग्रामीण जनों को सम्बोधित करते हुए सामाजिक सरोकार के तहत मधुबन परिवार द्वारा किए जाने वाले कार्यों की जानकारी देते हुए सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रचारित कार्यक्रमों को सुनने का आह्वान किया ताकि सामाजिक जागरूकता से सामाजिक समस्याओं का निराकरण किया सके। शाला प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री नरसाराम गरासिया ने शाला परिवार द्वारा करवाए जा रहे छात्र हितार्थ कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और छात्रों को गुरुजनों से प्रेरित होकर विद्याध्ययन कर गाँव का नाम रोशन करने के लिए कमर कसने का आह्वान किया। संस्थाप्रधान श्री बाबूलाल प्रजापति ने प्रेरक व्याख्याता श्री गणेश कुमार मेघवाल का माल्यार्पण कर स्वागत किया। समस्त उपस्थित प्रबुद्धजनों को सम्बोधित करते हुए शाला विकास के लिए समय-समय पर भामाशाह के द्वारा अतुलनीय योगदान पर सराहना की। इस मौके पर व्याख्याता श्री अमित सिंह ने अपने सम्बोधन में रामायणकालीन दृष्टान्त देते हुए ब्रह्मा कुमारी परिवार का आभार जताया। पंचायत समिति सदस्या और अमेरिकी पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा द्वारा सम्बोधित निचलागढ़ प्रेसिडेंट श्रीमति सरमी बाई ने अपने उद्बोधन में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाने के लिए शिक्षारूपी अमृतपान का आह्वान किया। मंच संचालन वरिष्ठ अध्यापक श्री इंदरलाल गर्ग ने किया। इस अवसर पर अध्यापक श्री ज्योतिष कुमार, श्री गिरधर, श्री छोगाराम, श्री शंकरलाल काबा, श्री भगाराम, श्री धर्माराम, श्री चेलाराम, श्रीमती अंजना मीना उपस्थित रहे।

भिलवाड़ी पीईईओ बनी भामाशाह

झालावाड़–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भिलवाड़ी (जिला झालावाड़) की प्रिंसिपल एवं पीईईओ सुश्री संजीदा परवेज द्वारा स्थानीय विद्यालय में वन टीचर वन ट्री (वृक्षारोपण) कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के बाद पौधों की सुरक्षा के लिए मुहिम चलाते हुए विद्यालय में स्वयं की ओर से भामाशाह के रूप में रु. 8000/- मूल्य के 8 ट्री गार्ड भेंट किए गए। मीडिया प्रभारी श्री राजेश हरदेनिया ने बताया कि प्रधानाचार्य की प्रेरणा से प्रेरित होकर दानशीलता, सौहार्द्र एवं अनुकरणीय सहायता की मिसाल पेश करते हुए अधीनस्थ विद्यालयों के 20 अध्यापकों द्वारा रु. 30,000/- मूल्य के 30 ट्री गार्ड विद्यालय को भेंट स्वरूप दिए गए। प्रधानाचार्य के प्रयासों से विगत वर्षों से भामाशाहों द्वारा लगातार विद्यालय की भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि की जाती रही है। इस अवसर पर प्रधानाचार्य सुश्री संजीदा परवेज ने अपने उद्बोधन में कहा की जिस इंसान को दान करने में आनंद मिलता है, उसे ईश्वर की असीम कृपा प्राप्त होती है क्योंकि दान देना इंसान को श्रेष्ठ और सत्कर्मी बनाता है। अवसर पर अधीनस्थ विद्यालयों के प्रतिनिधि के रूप में अध्यापक श्री मुकुट बिहारी सुमन, श्रीमती ममता, श्री अली अकबर, श्री अलीम बैग, श्री शंकर लाल आंजना तथा स्थानीय विद्यालय के श्रीमती कृष्णा सोनी, श्रीमती निर्मला दुबे उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री मुकुट बिहारी सुमन (प्रधानाध्यापक, सांवलियाखेड़ा) द्वारा किया गया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

आर. के. रा.उ.प्रा. विद्यालय धर्मेटा पं. सं. पिपलांत्री, राजसमंद

(भामाशाह आर. के. मार्बल प्राइवेट लिमिटेड के द्वारा निर्मित)

❒ श्याम सुंदर भट्ट

''आत्मार्थ जीवलोकेस्मिन को न जीवति मानव:।
परं परोपकारार्थ यो जीवति स जीवति।।''

अर्थात:- दुनिया में अपने लिए कौन मानव नहीं जीता (सब जीते हैं)? लेकिन परोपकार के लिए जीने वालों को ही जीवित कहते हैं।

इस श्लोकार्थ को सार्थक सिद्ध करते हुए राजसमंद की आर्थिक रीढ़ कहलाने वाले मार्बल उद्योग में अपनी अलग पहचान बना चुके आर. के. मार्बल प्राइवेट लिमिटेड के द्वारा हमेशा की तरह कोरोना महामारी काल में भी एक उत्कृष्ट, सुंदर व सभी सुविधा युक्त विद्यालय का निर्माण कर शिक्षा विभाग को एक अनुपम भेंट प्रदान की गई। विद्यालय का निर्माण पर्यावरण की दुनिया में नाम बना चुके ग्राम पंचायत पिपलांत्री में धर्मेटा गाँव व आसपास के क्षेत्र की अन्य ढाणियों के बालकों के उज्ज्वल भविष्य की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए लगभग 75 लाख की लागत से 2020-2021 में किया गया है।

आर. के. मार्बल ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों लोगों को रोजगार सृजन कराने के साथ-साथ सामाजिक सरोकार के विभिन्न कार्यों का भी निर्वहन किया है। आर. के. मार्बल ने विद्यालय निर्माण का बीड़ा ही नहीं उठाया, अपितु समय-समय पर क्रमोन्नत होने वाले विद्यालयों के निर्माण में भी अपनी अहम भूमिका निभाई। इसी क्रम में अब तक कई राजकीय विद्यालय ग्राम सनवाड, मुंडोल, गोवलिया, पुठोल, उमठी व पिपलांत्री, तह. व जिला राजसमन्द (राज.) में उदाहरण स्वरूप हैं। इसी के साथ-साथ आर. के. मार्बल ने आम-जन तक चिकित्सा सुविधा पहुँचाने हेतु जिला स्तर पर राजकीय चिकित्सालय के निर्माण में अभूतपुर्व अनुदान देकर सहयोग किया है, कई सरकारी परिसरों व शहरों में सौंदर्यीकरण व पर्यावरण सरंक्षण को बढ़ावा देने हेतु पार्कों व सड़कों का निर्माण किया गया व सड़कों के किनारे पौधारोपण भी करवाया गया। आमजन को पेयजल उपलब्ध करवाने, अकाल राहत व समाज के उत्थान हेतु भी अन्य आवश्यक कार्यों में भी आर. के. मार्बल प्राइवेट लिमिटेड (आर.के. समूह) अग्रसर रहती है।

शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार द्वारा आर. के. राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय धर्मेटा का लोकार्पण 19.02.2021 को माननीय मुख्यमंत्री (राजस्थान सरकार) श्री अशोक गहलोत एवं माननीय विधानसभा अध्यक्ष श्रीमान डॉ. सी. पी. जोशी व माननीय तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री गोविंद सिंह डोटासरा, माननीय सहकारिता मंत्री श्री उदयलाल आंजना व आर. के. मार्बल के उच्च पदाधिकारियों की गौरवमयी उपस्थिति में हुआ।

भामाशाह का संक्षिप्त परिचय:-

आर. के. मार्बल. प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना 1989 में किशनगढ़, जिला अजमेर (राजस्थान) के उद्यमी श्री अशोक पाटनी द्वारा अपने दादाजी श्री रतनलाल जी पाटनी व पिता श्री कंवरलाल जी पाटनी के नाम पर की। श्री अशोक पाटनी की अध्यक्षता में इनके अनुज श्री सुरेश पाटनी व श्री विमल पाटनी भी प्रबंधन में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। श्री अशोक पाटनी एक ऐसे परिवार से आते हैं जिनका अनाज का थोक-बिक्री का व्यवसाय था, लेकिन उनकी दूरदर्शिता और दृढ़ संकल्प, उच्च व्यक्तित्व बड़े कार्यों के लिए बना है। अपने निहित मूल्यों, गहरी महत्त्वाकांक्षाओं, निरंतर प्रयासों और सफलता से कम कुछ भी तय नहीं करने की उनकी जिद के साथ, उन्होंने आर. के. ग्रुप को वैश्विक पटल पर ला दिया है।

मई 1989 में, श्री पाटनी बन्धुओं ने आर. के. मार्बल की स्थापना की, जिसका उद्देश्य नवजात कंपनी को वास्तुकला और डिजाइन की दुनिया में सबसे सम्मानित और अनुशंसित बनाने का था। आज खनन और प्रसंस्करण के लिए प्रतिस्पर्धी अत्याधुनिक तकनीक के साथ, कंपनी दुनिया में सबसे बड़ा संगमरमर उत्पादक होने का गिनीज बुक रिकॉर्ड रखती है। श्री पाटनी बन्धुओं के ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और गुणवत्ता के सिद्धांतों को वर्तमान में उनकी देखरेख में वैश्विक सीमेंट ब्रांड वंडर सीमेंट के निर्माण में लागू किया जा रहा है। श्री पाटनी बन्धु सतत विकास के संरक्षक हैं और आर.के. समूह द्वारा पर्यावरण कानूनों का पालन करने में सख्ती–उनके द्वारा लगाए गए नियमों से अधिक जुनून के कारण है। अपने काम के प्रति उनका जुनून और समग्र रूप से समाज की बेहतरी के प्रति उनके समर्पण को कंपनी द्वारा चलाए जा रहे व्यापक कल्याण कार्यक्रम में देखा जा सकता है। वह सही मायने में 'नेतृत्व, प्रतिबद्धता और समर्पण का स्तंभ' है, जिसका दूरदर्शी गुण कंपनी की अप्रत्याशित सफलता की कल्पना करना जारी रखता है।

''दानं भोगो नाशस्तिस्रः गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्तेतस्य, तृतीया गतिर्भवति।।''

इस उक्ति को आत्मसात् करते हुए उद्योगपति आर. के. मार्बल प्राइवेट लिमिटेड (आर.के. समूह) स्वोपार्जित वित्त को दान में लगाकर भामाशाह की पंक्ति में सर्वदा अग्रगण्य रहा है। इसी क्रम में छोटे से ग्राम धर्मेटा में आर.के. राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय धर्मेटा का निर्माण कार्य करवाकर शिक्षा के क्षेत्र में अहम योगदान दिया, जो कि अविस्मरणीय व अनुकरणीय है। इस हेतु शिक्षा विभाग व धर्मेटा ग्रामवासियों द्वारा आभाराभिव्यक्ति कर पुनीत कार्यों में आपकी सदा सर्वदा सहभागिता बनी रहे ऐसी ही कामना रखते हैं।

संस्थाप्रधान
आर.के. राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
धर्मेटा, पिपलांत्री, राजसमंद (राज.)

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह–जनवरी 2022 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	District	Amount
1	RAVI ABUSARIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ABUSAR (211577)	JHUNJHUNU	900000
2	RAMANDEEP SINGH SIDHU	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHABAN (211115)	HANUMAN GARH	600000
3	ARVIND KUMAR SENGWA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GHANAMGRA (219729)	JODHPUR	300101
4	GODAVARI DEVI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHANI PANCHERA CHURU (215307)	CHURU	300000
5	SHRI BIHARI LAL JAIN CHARITABLE TRUST	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TARANAGAR (215183)	CHURU	300000
6	SUNITA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHAJPUR NAYA (215632)	JHUNJHUNU	255000
7	SATYA PAL GODARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TOLIYASAR (215443)	CHURU	201000
8	OMKARA ASSETS RECONSTRUCTION PRIVATE LIMITED	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL BHAKAR ROAD HANUMAN NAGAR (460508)	NAGAUR	380000
9	SHISH RAM SAHARAN	SHAHEED CHIMNA RAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LOHASANA BARA (215417)	CHURU	162000
11	RAKESH KASWAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	139000
12	RACHNA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL VIGYAN NAGAR (216821)	KOTA	100100
13	SURENDRA SINGH POONIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJGARH (215272)	CHURU	100001
14	DINESH KUMAR BAGRODIA	SHRI MANDI KAMETI GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DUNDLOD MANDI (216096)	JHUNJHUNU	100000
15	NAND KISHORE KHANDELWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KARANA 216365 (216365)	ALWAR	100000
16	BASUDEO SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NAYASAR (211579)	JHUNJHUNU	100000
17	RANJEET SINGH	GOVT. GIRLS UPPER PRIMARY SCHOOL REDI (474556)	CHURU	80000
18	ANIL KUMAR KALA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHARNI SHRIMADHOPUR (219336)	SIKAR	78000
19	SHIVRAJ JAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TANKAWAS (221821)	AJMER	75500
20	BRIJMOHAN BAIRWA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KOYALA (212745)	SAWAI MADHOPUR	71000
21	LAXMAN RAM SEWDA	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	71000

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

22	GODAVARI DEVI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHANI PANCHERA CHURU (215307)	CHURU	60000
23	LOKENDRA KUMAR GARG	GOVT. SECONDARY SCHOOL DHORALA (212782)	SAWAI MADHOPUR	51100
24	RITA BHATIA	SHAHID SHREE AMRARAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL JAWLA (219563)	NAGAUR	51000
25	MAHESH CHANDRA AMETA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL JHALLARA (223564)	UDAIPUR	51000
26	MEGHA RAM GODARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHADANG (211540)	CHURU	51000
27	DHAN RAJ	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SEUWA (215217)	CHURU	51000
28	AMMEE LAL MOOND	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GAJUWAS (215186)	CHURU	51000
29	RAJENDER KUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DADIYA (213378)	SIKAR	51000
30	DINESH GODARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TOLIYASAR (215443)	CHURU	51000
31	RAMNARAYAN MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ITAWA (224446)	KOTA	51000
32	RATAN LAL SAINI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LALASI (213222)	SIKAR	51000
33	CHHANGA RAM SAINI	SMT. DURGA DEVI SETH HEERALAL GUPTA GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GYANPURA (216376)	ALWAR	51000
34	SUBHASH CHANDRA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DADIYA (213378)	SIKAR	51000
35	RANDHIR SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	50000
36	SANGEETA YADAV	GOVT. SECONDARY SCHOOL THEGDA (216800)	KOTA	50000
37	TILOK CHAND	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	50000
38	DR RAJEEV KUMAR	GOVT. SECONDARY SCHOOL GOTH (215895)	JHUNJHUNU	50000
39	RAINA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL KAMASAR (419494)	CHURU	50000
40	RAKESH KUMAR	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL HANUTPURA (501631)	JHUNJHUNU	50000
41	SUMAN RAO	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL KAMASAR (419494)	CHURU	50000
42	RAY SINGH MAHALA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHEWA KI DHANI (224964)	JHUNJHUNU	50000
43	RATAN LAL SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL HINGORIYA (224220)	CHITTAUR GARH	50000
44	NIRANJAN SWAROOP OJHA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL RAILA (414375)	BHILWARA	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–जनवरी 2022 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	BARMER	473	173334
2	BANSWARA	241	254937
3	CHURU	219	3019993
4	JHUNJHUNU	205	2011703
5	KOTA	194	360474
6	JODHPUR	176	395242
7	AJMER	162	163657
8	UDAIPUR	146	209026
9	SIKAR	127	597621
10	NAGAUR	106	767671
11	BHARATPUR	103	153305
12	ALWAR	101	240973
13	CHITTAURGARH	87	315113
14	BUNDI	86	73503
15	JAIPUR	77	128860
16	JHALAWAR	68	57750
17	GANGANAGAR	67	177244
18	HANUMANGARH	66	674381
19	DAUSA	63	42540
20	BHILWARA	52	121112
21	PALI	50	83941
22	JALOR	49	258270
23	JAISALMER	42	9778
24	PRATAPGARH	40	69801
25	BARAN	31	79480
26	KARAULI	31	40910
27	DUNGARPUR	29	144511
28	SIROHI	28	4891
29	RAJSAMAND	25	69010
30	SAWAIMADHOPUR	25	160811
31	BIKANER	21	111741
32	DHAULPUR	15	19203
33	TONK	11	29400
	Total	**3216**	**11020186**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मार्च, 2022 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर–302 004 फोन : 0141–2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा
मार्च, 2022

राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त
गायत्री कटारिया, कक्षा 11 (कला वर्ग)
महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)
तिंवरी, जिला जोधपुर

छात्रा-लतिका, कक्षा 7, रा.उ.प्रा.वि. बी.एस.एफ़ बीकानेर

भित्ति पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
थिराणा, नोहर, हनुमानगढ़

छात्रा-तनिषा खत्री , कक्षा-8, रा.बा. मा.वि. रायला, भीलवाड़ा

रोनक कक्षा-12, राउमावि दूदवा सीकर

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● मार्च, 2022 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 मार्च, 2022 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्र वीथिका : मार्च 2022

माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी.कल्ला के बसन्त पंचमी पर रामावि घड़सीसर, बीकानेर में सरस्वती मन्दिर का अनावरण करने के पश्चात प्रधानाध्यापिका अर्चना सक्सेना व शाला परिवार आभार पत्र प्रस्तुत करते हुए।

निदेशक मा. शि. राज. श्री काना राम के साथ शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिवर्ष पांचों इकाइयों (अजमेर, चित्तौड़गढ़ ,राजसमंद, उदयपुर और भीलवाड़ा) में 20 से 25 करोड़ का सहयोग देने वाली संस्था हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड उदयपुर की सीएसआर हेड अनुपम निधि और असिस्टेंट रुचिका नरेश चावला, 64 मॉडल विद्यालय तैयार करने के लिए चर्चा करते हुए।

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर के स्टेट कमिश्नर स्काउट पर पर निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री काना राम (आईएएस) कार्यभार ग्रहण करते हुए (बांए) इस अवसर पर सहायक राज्य संगठन आयुक्त गाइड श्री सुयश लोढ़ा, सीओ स्काउट श्री जसवंत सिंह राजपुरोहित, सीओ गाइड ज्योतिरानी महात्मा, लीडर ट्रेनर श्री घनश्याम स्वामी व श्री महेश कुमार शर्मा शुभकामनाएं देते हुए।(दांए)

मेरामचंद हुडिया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय मोकलसर (बाड़मेर) में बालिकाओं की उपस्थिति बढ़ाने हेतु नवाचार में 'रोज आओ-रिबन पाओ' के तहत शिक्षक कुमार जितेन्द्र व रिबन विजेता बालिकाएँ।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बोरदा, ब्लॉक झालरापाटन, झालावाड़ में स्थानीय सरपंच, व्यापारी, अभिभावकगण एवं साथी शिक्षकों, सेवा निवृत शिक्षकों, आदि भामाशाहों के सहयोग से 50,000 रूपए की लागत से माँ सरस्वती का पत्थर से निर्मित मंदिर व मारबल की प्रतिमा का लोकार्पण किया गया।

महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, मानसरोवर जयपुर में पूर्व प्राथमिक कक्षा का प्रथम दिन पर उत्साहित बच्चे।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) कोटा में विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन में विजित संभागियों को अतिथिगणों द्वारा पुरस्कार प्रदान करते हुए। साथ हैं डाइट प्रधानाचार्य एवं संभागीगण।